जून 2002
Rs. 10/-
चन्दामामा
इसके अंतरंग वसुधा
१६ पृष्ठ का परिशिष्ट
Sponsored by
National
Foundation
for India

सुगन्धित पथ पर

चन्दना जोखिम भरे कार्य की तलाश में है। छुट्टियाँ मनाने के लिए कुर्ग में आये हुए अपने परिवार को छोड़कर कौतुक और उत्तेजना की खोज में वह निकट के जंगल की ओर निकल पड़ती है। वह नहीं जानती कि वह चन्दन के वन में है – तब तक, जब एक चन्दन का वृक्ष उससे बातें नहीं करने लग जाता।

क्या तुम जानते हो कि चन्दन के वृक्ष, जिसका लैटिन नाम *'सांतालम अलबम'* है, कर्नाटक और तमिलनाडु में बहुत अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। चन्दन उपजाने वाले कर्नाटक के कुछ महत्वपूर्ण स्थान हैं – धारवाड, शिमोगा, चिकमगलूर, मरकारा, मैसूर और बंगलोर।

क्या तुम जानते हो कि मुझे भारत में विगत २५ शताब्दियों से उपजाया जा रहा है। मैसूर राज्य में हैदरअली और टीपू सुलतान के समय में चन्दन को राज्य की सम्पत्ति घोषित कर दिया गया था।

ओह ! तुम तो एक विशिष्ट वृक्ष हो।

क्या तुम जानते हो कि चन्दन वृक्ष इतना विशिष्ट क्यों है? कितना आसान है ! क्योंकि यह हम लोगों के लिए बहुत उपयोगी है। कुछ उपयोगों का यहां चित्रण किया गया है। क्या तुम पहचान सकते हो?

बधाई, तरुण नायको !

चन्दामामा उन तरुण नायकों को बधाई देता है जो अक्तूबर २००१ और मार्च २००२ के बीच चन्दामामा में प्रकाशित हीरो प्रश्नोत्तरी १ से ६ में विजयी घोषित किये गये हैं। प्रत्येक विजयी प्रतियोगी को स्पॉन्सर की ओर से एक हीरो साइकिल दी जायेगी।

अक्तूबर २००१
बी. कौशल्या, नागपुर
एस.आर. राहुल, बंगलोर
नारायणदेव, भद्राजुन, राजस्थान

नवम्बर २००१
डी. बृन्दा, विसाखापत्तनम
नेहा सिन्हा, उदयपुर कोर्ट, त्रिपुरा
प्रणीत प्रकाश मंत्री, अमरावती

दिसम्बर २००१
बिरल के.देव, दाम नगर, अमरेली जि.
पी.बी. राघवेन्द्रन, होसूर
पार्थ के. पांड्या, बदोदरा

जनवरी २००२
एस. दीपक कुमार, विसाखापत्तनम
एल. भावना, तिरुपति
बी.एस. यशोदा, बंगलोर

फरवरी २००२
के. श्रीराम, कोलकाता
शंख बनर्जी, नरोत्तम नगर, अरुणाचल प्रदेश

मार्च २००२
सोनम नागर, उज्जैन
जे. जयप्रकाश, चेन्नई
एम. विद्याधरी, हैदराबाद

शाबाश !

ओ टी डि सी प्रश्नोत्तरी १ से ७ के विजेताओं को बधाई !

चन्दामामा उड़ीसा पर्यटन विकास निगम (ओ.टी.डि.सी.) प्रश्नोत्तरी १ से ७, जो सितम्बर २००१ से मार्च २००२ तक पत्रिका में प्रकाशित हुई, के विजेताओं को बधाई देता है। प्रत्येक विजेता को ४ सदस्यों तक के लिए किसी ओ.टी.डि.सी. पंथनिवास में ३ दिनों और २ रात्रियों की निशुल्क आवास सुविधा उपलब्ध होगी।

सितम्बर २००१
परीक्षित पराग गोखले, विरार (वेस्ट)

अक्तूबर २००१
अनिल अजिताब, भुवनेश्वर

नवम्बर २००१
देवी प्रसाद नन्दा, जाजापुर

दिसम्बर २००१
सोमेश मिश्र, चिदम्बरम

जनवरी २००२
निशाद एस. कुलकर्णी, पुणे

फरवरी २००२
के. अविनाश, विजियानगरम

मार्च २००२
आर्या बिभास कुमार, जयपुर

बधाई विजेताओ !

माया सरोवर

5

(जंगली हाथियों को खदेड़ देने के बाद मगर आकारवाला चरकाचारी को ढूँढ़ने निकल पड़ा। अजगर के मुँह में फंसा चरकाचारी प्राणों के लिए छटपटा रहा था। जयशील ने उसे अजगर से बचाया और उससे सवाल करने लगा। तब मगर आकारवाला वहाँ आया। उसे देखते ही जयशील का हाथ तलवार की मूठ पर अनायास ही चला गया। सिद्धसाधक ने मंत्र दंड हाथ में उठा लिया।) - उसके बाद

मगर आकारवाले ने देखा कि जयशील और सिद्धसाधक निर्भय होकर खड़े हैं और उसका सामना करने के लिए सन्नद्ध हैं तो उसका सारा धैर्य जाता रहा। उसका विश्वास था कि उसके वाहन को तथा उसके मगर के आकार को देखते ही वे दोनों भयभीत होकर दुम दबाकर भाग जायेंगे। पर ऐसा नहीं हुआ।

मगर के आकारवाले ने शूल उठाते हुए ऊँचे स्वर में कहा, ''तुम लोग कौन हो? इस अरण्य में तुम्हें क्या काम है?''

जयशील ने म्यान से तलवार निकाली और कहा, ''तुम्हारे इस रूप को देखकर मैं हँसी रोक नहीं पा रहा हूँ। जो सवाल मुझे करना था, वह तुम कर रहे हो। ठीक है, बताओ कि तुम कौन हो? इस जंगल में तुम्हारा क्या काम है? लगता है, जिस हाथी पर तुम सवार हो, उसे भी अजीब चमडे से ढक दिया है। यह सारा ढोंग आखिर क्यों?''

''छी, आख़िर एक अधम मानव मुझसे यों

दर्द के मारे कराह रहा था। उसके बगल में कटा पड़ा अजगर छटपटा रहा था। यह दृश्य देखते ही मगर आकारवाला क्षण भर के लिए निश्चेष्ट रह गया और कहने लगा, ''चरकाचारी, मेरा इलाज करने आये और अजगर के चंगुल में फंस गये। शायद तुम अजगर को कोई जड़ी-बूटी समझ बैठे। अगर तुम चाहते तो इतना बड़ा अजगर तुम्हें दे देता, जो हाथी को भी आसानी से निगल जाए।''

मगर आकारवाला उन दोनों को गुर्राकर देखते हुए बोला, ''तुम दोनों अब भी यहीं हो। तुम ज़िन्दा रहना चाहते हो तो यहाँ से भागो, नहीं तो मेरा शूल अपना बल दिखा देगा।''

जयशील ने तलवार उठायी और एक क़दम आगे बढ़ा। यह देखकर वीर चिल्ला पड़ा और जयशील से कहा, ''तलवार के धनी ऐ जवान, ज़रा रुक जाना। इस मगर महोदय पर तलवार क्यों उठाते हो? यह तो एक असहाय मानव को मारने के समान है। उसके पेट में तलवार चुभी पड़ी है। अगर वह बाहर निकाल न दी जाए तो रक्त जम जायेगा और यह मर जायेगा।''

''मैं नहीं चाहता कि इसकी मौत सुखद हो। इसके पेट में जो तलवार चुभी पड़ी है, उसका आधा हिस्सा कनकाक्ष राजा के पास है,'' जयशील ने कहा।

जयशील ने बात पूरी भी नहीं की कि इतने में मगर आकारवाले ने हुँकारते हुए कहा, ''इसका यह मतलब हुआ कि तुम जानते हो

सवाल करे। कितना अपमान,'' कहते हुए मगर आकारवाले ने अपने जलग्रह को सहलाया। तब तक उसकी पूँछ पकड़े काँपते हुए वीर ने साहस बटोरा और मगर आकारवाले के वे दोनों हाथ कसकर पकड़ लिये, जिनमें शूल था। फिर कहा, ''मगर महोदय, थोड़ा शांत रहो। मानता हूँ तुम बड़े वीर हो। पर यह न भूलना कि अब भी तुम्हारे पेट में टूटी तलवार लटक रही है। अच्छा इसी में है कि इन दोनों से सुलह कर लिया जाए। चरकाचारी भी तुम्हारा इलाज करने की स्थिति में नहीं है।''

वीर के यह कहने के बाद ही मगर आकारवाले ने चरकाचारी को देखा। अब वह उठने की कोशिश कर रहा था, पर उससे नहीं हो पा रहा था। उसके पैर डगमगा रहे थे। वह

कि मैं कौन हूँ।''

''हाँ, जानता हूँ। तुम्हीं ने जंगल में राजकुमार और राजकुमारी का अपहरण किया। तुम्हारे पेट में जो तलवार पड़ी है, वह राजकुमार कांचनवर्मा की है।'' जयशील ने कहा।

''इतना जब जान चुके हो, तब तुम्हारा ज़िन्दा रहना मेरे लिए अच्छा नहीं।'' कहते हुए मगर आकारवाले ने अपने हाथी को आगे बढ़ाया और उसपर शूल से वार करने ही वाला था कि वीर ने शूल को पकड़ लिया। पर इस जल्दबाजी में अपना संतुलन खो बैठा और हाथी से नीचे गिर गया।

जयशील इस मौक़े का फायदा उठाते हुए पीछे से हाथी पर चढ़ गया और मगर आकारवाले की गरदन पकड़ ली। इतने में सिद्धसाधक ने ज़मीन पर गिरे शूल को उठा लिया और ''जय महाकाली'' का नाम लेकर चिल्लाने लगा। मगर आकारवाले ने अपना शूल ही नहीं खोया बल्कि अब वह दुश्मनों के अधीन भी हो गया।

जयशील ने अपनी तलवार मगर आकारवाले की गरदन पर रखते हुए कहा, ''अब बता, तू कौन है और तेरा नाम क्या है? चुपचाप अपनी हार मान जाओगे या तुम्हारी गरदन काट दूँ?''

मगर आकारवाले ने कहा, ''अरे मानव, तुम्हारी हिम्मत की दाद देता हूँ।'' जयशील ने उसकी गरदन जोर से हिलायी और कहा, ''अरे नक़ली मगर, बोल, तेरा नाम क्या है? अपनी हार मान लो और चुपचाप मेरे साथ

हिरण्यपुर के राजा कनकाक्ष के पास चले चलो और उन्हें बताओ कि तुमने उनके बच्चों को कहाँ छिपाया है?''

''मेरा नाम मकरकेतु है। राजा के बच्चे कहाँ हैं, यह बताने के लिए उनके पास जाने की क्या ज़रूरत है। वह राज़ यहीं तुम्हें बता देता हूँ।'' मगर आकारवाले ने कहा।

फिर भी जयशील ने मकरकेतु से कहा, ''मुझे बताने की कोई ज़रूरत नहीं। जो बताना हैं, राजा को ही बताना। संकर जाति के अपने हाथी को हिरण्यपुर की ओर बढ़ाओ। रास्ते में भागने की कोई कोशिश की या कोई चाल चली तो बस, एक ही वार में तुम्हारी गरदन काट दूँगा।''

मकरकेतु ने उसकी आज्ञा मान ली। हाथी

पर बैठे वह चुपचाप आगे बढ़ा। सिद्धसाधक भी तेज़ी से हाथी के पास आया और कहने लगा, ''जयशील, मैं भी साथ-साथ आ रहा हूँ। ज़रा हाथ बढ़ाना, मैं भी हाथी पर चढ़ जाता हूँ।''

जयशील ने सिद्धसाधक को हाथी पर खींच लिया। हाथी निकलने ही वाला था कि वीर व चरकाचारी ने तालियाँ बजाते हुए कहा, ''महोदयो ! रुक जाइये। हमारा गाँव ऐसे तो पास ही है, पर वहाँ पहुँचने के लिए इस भयंकर अरण्य से गुज़रना होगा। यहाँ शेर, बाघ व खूंख्वार जानवर हो सकते हैं। कहीं ऐसा न हो हम उनके शिकार बन जाएँ।''

''डरने की कोई बात नहीं। यहाँ तुम्हारा कोई कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता। इस दुष्ट का इलाज करने की कोशिश में तुम लोग लगे हुए थे, इसीलिए यह हमारे हाथ आया। तुम्हारी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। हाथी धीरे-धीरे जायेगा। तुम दोनों भी उसके पीछे-पीछे आ जाना,'' जयशील ने कहा।

सब हिरण्यपुर की ओर बढ़ने लगे। चार-पाँच मिनटों के बाद चरकाचारी ने अपना गला साफ़ करते हुए कहा, ''जयशील प्रभु, हमारी एक विनती है।''

आश्चर्य भरे स्वर में जयशील ने पूछा, ''बोलो, क्या विनती है?''

''मैं और यह वीर सबेरे से लेकर इस मगर आकारवाले का इलाज करने के प्रयत्न में लगे हुए थे। किसी और के पेट में तलवार यों चुभ जाती तो वह निश्चित रूप से देखते-देखते मर जाता। लेकिन यह तो उस टूटी तलवार को आभूषण की तरह धारण किये घूम रहा है। मैंने उसकी नब्ज की भी परीक्षा की। उसके शरीर में बहता रक्त शीतल रक्त है। यह मुझे जलजीव लगता है।''

''तुम्हारे कहने का क्या यह मतलब है कि यह मेंढक की तरह का जीव है, जो पानी के अंदर और पानी के बाहर भी जीवित रह सकता है? कनकाक्ष राजा का इससे जो काम है, उसे पूरा होते ही इसे और इसके हाथी को तुम्हें भेंट स्वरूप दे दूँगा। तब जो भी वैद्य संबंधी अनुसंधान करना चाहते हो, कर लेना।'' जयशील ने कहा।

उनका संवाद सुनकर मकरकेतु दाँत पीसकर

रह गया। जयशील ने अपनी तलवार उसकी गरदन से सटाते हुए कहा, ''अरे मकरकेतु, सावधान! कोई दुस्साहस करने पर तुल गये तो तुम्हारा सर धड़ से अलग हो जायेगा।''

हठात् तभी मकरकेतु पर एक बाण आ गिरा। जयशील, सिद्धसाधक एकदम चौंक पड़े। जयशील सिर उठाकर झुरमुट में से देख ही रहा था कि इतने में एक विकट अट्टहास सुनायी पड़ा, ''अरे ओ मगर की पूँछ, मैंने जिस जंगली मुर्गे को अपने बाण का निशाना बनाया, उसे चुराकर ले जाते हो। देखना, यह बाण तेरी छाती में चुभ जायेगा।''

जयशील और सिद्धसाधक ने इस कंठध्वनि को पहचान लिया। बोलनेवाला कोई और नहीं, बल्कि भील भीम था। सिद्धसाधक ने अपना मंत्रदंड उसपर उठाते हुए कहा, ''अरे भील भीम, एक और बाण फेंका तो तुम्हें महाकाली का आहार बना दूँगा। पेड़से उतर।''

''कौन? तुम ! राजा के भूतवैद्य?'' भीम चिल्ला पड़ा।

''मैं भूत वैद्य नहीं हूँ। मांत्रिक हूँ, सिद्धसाधक हूँ। चुपचाप पेड़ से नीचे उतर। नहीं तो मंत्र पढूँगा। बस, पेड़ की टहनियों में अचानक अग्नि प्रज्वलित हो जायेगी और तुम उस अग्नि में जलकर राख हो जाओगे।'' सिद्धसाधक ने कहा।

''मुझपर बाण बरसानेवाला वह अधम भील भीम है? मैं माया सरोवर का अधिपति हूँ, और मेरी इतनी बड़ी दुर्दशा! वाह, समय का यह कैसा हेरफेर है! मेरा हाथी पेड़ से टकरा जायेगा। नीचे गिराकर मेरा हाथी उसे चकनाचूर कर देगा।'' फिर मकरकेतु हाथी को पेड़ के पास ले गया।

जयशील उसे ऐसा करने से रोक ही रहा था कि इतने में हाथी चिंघाडता हुआ तेज़ी से उस पेड़ के पास गया, जिसपर भीम बैठा हुआ था। वह उस पेड़ से टकरा गया और सूँड से जड़ सहित उस पेड़ को गिरा डाला। पेड़ की टहनियों पर बैठा भीम ज़ोर-ज़ोर से आर्तनाद करने लगा।

(सशेष)

रसोइये का संस्कार

विनय रामपुर के ज़मींदार दीनानाथ का एकलौता बेटा था। वह हर दिन अपने दोस्तों के साथ मटरगश्ती करता रहता था और रात को देर से घर पहुँचता था। उसकी माँ प्रभावती तब तक जागी रहती, और उसके घर पहुँचने के बाद रसोइया विघ्नेश से खाना परोसने को कहती तथा उसके खाना खाने के बाद ही सोने जाती। विघ्नेश भी तब तक कुछ न कुछ पढ़ता रहता।

एक दिन विनय रात के लगभग बारह बजे घर लौटा। उसने देखा कि विघ्नेश पढ़ रहा है तो उसने व्यंग्य भरे स्वर में कहा, ''हाँ, हाँ, खूब पढ़ो, और पढ़ो। अच्छे संस्कारवाले बनोगे।''
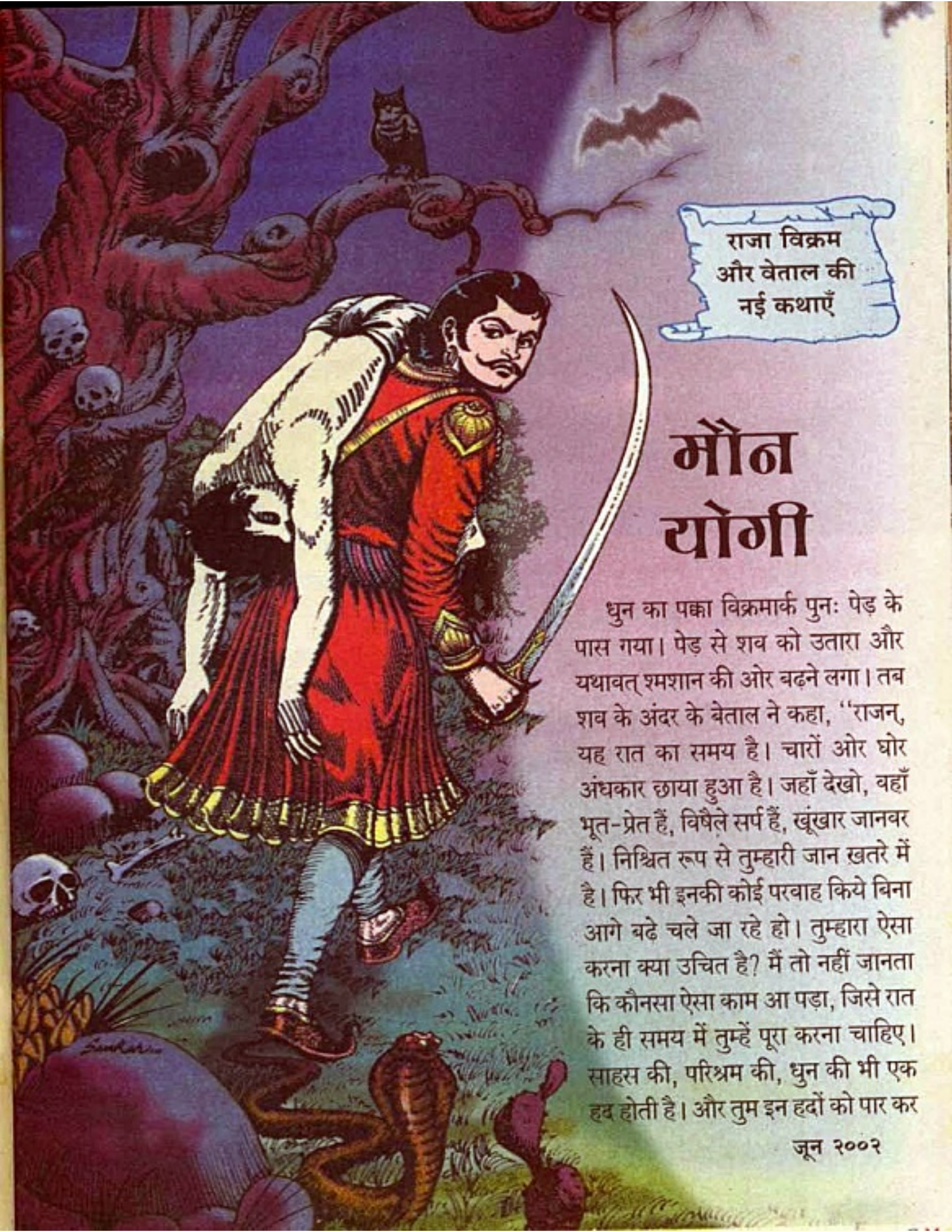
विघ्नेश ने कहा, ''मैं नहीं समझता कि केवल पढ़ने से कोई संस्कारी बनेगा। माँजी को देखिए। हर रात आपकी बाट जोहती रहती हैं। तब तक वे सोने नहीं जातीं जब तक आप घर नहीं आते। यही तो मातृप्रेम है। फिर तड़के ही जाग जाती हैं और आपके पिताजी के लिए आवश्यक सुविधाओं का प्रबंध करती हैं। शिक्षित न होने भर भी उन्हें ये संस्कार कहाँ से मिले?''

इन बातों को सुनकर विनय को लगा मानों कोई उसे चाबुक से मार रहा हो। अब उसकी समझ में आया कि उसके कारण उसकी माँ को और रसोइया विघ्नेश को भी कष्ट पहुँच रहा है। अलावा इसके, विनय ने यह भी जाना कि रसोइया विघ्नेश उसे अप्रत्यक्ष रूप से असंस्कारी कह रहा है। उसे लगा भी कि उसकी बातों में सचाई है।

दूसरे दिन से विनय ने ऐसी गलती नहीं दुहरायी। अब वह जल्दी ही घर पहुँचता था। अब विघ्नेश और पढ़ पाता है। एक प्रकार से इससे उसका भला ही हुआ। — *प्रफुल्ल लता*
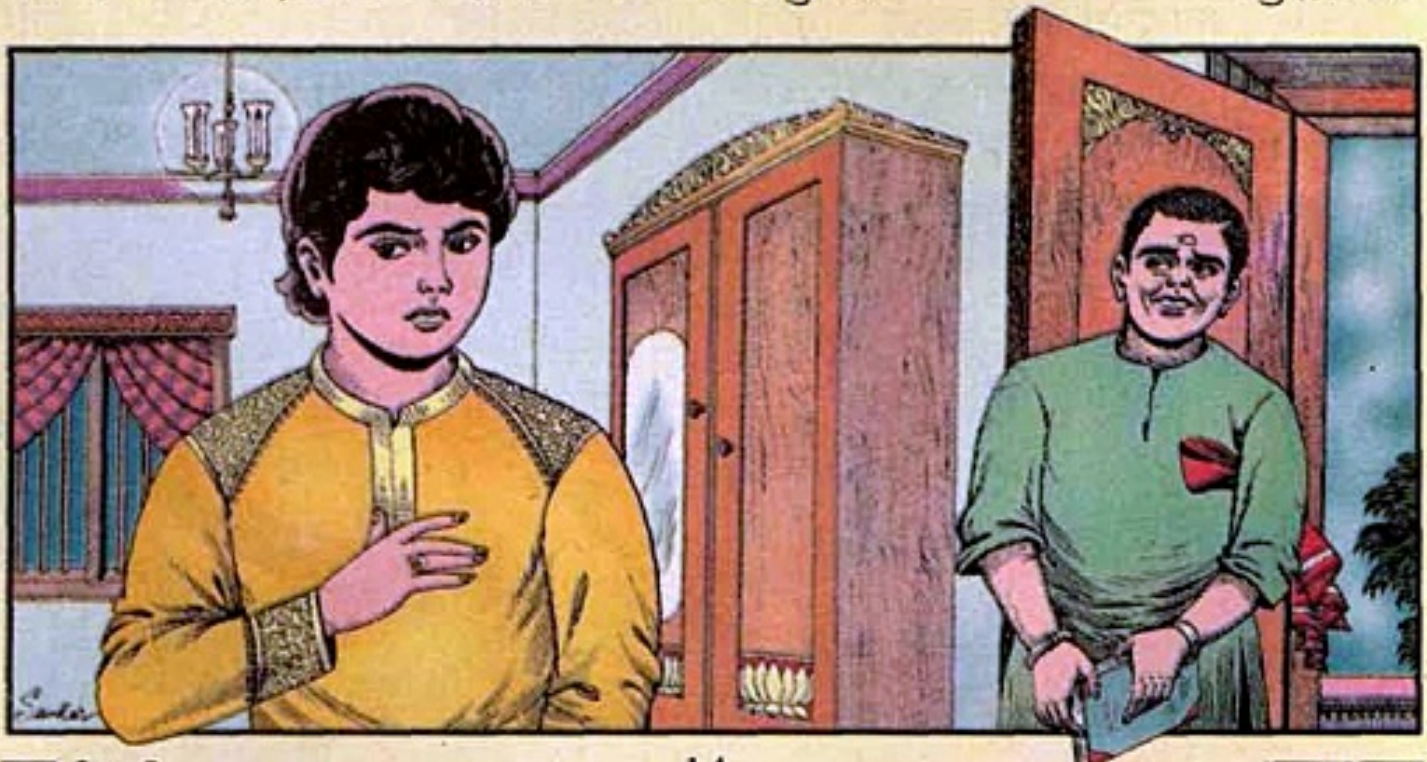
राजा विक्रम
और वेताल की
नई कथाएँ

मौन योगी

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और यथावत् श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, "राजन्, यह रात का समय है। चारों ओर घोर अंधकार छाया हुआ है। जहाँ देखो, वहाँ भूत-प्रेत हैं, विषैले सर्प हैं, खूंखार जानवर हैं। निश्चित रूप से तुम्हारी जान ख़तरे में है। फिर भी इनकी कोई परवाह किये बिना आगे बढ़े चले जा रहे हो। तुम्हारा ऐसा करना क्या उचित है? मैं तो नहीं जानता कि कौनसा ऐसा काम आ पड़ा, जिसे रात के ही समय में तुम्हें पूरा करना चाहिए। साहस की, परिश्रम की, धुन की भी एक हद होती है। और तुम इन हदों को पार कर

रहे हो। अगर किसी महात्मा या महायोगी की सहायता हेतु इतने कष्ट झेल रहे हो तो मैं साफ़ साफ़ कहना चाहता हूँ कि तुम बड़ी भूल कर रहे हो। मैं तुम्हें सावधान भी करना चाहूँगा। क्योंकि ऐसे लोग राजा के आश्रय में रहकर सुख भोगना चाहते हैं। इस मौक़े का वे पूरा-पूरा फ़ायदा उठाना चाहते हैं। वे स्वार्थी होते हैं। उदाहरण के रूप में मैं तुम्हें आज मौन योगी व राजा कनकसेन की कहानी सुनाने जा रहा हूँ। थकावट दूर करते हुए उनकी कहानी सुनो और अपने को सुधारो।'' फिर बेताल उन दोनों की कहानी यों सुनाने लगा :

ममतापुरी नगर की सीमा पर करुणा नदी बहती थी। वहाँ बरगद का एक बड़ा वृक्ष था। उस वृक्ष के नीचे एक योगी रहा करता था।

वह सदा मौन रहता था। किसी के भी सवाल का कोई जवाब नहीं देता था। कोई फल ले आता तो वह खा लेता था। कुछ लोग तो यहाँ तक कहते थे कि वह बहरा व गूँगा है।

एक दिन एक सांड उस प्रदेश में घुस आया। वह लोगों को अपनी सींगों से चोट पहुँचाने लगा। इस वजह से लोग उससे तंग आ गये। उसे पकड़ने के लिए लोग जमा हो गये और उसका पीछा करने लगे। सांड दौड़ता हुआ उस बरगद के वृक्ष के पास गया, जिसकी छाया में योगी बैठा हुआ था। लोग घबरा गये। वे चिल्लाने लगे, ''योगी महाराज, भाग जाइये। नहीं तो सांड आप पर आक्रमण कर देगा।''

पर योगी बिना हिले-डुले वहीं बैठा रहा। सांड थक गया था। वह योगी के पास आया, दो क्षणों तक खड़ा रहा और फिर जमीन पर लेट गया। लगता था, मानों वह अपनी थकावट दूर कर रहा हो।

इस दृश्य को देखकर लोगों ने तरह-तरह के अर्थ निकाले।

एक ने कहा, ''यह योगी बहरा और गूँगा ही नहीं है, अंधा भी है। नहीं तो सांड को आता हुआ देखकर चुप क्यों रह जाता?''

दूसरे ने कहा, ''ऐसी मूर्खता-भरी बातें मत करो। ऐसा कहना तो घोर अपराध है। ये एक महायोगी हैं। इसी वजह से यह घमंडी सांड भी उनके सामने शांत होकर बैठ गया। इनके पास अद्‌भुत व अमोघ शक्तियाँ हैं। इस महायोगी का यहाँ रहना हमारे नगर के लिए बहुत श्रेयस्कर है।'' फिर उस योगी की महानता को लेकर नगर भर में प्रचार भी होने लगा।

उस दिन से योगी को देखने बड़ी संख्या में लोग आने लगे। जो आते थे, कोई न कोई भेंट उसे दे जाते थे। पर योगी उन भेंटों को अपने

लिए नहीं रखता था। उसे देखने आनेवाले अन्य भक्तों को वह दे देता था। योगी के त्याग गुण पर लोग उसकी प्रशंसा के पुल बांधने लगे।

कुछ लोग योगी से अपनी समस्याएँ बताते थे। पर वह कोई उत्तर नहीं देता था। समस्या बतानेवाले अपनी ही तरफ़ से कोई हल ढूँढ निकाल लेते थे और कहते थे, "ऐसा करना ही ठीक होगा न स्वामी। ऐसा करने से हमारी भलाई होगी न?"

योगी की व्यवहार -शैली बड़ी ही विचित्र होती थी। लगता था, सुन रहा है और नहीं भी सुन रहा है। बीच-बीच में 'हाँ' के भाव में सिर्फ़ सिर हिला देता था। कभी-कभी 'न' के भाव में भी सिर हिला देता था। अब लोग योगी को संकेत योगी कहकर पुकारने लगे।

क्रमशः ममतापुरी और आसपास के गाँवों में भी योगी का खूब प्रचार होने लगा। भक्तों की भीड़ लग जाती थी और वे क़ीमती भेंट भी देकर जाने लगे। कुछ धोखेबाजों ने अपना उल्लू सीधा करने के लिए एक उपाय किया। बरगद के वृक्ष के चारों ओर उन्होंने एक टट्टी बांध दी। योगी के दर्शन करने जो लोग आते थे, उनसे धन वसूल करने लगे। कहा करते थे कि योगी बाबा की अनुमति लेकर हम एक आश्रम का निर्माण करने जा रहे हैं। इसके लिए वे चंदा भी वसूल करने लगे। पर वह धन वे आपस में बांट लेते थे। आख़िर यहाँ तक कि योगी के आहार के विषय में भी कोई न कोई बहाना बनाकर रक़म ऐंठने लगे। रात को योगी को वे केवल दो-तीन रोटियाँ ही खाने को देते थे। फिर भी योगी मौन ही रहता था। किसी से भी कुछ कहता नहीं था। यों दिन यथावत् बीतने लगे।

अब राजा कनकसेन को योगी के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। राजा में योगी को देखने की इच्छा जगी। एक दिन रात को सभी भक्तों के चले जाने के बाद राजा बहुरूपिया बनकर योगी के पास गया।

योगी के सामने जो पत्ता था, उसमें सिर्फ़ दो रोटियाँ थीं। थोड़ी दूरी पर एक मशाल जल रही थी। योगी के आँखों में आँसू थे। यह देखकर राजा को लगा कि योगी के जीवन के पीछे कोई दुख भरी कहानी छिपी होगी।

"स्वामी, मैं इस देश का राजा हूँ। हो सकता है, आप लोगों की दृष्टि में गूँगे, बहरे और अंधे हों। आपको समझ न सकने के कारण आप पर वे यह दोष मढ़ रहे हैं। मेरी दृष्टि में आप नहीं बल्कि वे ही विकलांग हैं। अब आपके बोलने का अवसर आ

बाह्य नेत्र जो देख रहे हैं, वे सबके सब सच तो नहीं हो सकते। सच्चाइयों का विश्वास दिलाने के लिए झूठ को हम सच बनाते हैं। पर इन मनोनेत्रों के द्वारा ही हम यह समझ पाते हैं कि ये सच नहीं बल्कि झूठ हैं। इसीलिए मैंने निश्चय किया कि ये जो आँखें सच नहीं देख सकतीं, वे किस काम की। तब से लेकर मैंने इन आँखों से देखना बंद कर दिया। उस दिन से इन आँखों से मैं जो भी देखता हूँ, वह मेरे मन को स्पर्श नहीं करता। स्पर्श कर भी ले, पर मेरा मन उसे स्वीकार नहीं करता। इसीलिए देख सकनेवाली आँखों के होते हुए भी मैं अंधा हूँ।''

''महात्मा, जनता आपको केवल अंधा ही नहीं बल्कि बहरा व गूँगा भी समझती है। आपके ऐसे बर्ताव के पीछे क्या कोई सबल कारण है?'' राजा ने पूछा।

''हे महाराज। सुनिये। मेरी पत्नी का एक ही भाई था। उसे वह बहुत चाहती थी, उसका वह बड़ा आदर करती थी। उसने व्यापार किया और सब कुछ खो दिया। ऋण-भार से वह दबा जा रहा था। मेरी पत्नी से उसकी दुस्थिति देखी नहीं गयी। उसके गिड़गिड़ाने पर मैंने अपनी पाँच एकड़ में से तीन एकड़ भूमि गाँव के सूदखोर के पास गिरवी रख दी और वह रक़म उसे दे दी। मेरे साले ने मुझे वचन दिया था कि शहर में जाकर व्यापार करूँगा और लाभ कमाकर एक साल के अंदर भूमि को गिरवी से छुड़ा दूँगा। पर पूरा एक साल बीत जाने के बाद भी न ही उससे रक़म मिली और न ही वह दिखायी पड़ा। इस बीच सूदखोर रक़म लौटाने के लिए मुझे तंग करने लगा। कोई

गया। कृपया अपने बारे में बताइये,'' राजा कनकसेन ने योगी से विनती की।

''महाराज, आपकी बातों को सुनने के बाद मैंने मौन-व्रत तोड़ने का निश्चय किया। अपने बारे में बताने के पहले ही मैं भांप गया कि आप कोई महान व्यक्ति-विशेष हैं। सच तो सदा सच होता है। उसकी शक्ति अनुपम होती है। उसके सम्मुख किसी भी प्रकार के मौन या असत्य का अस्तित्व नहीं होता। सच छिपाया नहीं जा सकता,'' योगी ने गंभीर स्वर में कहा।

योगी की बातों से महाराज जान गया कि योगी का व्यक्तित्व महान है, वह असाधारण व्यक्ति-विशेष है। महाराज में उसके प्रति आदर की भावना बढ़ गयी।

योगी बाद में यों कहने लगा, ''महाराज, असली आँखें तो हमारे मन की आँखें होती हैं। ये

और उपाय न पाकर पास ही के अपने रिश्तेदार के यहाँ धन ले आने गया। पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। रिश्तेदार ने धन देने से इनकार कर दिया। एक सप्ताह के बाद जब मैं स्वग्राम लौटने लगा तब मैंने देखा कि वह सूदखोर गाँव के चबूतरे पर बैठा हुआ है। वहाँ गाँव के कुछ प्रमुख लोग व ग्रामाधिकारी भी बैठे हुए हैं। मुझे देखते ही उन सबने मिलकर मुझे चेतावनी दी कि पंद्रह दिनों के अंदर रक़म सूदखोर को लौटा न दी जाए तो खेत के साथ-साथ घर-बार भी खोना पड़ेगा।

''महाराज, आपसे यह बात छिपी नहीं है कि गौरव प्रतिष्ठा साधारण गृहस्थ के लिए और देश के राजा के लिए एक समान है। जैसे ही मैंने घर में क़दम रखा, मेरी पत्नी मुस्कुराती हुई सामने आयी। लगता था कि वह कुछ कहना चाहती है। पर मैं उस समय अपने आप में नहीं था। चबूतरे पर मेरा जो अपमान हुआ, वह मुझसे जीर्ण नहीं हो पा रहा था। मैं उसके भाई को और उसके पूरे परिवार को गालियाँ देने लगा। वह रोती-बिलखती घर के पिछवाड़े में दौड़ती हुई चली गयी। मैंने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। मैं चुपचाप अंदर चला गया तो वहाँ मैंने एक ख़त देखा, जिसमें उसके भाई ने लिखा था कि एक हफ़्ते के बाद धन लेकर लौट रहा हूँ।'' कहता हुआ योगी आँसू पोंछने लगा।

''आपकी पत्नी पिछवाड़े में जाकर कुएँ में कूद पड़ी और मर गयी। उसने आत्महत्या कर ली। यही हुआ न स्वामी?'' राजा ने पूछा।

''हाँ, यही हुआ। यह जानते ही घर के दरवाजे भी बंद किये बिना घर से निकल पड़ा। भटकता रहा। आखिर नदी के किनारे के इस बरगद के वृक्ष के नीचे मौन धारण किये बैठ गया। उस क्षण से लेकर सबकी दृष्टि में मैं गूँगा हूँ, बहरा हूँ।''

''महात्मा, लोगों का कहना है कि आप
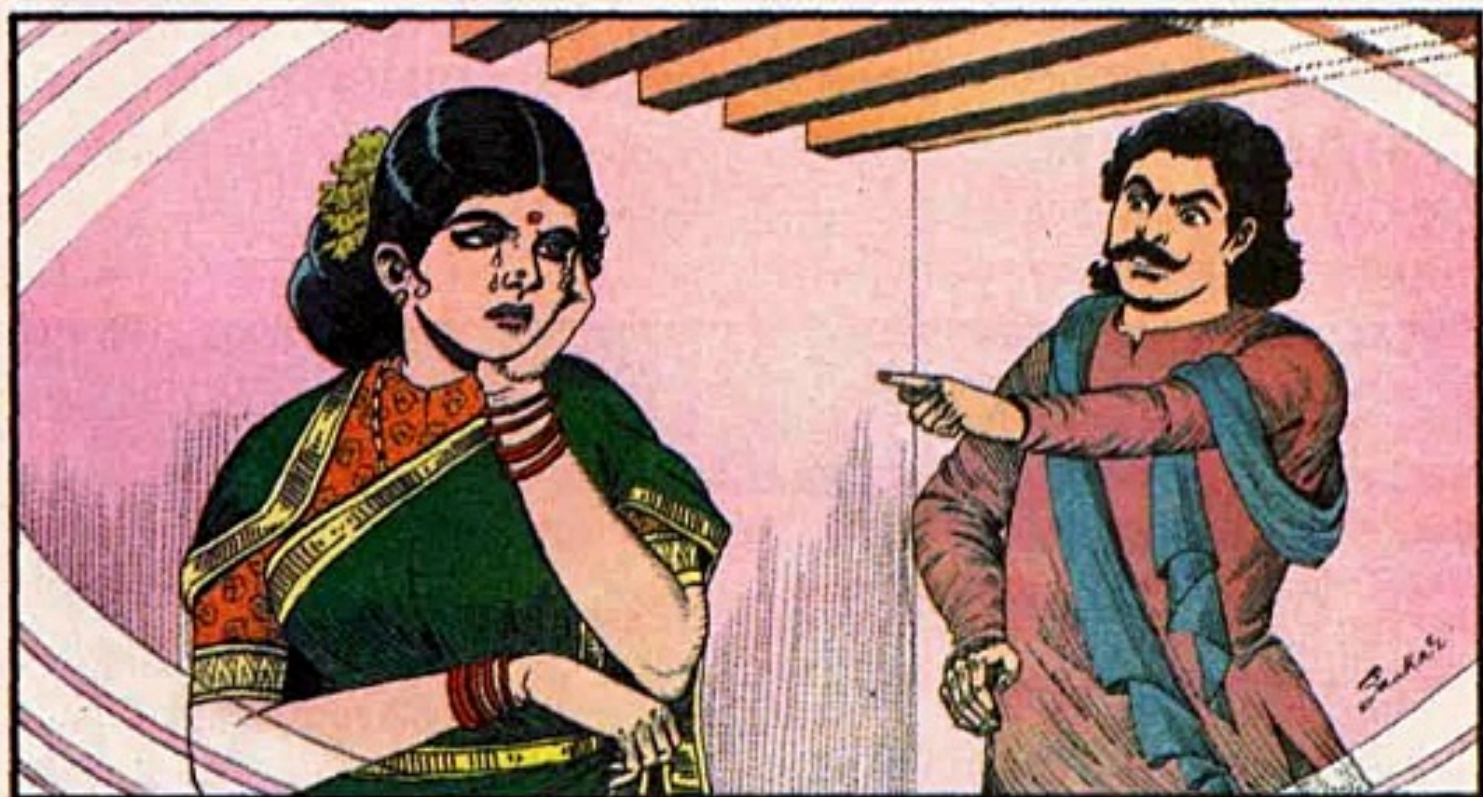
महिमावान है, आपके पास अद्भुत शक्तियाँ हैं। क्या यह सच है महात्मा?'' राजा ने उत्सुकता-भरे स्वर में पूछा।

''कुछ बदमाश, धोखेबाज़ व खुदगर्ज़ लोग हैं, जो ऐसा झूठा प्रचार कर रहे हैं। वे मेरे मौन-व्रत का फ़ायदा उठाकर अपनी जेबें भर रहे हैं। दिन-रात इसी समस्या को लेकर मैं चिंतित हूँ। इस समस्या का कोई समाधान ढूँढ़ नहीं पाया। मैं निस्सहाय हूँ।'' योगी ने दुख-भरे स्वर में कहा।

दूसरे दिन मौन योगी के दर्शन करने जो भक्त जन आये, उन्हें निराश होना पड़ा। वहाँ वह नहीं था। इसके बाद भी वह योगी किसी को दिखायी नहीं पड़ा। केवल महाराज ही जानता था कि उसका अब का निजी सलाहकार कोई और नहीं, वही मौन योगी है।

बेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद कहा, ''राजन्, लंबे अर्से तक वह योगी अंधा, गूँगा और बहरा बना रहा। पर राजा को देखते ही उसकी आँखों में आँसू क्यों भर आये? योगी बनकर वह जनता की निस्वार्थ सेवा कर रहा था। पर बाद में वह राजा का निजी सलाहकार बन गया। यह तो स्वार्थ है, जनता की सेवा कहलायी नहीं जा सकती। योगी के जीवन से उसका मन उचट गया था। राजा के यहाँ रहकर सुख भोगने की इच्छा से प्रेरित होकर वह राजा का सलाहकार बन गया। मेरे इन संदेहों के उत्तर जानते हुए भी तुम चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''राजा कनकसेन ने जो उससे प्रश्न पूछे, उनसे तुरंत योगी ताड़ गया कि वह ज्ञानी, विवेकी एवं जिज्ञासु है। उसने अपने आपको स्वयं अंधा, गूँगा और बहरा बना लिया था। वह नहीं चाहता था कि वह किसी बुराई का कारण बने। खुदगर्ज़ों व धोखेबाजों की धूर्तता उससे सही नहीं गयी। इसी कारण उसकी आँखों में आँसू भर आये। यह देखते हुए राजा ने महसूस किया कि योगी का मन अशांत है और उसे शांति चाहिए। इसीलिए राजा चाहता था कि वह यहाँ न रहे और उसके यहाँ सलाहकार बनकर शांत जीवन बिताये। यह तो स्पष्ट है कि राजा के आश्रय में रहकर सुख भोगने की इच्छा उसमें क़तई नहीं थी।''

राजा का मौन-भंग होते ही बेताल शवसहित ग़ायब हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

- आधार : महेश राठी की रचना

भारत की पौराणिक कथाएँ
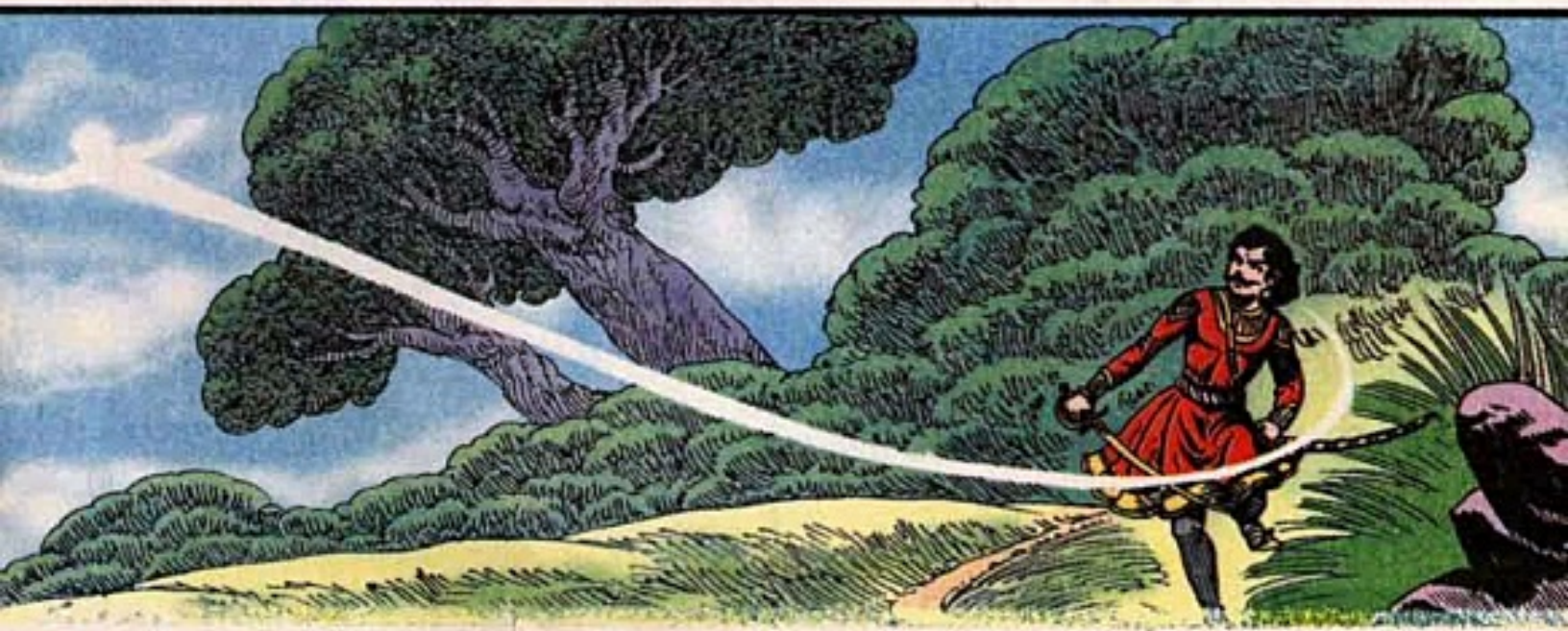
एक ऋषि ने देवों और मानवों की रक्षा की

अति प्राचीन काल पूर्व वृत्तासुर नाम का एक दानव बहुत महत्वाकांक्षी हो गया; इतना कि वह आकाश, पृथ्वी और पाताल तीनों लोकों का स्वामी बनना चाहता था। देवों के अधिपति इन्द्र को उसके साथ एक लम्बा युद्ध करना पड़ा। अन्त में, दानव मारा गया परन्तु अफसोस! इसके बावजूद शान्ति स्थापित नहीं हुई।

इसका कारण यह था कि कालकेय कहलाने वाले दानवों का एक झुण्ड, जो वृत्तासुर के स्वामीभक्त थे, देवों और मानवों को उत्पीडित करता रहा। यह कैसे सम्भव हुआ जब कि उनका नेता परास्त कर दिया गया, ये दानव अभी तक मौत से बचते रहे। वृत्तासुर के मरते ही ये दानव भाग गये। किसी को पता न चला कि ये कहाँ गये। लोगों ने पहले यह सोचा कि ये दूरस्थ पर्वतों या जंगलों में भाग कर छिप गये हैं और अब ये किसी को पीड़ित करने का साहस नहीं करेंगे। परन्तु शीघ्र ही यह आशा झूठी साबित हुई। वे अचानक रात्रि में किसी स्थान पर धावा बोल देते थे और घरों को तहस-नहस कर निवासियों को कत्ल कर देते थे। वे विशेष रूप से धर्मपरायण और निष्पाप व्यक्तियों तथा ऋषि-मुनियों पर ही आक्रमण करते थे। इससे यह पता चलता है कि वे स्वभाव से दुष्ट थे। उन्हें लोगों को सताने, कष्ट देने और उन्हें कत्ल करने में सुख मिलता था। यह सच है कि

वे देवताओं को नष्ट नहीं कर सकते थे, परन्तु उन्हें शान्ति से रहने भी नहीं देते थे।

राजाओं और नायकों ने कालकेयों की दुष्टता रोकने का प्रयास किया, किन्तु वे दानवों के अड्डों का पता लगाने में असफल रहे। ये भयानक दानव किसी नगर या ग्राम पर अचानक हमला कर लोगों को चकित कर देते। जब तक लोग हमला रोकने के लिए अपने को संगठित करते अथवा यह जान पाते कि हमलावर कौन हैं, उसके पहले ही उनके घरों से आग की लपटें उठने लगतीं। दानवों के भय से भागते हुए लोगों की भयंकर रोमांचकारी चीख-पुकार सुनाई पड़ती।

पौ फटते ही यह झुण्ड अदृश्य हो जाता और दानवों का कहीं नामो निशान तक न मिलता। राजाओं के सैनिक उनकी तलाश में चारों ओर फैल जाते, पर व्यर्थ!

क्या वे हवा में गायब हो जाते थे? लोग किंकर्तव्यविमूढ़ रह जाते। अन्ततोगत्वा रहस्योद्घाटन हुआ। इन दानवों में समुद्र की गहराई में छिपने की अलौकिक क्षमता थी। पृथ्वी पर कहर ढाने के बाद ये समुद्र में कूद जाते थे। वे जल के अंदर आराम से रह सकते थे।

देवताओं को पता चला कि केवल अगस्त्य ऋषि इस विषय में कुछ कर सकते थे, जिनके विषय में तुम पिछले अंक में पढ़ चुके हो। वे विंध्याचल को पार कर उत्तर से दक्षिण की ओर आ चुके थे। इसके पीछे एक विशेष कारण था। विंध्याचल सूर्य से नाराज था। वह पूर्व से पश्चिम जाने का सूर्य का मार्ग रोक देना चाहता था। ऐसा करने के लिए वह अपना आकार बढ़ाने लगा। देवताओं और ऋषि-मुनियों ने ऐसा करने से उसे मना किया, किन्तु विंध्याचल ने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया।

वह महान पर्वत अगस्त्य ऋषि का शिष्य था। देवताओं ने ऋषि से अनुरोध किया कि वे अपने शिष्य को सूर्य-चन्द्र जैसे स्वर्गिक खपिण्डों की दिनचर्या में अवरोध उत्पन्न करने से रोकें।

अगस्त्य ने इसे कुछ नवीन ढंग से किया। वे पर्वत की ओर बढ़े। पर्वत ने गुरु को झुककर नमन किया। अगस्त्य ने आशीर्वाद देकर कहा, ''मेरे लौट आने तक इसी प्रकार रहो।''

गुरु के आदेश के न पालन करने का प्रश्न

ही नहीं उठता। किन्तु गुरु कभी वापस नहीं लौटे। उन्होंने देश के दक्षिणी भाग को अपना निवास-स्थान बना लिया। इस तरह विंध्याचल आज भी अपना सिर वैसे ही झुकाये हुए है। पूर्व से पश्चिम की ओर जाने का सूर्य का मार्ग अवरोध-मुक्त है।

एक बार फिर देवताओं ने महान ऋषि से प्रार्थना की, ''कृपया कालकेयों के खतरे को समाप्त करने में हमारी सहायता कीजिए।'' ऋषि ने स्वीकृति का संकेत देते हुए सिर हिलाया, और वे समुद्र की ओर चल पड़े। देवताओं, वीरों और राजाओं ने उनका अनुगमन किया। ऋषि समुद्रतट पर पहुँच कर शान्त भाव से खड़े हो गये। वे क्या करने जा रहे थे, कोई अनुमान न कर सका।

उन्होंने कुछ देर के लिए चित्त को एकाग्र किया। फिर उन्होंने अपनी भुजाएँ फैला कर करतलों की अंजलि बनाई। और देखो ! चमत्कार हो गया ! समुद्र, धारा के समान उनकी अंजलि में समाने लगा। और ऋषि ने फिर क्या किया? उन्होंने अंजलि में मुख लगा कर समुद्र का सारा जल सोख लिया। देखते-देखते समुद्र सूख गया और दानव अनावृत हो गये। कहने की आवश्यकता नहीं कि देवताओं के लिए दानवों को युद्ध में समाप्त करना अब आसान हो गया।

उपसंहार के रूप में हम तुम्हें कुछ महत्वपूर्ण बात बता दें। जिन्होंने भारतीय पौराणिक कथाओं का अध्ययन किया है, उनका कहना है कि इन कथाओं में एक आन्तरिक अर्थ छिपा रहता है। सागर चेतना का प्रतीक है। हो सकता है कि ऋषि का समुद्र पान, जिससे दानवों का नाश हुआ, अपनी चेतना पर ऋषि के आधिपत्य का और इसकी प्रगति में रुकावट के निराकरण का द्योतक हो। सम्प्रति, कथा को समझो। हो सकता है, कालक्रम में तुम इसमें अधिक रुचि लो, इस पर ध्यान करो और उस सत्य को प्राप्त कर लो जो इसमें और इस कोटि की अन्य कथाओं में प्रच्छन्न रहता है।

- बिन्दुसार

अपने भारत को जानो

प्रश्नोत्तरी

विद्यालय में तुम्हें भारत का इतिहास और भूगोल दोनों पढ़ाये जाते हैं। सम्भवतः ज्यादातर इतिहास तुम्हें याद रहता होगा खासकर जो तुमने कहानी की तरह सुना है। इस महीने की प्रश्नोत्तरी तुम्हें इसके भूगोल से ही संबंधित कुछ और याद दिलाने में मदद कर सकेगी। जो इस प्रकार है :

१. उत्तर-पूर्व में स्थित एक पर्वत शृंखला के नाम का अर्थ है 'सर्पों का घर'।
२. किस नदी में श्रीरंग पटनम द्वीप अवस्थित है?
३. उड़ीसा में पामिरस पॉइन्ट एक नदी के मुहाने पर है। किस नदी के?
४. किस राज्य में सबसे बड़ा अन्तर्देशीय जलमार्ग है?
५. स्पीति घाटी का कौनसा गाँव प्रायः विश्व का सबसे ऊँचा गाँव माना जाता है? इसकी ऊँचाई कितनी है?
६. केरल की किस झील में पम्बा, पेरियार तथा मरीमाला नदियाँ गिरती हैं?
७. महाराष्ट्र का कौनसा शहर पश्चिमी घाट का सबसे ऊँचा पर्वतीय सैरगाह है?
८. किस नदी पर भारत का सबसे ऊँचा जलप्रपात जौग स्थित है?
९. बूंदी के किले में एक कृत्रिम झील है जिसमें वरुण का एक अर्ध जल-मग्न मंदिर है। झील का नाम क्या है?
१०. मध्यप्रदेश में एक राजपूत वंश को विंध्या के नाम पर पुकारा जाता है। उस राजपूरत जनजाति का क्या नाम है?

(उत्तर अगले महीने)

मई प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. वाहमिनी, सुलतान अलादीन, १३४७.
२. अंडमन और निकोबार द्वीप समूहों के मध्य १० डिग्री चैनल.
३. कटक.
४. बम्बई (वर्तमान मुम्बई).
५. दिल्ली.
६. कलकत्ता (अब कोलाकाता).
७. मदुरै-वैगै नदी.
८. पम्बन जलडमरूमध्य.

मशालची पिशाच

कमल अपने परिवार के साथ रामापुर में रहता था। यह गाँव जंगली क्षेत्र में था। वहाँ से थोड़ी ही दूरी पर एक छोटे-से शहर में उसकी दुकान थी, जहाँ वह नारियल बेचता था।

एक दिन दुकान से घर लौटने में देरी हो गयी। थोड़ी-सी बारिश भी हो रही थी। हर रोज़ जिस जंगली रास्ते से वह जाता था, उसी रास्ते से चल पड़ा, क्योंकि उसी रास्ते से वह घर जल्दी पहुँच सकता था। पर धीरे-धीरे बारिश बढ़ती गयी। रास्ते में उसने देखा कि एक चट्टान पर एक बूढ़ा पिशाच बैठा हुआ है और उसके हाथ में मशाल है।

पिशाच को देखकर भय के मारे वह थरथर काँपने लगा और जैसे ही लौटने के लिए मुड़ा तो उसे पिशाच ने ऊँची आवाज़ में कहा, ''डरो मत। पास आ जाओ। कहीं भटक तो नहीं गये? रामापुर जाना हो तो दायीं ओर मुड़ो, भरतपुर जाना हो तो बायीं ओर।'' कहते हुए वह मशाल इधर-उधर हिलाता हुआ रास्ता दिखाने लगा।

पिशाच को मीठे स्वर में बातें करते हुए देखकर उसमें साहस भर आया। कमल ने पूछा, ''आधी रात हो गयी। अंधेरा ही अंधेरा है। ज़ोर की वर्षा हो रही है। इस समय मशाल हिलाते हुए तुम्हें यहाँ बैठे रहने की क्या आवश्यकता है?''

इस पर पिशाच ज़ोर से हँस पड़ा और बोला, ''मेरी आवश्यकता है पुण्य। जब जीवित था, तब संपन्न था। पर उन दिनों में मैंने अपना ही स्वार्थ देखा। किसी की भी सहायता नहीं की। फलस्वरूप मैं पिशाच बन गया। अब पुण्य-कार्य करने की मेरी इच्छा है।''

''जंगल में रहते हुए पथिकों को अंधेरे में

- दुर्गा रानी -

मशाल दिखाते रहने से थोड़े ही पुण्य मिलेगा। तुम्हें तो लोगों को जीने का रास्ता दिखाना चाहिए। मेरे घर में सोने की वर्षा बरसाओगे तो तुम्हें ढेर पुण्य मिलेगा।'' कमल ने कहा।

पिशाच ने इसका जवाब देने के लिए थोड़ा-सा समय लिया और कहा, ''स्वार्थ से भरी इच्छाओं की पूर्ति मैं नहीं करता। कुछ और माँगो।''

नाराज़ होते हुए कमल ने कहा, ''तो सुनो, मेरा पड़ोसी मंगल बहुत ग़रीब है। पेट भर खाने के लिए भी उसके पास कुछ नहीं है। उसे घड़ा भर सोना दे दो।'' उसके स्वर में व्यंग्य कूटकूटकर भरा हुआ था।

पिशाच ने यह ताड़ लिया और कहा, ''इतनी बड़ी वर्षा में भी मेरी मशाल बुझी नहीं है। इसका यह मतलब हुआ कि दूसरों की इच्छाओं को पूरा करने की शक्ति मुझमें है। लगता है, तुम इस सत्य से अपरिचित हो। ठीक है। जाओ और मंगल से कहो कि उसके घर के पिछवाड़े में नारियल का जो पेड़ है, उसके नीचे वह खोदे। उसे वहाँ खज़ाना मिलेगा। परंतु जो इसके योग्य नहीं है, उनके खोदने पर उन्हें वहाँ साँप ही साँप दिखायी पड़ेंगे।''

कमल वहाँ से निकलकर घर पहुँचा। जो हुआ, सब अपनी पत्नी को बताया और कहने लगा, ''कुछ भी हो, मंगल भाग्यवान निकला।''

उसकी पत्नी दुर्गा ने झट कहा, ''बेवकूफ़ मत बनो। यह रहस्य मंगल को अभी मत बताना। उससे कहना कि वह जंगल में जाए और पिशाच से मिले। मशालची पिशाच से वह कहे कि वह हमारे घर में लक्ष्मी ले आये। जब पिशाच यह कहेगा कि हमें वह धन कहाँ और किस जगह पर मिलनेवाला है, तब हम उसे खज़ाने का राज़ बतायेंगे। समझे?''

कमल ने मंगल से ऐसा ही बताया। मंगल तुरंत गया और मशालची पिशाच से मिलकर लौटा। लौटने के बाद उसने कमल से कहा, ''पिशाच कहता है कि तुम अपने रसोई घर की दीवार तोड़ दोगे तो तुम्हें घड़ा भर सोने की अशर्फ़ियाँ मिलेंगी।''

''अच्छा। ठीक है, ऐसा ही करूँगा। तुम भी सुनो। तुम अपने घर के पिछवाड़े के नारियल

के पेड़ के नीचे खोदोगे तो तुम्हें वहाँ खज़ाना मिलेगा।'' कमल ने राज़ खोल दिया।

फिर कमल और दुर्गा ने मिलकर रसोई घर की दीवार तोड़ दी। वहाँ अशर्फ़ियों का घड़ा तो दिखायी नहीं पड़ा पर पुराना घर होने की वजह से वह एक तरफ़ झुक गया। दीवारों से साँप और बिच्छू बाहर आने लगे।

कमल नाराज़ हो उठा, आपे से बाहर हो गया और मशालची पिशाच से मिलने फ़ौरन निकल पड़ा। पिशाच का कहीं पता न चला। उजड़े शिवालय के चबूतरे पर लेटे साधु ने परेशान कमल को देखकर कहा, ''बेटे, तुम मशालची पिशाच को ही ढूँढ़ रहे हो न? मैंने ही यह कहकर उसे यहाँ से भेज दिया कि तुम्हें अगर पुण्य कमाना हो तो ऐसी जगह चले जाओ, जहाँ मनुष्य दिखायी नहीं पड़े। मैंने उससे यह भी कहा कि वहाँ जाकर भगवान का स्मरण करते रहो। ध्यान में लीन हो जाओ। पर क्या मैं जान सकता हूँ, उस पिशाच से तुम्हें क्या लेना-देना है?''

कमल ने जो हुआ, सब साधु को बता दिया। साधु ने मुस्कुराते हुए कहा, ''बेटे, इसमें मशालची पिशाच का क्या अपराध है? पहले ही उसने तुम्हें चेतावनी दी थी कि स्वार्थ से भरे वर मत माँगो। उसने तुमसे यह भी कहा था कि ऐसी इच्छाएँ पूरी नहीं होतीं। तुमने मंगल के लिए जो धन माँगा, उसमें तुम्हारा कोई स्वार्थ नहीं था। इसीलिए वह इच्छा पूरी हुई। मंगल ने तुम्हारे लिए लक्ष्मी माँगी। वह भी तुम्हारे कहने पर। स्वार्थ से प्रेरित होकर तुमने उसे ऐसा करने के लिए मजबूर किया।

पिशाच से मिलकर लौटने के बाद ही उसे यह राज़ मालूम हो पायेगा कि उसे खज़ाना कहाँ मिलेगा। उसके जाने में यही अंतरार्थ है। याद रखो, स्वार्थ से भरी इच्छाएँ कभी पूरी नहीं होतीं। समझे?''

कमल में ज्ञानोदय हुआ। वह जान गया कि उसके भाग्य में जो लिखा है, उसे वही व उतना ही प्राप्त होगा। मेहनत की कमाई ही उसके भाग्य में लिखा है। वह अब हर प्रकार की चिंता से मुक्त हो गया और घर लौटा।

वाग्विदग्ध – गोपाल भाँड़
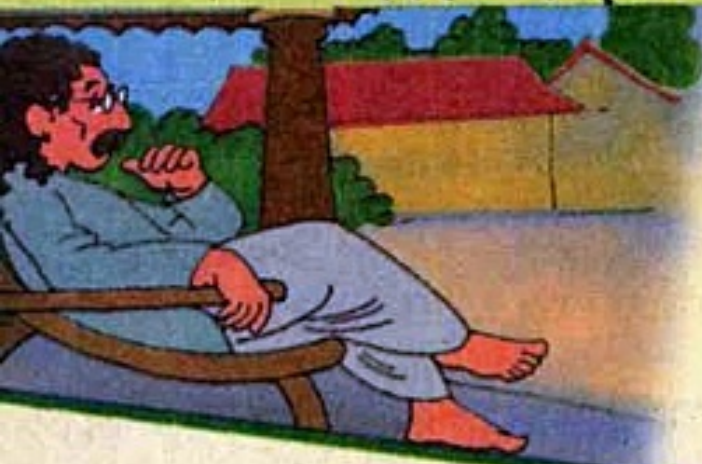
मोनी बाबू कृष्ण नगर के सबसे धनी व्यक्तियों में से एक था। वह बहुत कंजूस भी था। अपने बालों में वह कभी तेल नहीं डालता था, जिससे वे हमेशा बिखरे रहते थे। वह धोती पहनता था, जिसे वह सप्ताह में एक बार धोता था। वह देखने में गन्दा लगता था, इससे उसे कोई भी अपना मित्र बनाना नहीं चाहता था।

त्योहार का समय था। कुछ लड़के उसके पास दान माँगने गये। "तुम्हें पटाखों के लिए पैसे चाहिए?" वह उनपर चिल्लाया। "यह पैसे की बर्बादी है। भाग जाओ यहाँ से।" बच्चे निराश होकर चले गये।
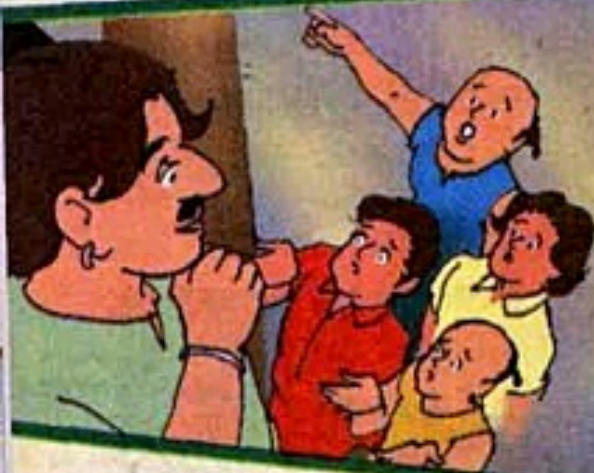
मार्ग में वे गोपाल भाँड़ से मिले। उन्होंने अपना अनुभव बताया। इस स्थान के हरेक व्यक्ति ने दान दिया। "क्या वह कम से कम पचास रुपये भी नहीं दे सकता?" उन्होंने अपना सब दुख-दर्द बता दिया।

"मोनी बाबू कंजूस है, क्या तुम्हें नहीं मालूम?" गोपाल भाँड़ ने बच्चों को डाँटा। पर वह उनकी सहायता करना चाहता था। और यदि वह मोनी बाबू को एक-दो पाठ पढ़ा सके तो उसे और भी खुशी होगी। "शामको आओ। मैं तुम्हें उससे एक सौ रुपये दिलवाऊँगा।" बच्चे एक दूसरे को देखकर मुस्कुरा पड़े।

मोनी बाबू अपने बाग में सब्जियाँ तोड़ने में व्यस्त था। उसने जैसे ही गोपाल भाँड़ को आते देखा, जल्दी से सब्जियाँ छिपा लीं। ''आज मेरा उपवास है, इसलिए सिर्फ रात्रि भोजन करूँगा। तुम रात के लिए सब्जियाँ बचाकर रख सकते हो, लेकिन सोचो कितना पैसा बर्बाद कर रहे हो !'' गोपाल ने कहा।

''मैं? पैसा बर्बाद कर रहा हूँ?'' मोनी बाबू चकित होकर बोला। ''जब अतिथि आता है तब उसके स्वागत में दीप जलाते हो और जब वह बैठ जाता है तब रोशनी गुल कर देते हो।'' ''जब हम बातें करते हैं तब हम एक दूसरे को क्यों देखें?'' मोनी बाबू ने सफाई दी। ''यदि ऐसा है तो जब अंधेरे में बैठते हैं तो कपड़ा पहनने की क्या जरूरत है? कपड़ा कम फटेगा।'' गोपाल ने कहा।

''क्या एक आँख से देख सकते हो ?'' गोपाल ने पूछा। ''निस्सन्देह, मैं देख सकता हूँ।'' मोनी बाबू ने उत्तर दिया। ''तब तुम चश्मा लगाकर पैसा बर्बाद कर रहे हो।'' गोपाल ने अपना विचार व्यक्त किया। मोनी बाबू ने अपना चश्मा उतार दिया। उसने सोचा कि गोपाल को जितना होशियार उसने समझा था, उससे अधिक होशियार निकला।

''बताओ गोपाल, आखिर तुम्हें क्या चाहिए?'' मोनी बाबू ने उसकी आँखों में घूरते हुए कहा। ''बिल्कुल आसान है। पैसा नहीं खर्च कर तुम उसे बर्बाद कर रहे हो। अपने बच्चों को पर्व का आनन्द लेने दो।'' गोपाल ने कहा। मोनी बाबू ने शरमाते हुए सौ रुपये का एक नोट निकाल कर दे दिया। बातचीत का सूत्र उसने पकड़ लिया था।

भारत दर्शक

कोंडापल्ली के खिलौने

यदि तुम कभी निकट भविष्य में तिरुपति-तिरुचनूर जाओ तो अपनी क्रय-सूची में आन्ध्र के परम्परागत काष्ठ के खिलौनों का सेट शामिल करना न भूलना।

आन्ध्र प्रदेश में इस लोक शिल्प शैली के चार लोकप्रिय केन्द्र हैं - कोंडापल्ली तिरुचनूर, निर्मल तथा इटिकियो पाका। इनमें कोंडापल्ली के खिलौने अधिक लोकप्रिय हो गये हैं। ये तेला पोनिकी नामक मुलायम लकड़ी पर उत्कीर्ण किये जाते हैं। यह लकड़ी पोनिकी वृक्ष की होती है जो इन ग्रामों में अत्यधिक मात्रा में पाया जाता है।

कोंडापल्ली के शिल्पकार आर्य क्षत्रिय जाति के होते हैं और ये इन खिलौनों को पीढ़ियों से बनाते चले आ रहे हैं।

ये खिलौने पौराणिक व्यक्तियों और घटनाओं तथा ग्रामीण प्रसंगों को चित्रित करते हैं। तुम शायद ग्रामीण जनों के सुन्दर सुन्दर खिलौने देखोगे - जैसे बुनकर, किसान, व्यापारी, संपेरा और धोबी।

पक्षियों में मोर, तोता, सारस तथा पशुओं में ऊँट, वराही, घोड़ा, बाघ और हाथी पोनिकी में बड़ी सुन्दरता से गढ़े जाते हैं। प्राचीन काल में शिल्पकार पत्थरों, पौधों, जड़ी-बूटियों, जड़ों तथा गेंद से निकाले गये पूर्णतया प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करते थे; आजकल वे रासायनिक रंगों का प्रयोग करते हैं।

कोंडापल्ली के खिलौने आपके प्रदर्शन मंजूषा और बोमई-कोलू (तमिलनाडु में नवरात्रि या दशहरा पर्व के अवसर पर खिलौना-प्रदर्शन) में चार चाँद लगा देंगे।

चन्दामामा की
वसुधा
In collaboration with
KALPAVRIKSH
& NBSAP
Sponsored by National Foundation for Ind
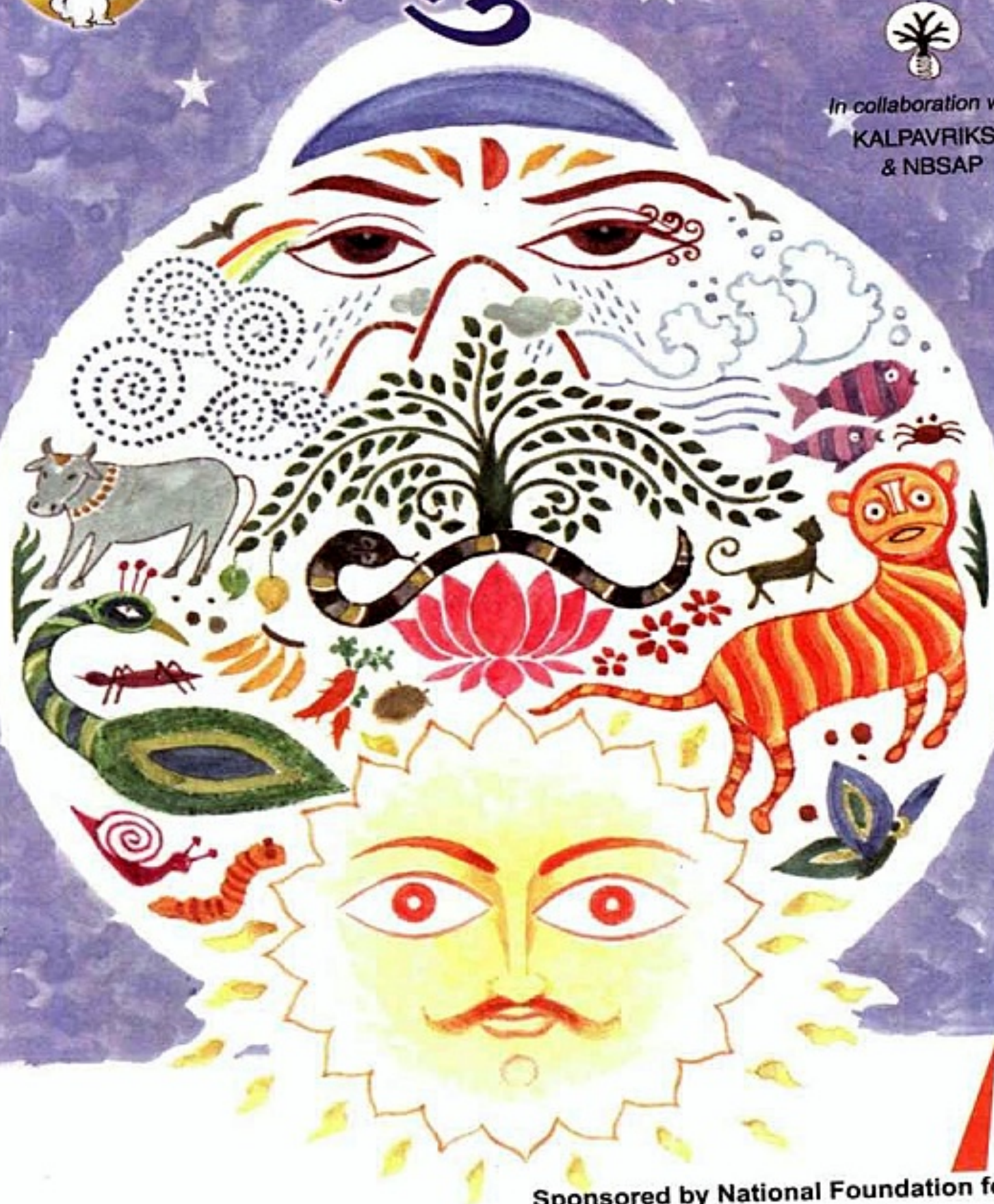
नेशनल फाउण्डेशन फॉर इंडिया (एन.एफ.आई.)

एन.एफ.आई. भारत की अनुदान देनेवाली एक स्वतंत्र संस्था है जो शोषित वर्ग को ध्यान में रखकर विकास क्रिया को समर्थन देने के लिए स्थापित की गई है। फाउण्डेशन इस बात को स्वीकार करता है कि प्रत्येक व्यक्ति को एक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज में मान-मर्यादा और आत्म-सम्मान के साथ जीने का अधिकार है। यह व्यक्तियों और समुदायों की क्षमताओं और उनके जीवन-स्तर को बढ़ाने की तथा सामाजिक बाधाओं को चुनौती देने की आवश्यकता का उत्तर देता है।

हमारे कार्यक्रम

लिंग साम्य तथा न्याय : लिंग साम्य तथा न्याय कार्यक्रम का प्राथमिक केन्द्र-बिन्दु बालिकाओं की उत्तरजीविता तथा सुविधाओं से उनके बंचित रहने जैसी समस्याओं के इर्दगिर्द रहा है। स्त्री-शिशु हत्या, भ्रूण हत्या और लिंग अनुपात में गंभीर असंतुलन जैसी समस्याओं को समुदाय पर आधारित पहल तथा नीति-निर्माण और शासन में कौशलपूर्ण हस्तक्षेप द्वारा संबोधित किया जाता है।

जन-कार्य तथा शहरी शासन : यह कार्यक्रम एक ऐसे शासन-तंत्र की आवश्यकता को संबोधित करता है जो साझेदारी-विकास द्वारा मानव विकास को, बृहत्तर स्वामित्व, पारदर्शकता तथा उत्तरदायित्व को समर्थ बनाकर तथा गरीबी के उन्मूलन द्वारा शक्ति के विकेन्द्रकरण को, प्रोत्साहन और पोषण देता है। एन.एफ.आई. पहल के प्रयासों को जैसे रिपोर्ट कार्ड अध्ययन तथा चुने हुए प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण को बढ़ावा देता है। इसने स्थानीय शासन में सर्वोत्कृष्टता के लिए पुरस्कार भी संस्थापित किये हैं।

क्षेत्रीय असंतुलनों का उपचार : देश के उत्तर-पूर्वी भाग में सामाजिक-आर्थिक असंतुलनों के कारण फाउण्डेशन स्थानीय गैर सरकारी संस्थाओं के साथ मिलकर लिंग, जीविका तथा पर्याबरण संबंधी समस्याओं से संबंधित सामुदायिक विकास कार्यक्रमों को समर्थन दे रहा है। फाउण्डेशन का उद्देश्य यह भी है कि वह गैर सरकारी संस्थाओं के कार्य क्षेत्रों में विकास संबंधी समस्याओं को सुलझाने, सूचना एवं विचारों के आदान-प्रदान करने योग्य बनने तथा शोध व प्रलेखन को बढ़ावा देने की उनकी योग्यताओं को बढ़ाये।

विकास-संचार : विकास संचार कार्यक्रम, वर्तमान समुदाय स्तरीय विकास अभिक्रमों को पूरा करने की दृष्टि से समुदायों को संचार के साधनों को प्रयोग में लाने की शक्ति प्रदान करने की जरूरत से विकसित हुआ है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य है केंद्रित संचार अभिक्रमों का विकास जो फाउण्डेशन के विकास हस्तक्षेपों के साथ-साथ जाता है। फाउण्डेशन ने पत्रकारों के हेतु विकास समस्याओं पर शोध/लेखन कार्य के लिए मिडिया फेलोशिप और उत्तर-पूर्व मिडिया एक्सचेंज कार्यक्रम संस्थापित किया है।

एन.एफ.आई. इनोवेशंस फंड (एन.आई.एफ.) : फाउण्डेशन ने सेंटर ऑफ इनोवेशंस इन वोलंटरी ऐक्शन (CIVA) ऑफ द यू.के. तथा ऑक्सफाम के सहयोग से एन.आई.एफ. की शुरुआत की। यह फंड स्वास्थ्य एवं संकल्पवाद के क्षेत्र में अभिनव योजनाओं के लिए छोटे अनुदान देता है।

अधिक सूचना के लिए लिखें : नेशनल फाउण्डेशन ऑफ इंडिया

कोर IV A, UG फ्लोर, इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोदी रोड, नई दिल्ली - ११० ००३,

फोन - ४६४ १८६४/६५, ४६४ ८४ ९०/९२ फैक्स - ४६४ १८६७

Email: root@nfi.org.in Website: www.nfi.org.in

प्रिय मित्रो !
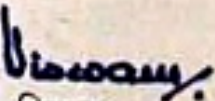
प्रत्येक वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस पर, जो ५ जून को मनाया जाता है, हम लोग बैठकर बातें करते हैं कि वन्य जीवन और वृक्षों की रक्षा कितना महत्वपूर्ण है। और बाद में सब कुछ भूल जाते हैं। इस वर्ष हम भिन्न हो जायें। अपने देश में जीवन की एक विशाल और विचित्र विविधता की खोज करें - पौधे, पशु, जल-जीवन, सूक्ष्म जीव, मानव जीवन और उनके प्राकृतिक आवास।

जीवन की इस समृद्ध विविधता की आपको एक झलक देने के लिए चन्दामामा जैवविविधता पर एक परिशिष्ट - 'वसुधा' प्रकाशित कर रहा है। 'वसुधा' नेशनल फाउण्डेशन ऑफ इंडिया द्वारा प्रवर्तित है। इसकी विषय वस्तु एक पर्यावरण एक्शन ग्रूप *कल्पवृक्ष* तथा राष्ट्रीय जैवविविधता नीति और कार्य योजना द्वारा दी गई है।

वसुधा समझायेगी जैवविविधता पद का मतलब और क्यों इसे संरक्षित किया जाना चाहिए। यह आपको दिखायेगी पशुओं और पौधों की कुछ दुर्लभ, विलक्षण प्रजातियाँ तथा मन को चकित कर देनेवाली भारत में फसलों की श्रेणी। यह उन लोगों से परिचय करायेगी जिन्होंने जैव विविधता के संरक्षण में बहुत योगदान किया है।

किन्तु *वसुधा* व्यापक नहीं हो सकती। स्थानाभाव के कारण जैवविविधता के सभी पक्षों के साथ हमने न्याय नहीं किया, जैसा कि हम करना चाहते थे। उदाहरण के लिए हमारे जल-जीवन के विषय में या भिन्न-भिन्न प्रकार के परिस्थिति-विज्ञान के विषय में जानने के लिए आपको दूसरे अंक की प्रतीक्षा करनी पड़े। *वसुधा* विस्तृत नहीं बनना चाहती। हंमलोग सिर्फ जैवविविधता में आपकी रुचि जगाना चाहते हैं और प्रकृति के लिए आपके हृदय में प्रेम की ज्योति जला देना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि आप समस्त प्राणि के लिए चिंता महसूस करें और इसके लिए कुछ करने की इच्छा करें। न कि केवल बातें करें और प्रत्येक विश्व पर्यावरण दिवस पर निबंध लिखें। याद रखें, प्रत्येक लघु बून्द से ही विशाल सागर बन जाता है।

सस्नेह

Viswam

विश्वम

सम्पादक, चंदामामा

प्राविधिक परामर्शदाता :
कल्पवृक्ष / एन.बी.एस.ए.पी.
पता : अपार्टमेंट ५, श्री दत्त कृपा
९०८, दक्कन जिमखाना, पुणे - ४११ ००४, इंडिया.
फोन/फैक्स - ०२०-५६५४२३९
E-mail : kalpavriksh@vsnl.net

सरकार और जैवविविधता

राज्य और केंद्रीय सरकारें भारत के उद्‌भिज और पशु प्रजातियों की सुरक्षा के लिए उत्तरदायी हैं। यह उनके प्राकृतिक आवासों को 'राष्ट्रीय पार्क' अथवा 'अभयारण्य' घोषित करके किया जाता है, जहाँ मानव गतिविधियों पर प्रतिबंध रहता है जिससे वे शांतिपूर्वक रह सकें। भारत में ऐसे क्षेत्र ५५० से भी अधिक हैं जो कुल भूमि का ५ प्रतिशत है। वन्य जीवन (सुरक्षा) कानून लगभग सभी प्रकार के शिकार पर प्रतिबंध लगाकर वन्य जीवन की रक्षा करता है। विविध अनाजों और पशुधन के विकास के लिए बीज बैंक तथा विशेष प्रजनन केंद्र हैं। इसके बावजूद अनेक पौधे और पशु अस्तित्व की विलुप्ति के भय के शिकार हैं। सरकार अनुभव कर रही है कि यह केवल तभी जैवविविधता की रक्षा कर सकती है यदि हममें से प्रत्येक सहयोग दे। ... क्या आप इसमें शामिल होंगे? अपने निकटतम सुरक्षित क्षेत्र के बारे में पता करें कि आप इसके संरक्षण में कैसे सहायता कर सकते हैं।

Designed and produced by Chandamama India Ltd., 82 Defence Officers Colony Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Phone : 234 7384, 234 7399. Website : www.chandamama.org.

छोटे–बड़े प्राणी

कितने प्रकार के पशुओं और पौधों के नाम तुम बता सकते हो? दस? पचास? यदि ५० से ऊपर बता सको तो तुम्हारी गणना प्रतिभाशाली के रूप में होगी। फिर भी, क्या जानते हो कि जंगलों में रहनेवाले या इसके तटवर्ती क्षेत्रों के बच्चे सौ से भी अधिक और कुछ तो सम्भवतः कुछेक सौ बता सकते हैं? और ये बच्चे हो सकता है कभी स्कूल न गये हों।

ठीक है, कोशिश करो। कितने प्रकार के चावल या गेहूँ या मक्का के नाम जानते हो? दो? पाँच? यदि तुम इन सामान्य अनाजों की दस से अधिक किस्मों के नाम बता सको तो तुम्हें सलाम ! लेकिन तुम्हें मणिपुर, केरल या छत्तीसगढ़ के ऐसे ग्रामीण बच्चे मिलेंगे जो फसलों की कई दर्जन किस्में बता देंगे !

क्या तुम जानते हो केवल भारत में पौधों और पशुओं की १२५००० से भी अधिक प्रजातियाँ हैं? और भी अधिक (खासकर सूक्ष्म जीव जो आँखों से नहीं दिखाई पड़ते) जिनकी हम अभी तक खोज नहीं कर पाये। और यह विश्व भर की प्रजातियों का जो ५००००० से भी अधिक हो सकता है, सिर्फ एक लघु अंश है। यह जैवविविधता का, परिस्थिति विज्ञान के क्षेत्र (वन, झील, नदियाँ, तटवर्ती स्थान, सागर, पर्वत, चारागाह, मरुस्थल...), प्रजातियों एवं एक स्थान की अंतर्निहित विविधताओं का अंग है।

यह जैवविविधता हमारे इर्द-गिर्द तेजी से नष्ट हो रही है। पशुओं का शिकार किया जाता है या उनके आवास नष्ट कर दिये जाते हैं। पौधों को उखाड़ लिया जाता है, जबकि प्रदूषण उनकी सांस (और हमारी) अवरुद्ध कर देता है। जब तक तुम अपने दादा की उम्र तक पहुँचोगे, इस जैवविविधता का एक चौथाई

इस चित्र में तुम कितने प्राणियों को पहचान सकते हो?

भाग नष्ट हो चुका होगा।

उन्हें कौन नष्ट कर रहा है? हम लोग, और कौन? हमारे उद्योग और नगर, अधिक से अधिक प्लास्टिक और कागज, जंक भोजन, बिजली और हर चीज़ भोगने की हमारी कामना।

कल्पना करो कितना उबाऊ होगा जब हम अपने चारों ओर सिर्फ मनुष्य ही मनुष्य देखें। लेकिन जैवविविधता अन्य कारणों से भी महत्वपूर्ण है... सोचो उस दूध के बारे में जो तुम पीते हो, सूती वस्त्र जो तुम पहनते हो, विविध भोजन जो तुम खाते हो, कुछ दवाइयाँ जो तुम लेते हो, और जल भी जो पीते हो, प्राणवायु जो श्वास से ग्रहण करते हो! यह सब और इससे भी अधिक धरती पर जीवन के जटिल जाल से जुड़ा हुआ है।

अतः क्या इस जैव विविधता की रक्षा के लिए तुम कुछ करना चाहोगे? बहुत बच्चों ने इसे किया है - एक चालू योजना के तहत जिसे राष्ट्रीय जैवविविधता नीति एवं कार्य योजना (NBSAP) कहते हैं। यह पर्यावरण और वन मंत्रालय की योजना है जिसे २२ वर्ष पुराने पर्यावरण संबंधी एक्शन ग्रूप - *कल्पवृक्ष* का सहयोग प्राप्त है और इसका प्रशासन बायोटेक कनसोर्टियम इंडिया लि. के अधीन है।

क्या तुम्हें विश्वास होगा कि एक चुटकी मिट्टी में १० बिलियन जीवाणु हैं? एक बिलियन कितना होता है? यदि अपनी कलम की कैप के आकार को एक बिलियन गुना बढ़ा दो तो उसमें पूरी दुनिया समा जायेगी।

एक स्तनपायी का नाम बताओ जो पिछले १०० वर्षों में भारत में लुप्त हो चुका है?

भारत में चीता दिखाई पड़ने का पिछला लिखित प्रमाण छत्तीसगढ़ के बस्तर में १९४८ में था।

महाराष्ट्र के विदर्भ में स्कूली बच्चों ने पौधों से बने उत्पादनों की प्रदर्शनी लगाई जिसमें थे कृषि उपकरण, हर्बल टूथब्रश, रस्सी, तथा अन्य। दिल्ली और चेन्नई के बच्चों ने एक कार्यशाला में भाग लिया, जहाँ उन्होंने इस बात पर बल दिया कि सभी बच्चों को जैवविविधता की रक्षा में शामिल करना आवश्यक है। कर्नाटक में राज्य भर में बच्चों को "जैव विविधता मान चित्रण" में लगाया गया जिसमें उन्होंने अपने-अपने गाँवों में पाये जानेवाले पौधों और पशुओं को सूचीबद्ध किया।

हजारों लोग एन.बी.एस.ए.पी. प्रक्रिया में लगे हुए हैं। वे भारत की बची-खुची जैवविविधता की रक्षा करने की योजनाएँ बना रहे हैं। और यह कैसे विश्वास दिलायें कि हम सब प्रकृति के वरदान का आनन्द सदा लेते रहें!

अब, क्या तुम भी अपने चतुर्दिक फैले पौधों और पशुओं की रक्षा के लिए कुछ करना नहीं चाहोगे?

- सुजाता पद्मनाभन
आशीष कोठारी

चित्ताकर्षक वनस्पति–संसार

इन चित्रों को देखो। ये भारत में पौधों की ४७,००० प्रजातियों में से केवल छः हैं। पौधों के चित्र (जिनकी क्र.सं. दी गई है) और उन पर दिये गये नोट्स (इनकी भी क्र.सं. दी हुई है) मिश्रित कर दिये गये हैं। नोट्स को ध्यान से पढ़ो और देखें यदि तुम उन्हें सही पौधों के साथ मिला सको।

आनन्द लो !

B

कुसुम

फूल देनेवाले अधिकांश सुंदर वृक्ष दूसरे देशों के मूल वासी हैं और यहाँ के पक्षियों और दूसरे प्राणियों को सहारा नहीं दे सकते। जो भी हो, कुसुम वृक्ष प्रायद्वीपीय भारत का विशुद्ध प्रजनित मूलवासी है।

मध्यम आकार के कुसुम वृक्ष में ग्रीष्म शुरू होते ही ताजे पत्ते निकलने लगते हैं। इसके पत्ते चमकीले लाल होते हैं और तुम उन्हें फूल समझने की भूल कर सकते हो। पुराने कुसुम वृक्षों के धड़ों में गड्ढे बन जाते हैं और वे छिपकलियों तथा अन्य प्राणियों के लिए शरण-स्थल हो जाते हैं। पक्षी तथा गिलहरियाँ इसके फल खाते हैं और बीजों से लाभदायक तेल निकलता है, जो मच्छरों को भगाता है और सिर के बालों के प्रयोग के लिए है। अतः जब तुम अगली बार एक पौधा लगाने का निश्चय करो तब कुसुम ही लगाओ।

A

शैवाक

शैवाक शैवाल और फफूंद के बीच का संयोजन है और यह व्यवस्था दोनों दलों को अनुकूल बैठती है। स्वतंत्र रूप से शैवाक का शैवाल भाग सूख कर मर जायेगा। फफूंद का रेशा इसे सूखने से बचाता है। बदले में शैवाल प्रकाश संश्लेषण द्वारा भोजन बनाता है और इसे फफूंद के साथ बाँटकर खाता है जो क्लोरोफिल के अभाव में अपना भोजन नहीं बना पाता। शैवाक प्रदूषण से बुरी तरह प्रभावित हो रहा है, इसलिए जहाँ ये बहुत मात्रा में पाये जाते थे, वहाँ उनकी अनुपस्थिति से यह संकेत मिलता है कि उस क्षेत्र में प्रदूषण का स्तर बढ़ गया है।

सनडिव

एक पौधा जो चल सकता है, कीडे को पकड़ सकता है और खा सकता है? अविश्वसनीय लगता है, किन्तु यह सत्य है! भारत के अनेक कीटभक्षी पौधों में एक है सनडिव। यह एक छोटा पौधा है, लगभग एक रुपया के सिक्के के बराबर चौडा और उतनी ही ऊँचाई। यह कच्छी क्षेत्र में पाया जाता है। इसके पत्तों पर पाये जानेवाले अनेक तरल चिपचिपा बूंदों के कारण इसका यह नाम पडा। छोटे कीडे जो इस पर आते या चढ़ते हैं, पत्ते पर के लसलसेदार तरल से चिपक जाते हैं जिन्हें पत्ता धीरे-धीरे मुडकर ढक लेता है और शिकार को पचा लेता है।

गुलवेल

दिल के आकार की पात्तियों वाला यह औषधीय महत्व का आरोही पौधा है। यह इतने व्यापक रूप से बढ़ता है कि यह कभी-कभी पूरे वृक्ष को ढक लेता है। यह सामान्यतः सूखे भागों में लगभग पूरे भारत में पाया जाता है। आम तौर पर पौधे की टहनी को टुकड़ों में काटकर पानी में उबाला जाता है और काढ़े को अनेक रोगों की चिकित्सा में तथा टॉनिक के रूप में भी प्रयोग में लाया जाता है। सामान्यतः जब दूसरे आरोही पौधों की टहनी काटी जाती है तब उसका ऊपरी भाग सूख जाता है। किन्तु जब इस आरोही पौधे की टहनी काटी जाती है तब इसकी जड़ जमीन तक आ जाती है।

फॉक्सटेल ऑकिड (वान्दा)

फौक्स टेल ऑकिड वृक्षों पर उगता है और यह भारत के प्रायद्वीपीय और उत्तर पूर्व क्षेत्रों के नम इलाकों में पाया जाता है। ग्रीष्म ऋतु में इसमें लोमडी की पूँछ के आकार का गुलाबी फूलों का बडा लटका हुआ गुच्छा खिलता है। यह ऑकिड जल तथा अन्य पोषक तत्व विशेष रूप से परिष्कृत मोटी हरी जडों की सहायता से, जो उसी वृक्ष के छाल पर उगती हैं, हवा से लेता है। वृक्ष को सहारा के रूप में प्रयुक्त करने के अतिरिक्त वह ऑकिड इससे और कुछ नहीं लेता और न इसे हानि पहुँचाता है।

पाठ्य सामग्री और चित्र : विवेक गौड़-ब्रूम

बीज-संचय

अंजम्मा आन्ध्रप्रदेश के एक छोटे से गाँव गंगवार में एक छोटी झोंपड़ी में रहती है। उसके घर के एक कोने में ५० छोटी टोकरियाँ हैं, हरेक में एक-एक फसल का बीज एकत्र है जिसकी खेती उसका परिवार पीढ़ियों से करता आ रहा है। चावल, सरसों, बाजरा, दालें.... । प्रत्येक वर्ष, फसल कटाई के बाद वह अनाज के ढेर से सर्वश्रेष्ठ बीजों को चुन लेती है और कीटों से बचाने के लिए मिट्टी, नीम की पत्ती और राख की परतों के बीच टोकरियों में जमा कर देती है।

अंजम्मा के समान हमारे देश के अनेक किसान भी भविष्य में उपयोग के लिए सर्वोत्कृष्ट बीजों को बचा कर रख लेते हैं। यदि ऐसा नहीं किया जाता तो फसल की कुछ किस्में जो आज हमारे पास हैं खत्म हो जायेंगी। फसल की किस्म क्या होती है? केला के बारे में सोचो। कितने प्रकार के केले तुमने खाये हैं? पीले बहुत बड़े आकार वाले, छोटे पीले वाले, हरे वाले, लाल वाले... यही फसल की किस्म है! क्या तुम जानते हो कि भारत में आलू की १६ किस्में हैं, नारियल की ४२ किस्में, अदरक की १२४ किस्में, आम की हजार से ऊपर किस्में और (साँस थाम लो) ५० हजार से लेकर ६० हजार तक चावल की किस्में हैं।

और हम क्यों नहीं चावल या आम या कोई अन्य की एक किस्म छोड़ देते या खो जाने देते? एक किसान अनेक कारण देगा... भिन्न-भिन्न किस्में भिन्न-भिन्न प्रकार की मिट्टी और पानी की भिन्न-भिन्न मात्राएँ माँगती हैं; उनकी कटाई वर्ष के अलग-अलग समय पर होती है (ताके कुछ न कुछ अनाज सब समय उपलब्ध रहे), और वे अलग-अलग कीडों के प्रतिरोधी होते हैं। इसलिए किसान जब फसल की एक किस्म से अधिक का उत्पादन करता है, तब सूखा, बाढ़ या कीट आक्रमण के वर्ष में सब का सब नष्ट नहीं हो जाता। और प्रायः अनेक किस्में पर्वों के अवसर पर उपयोग के लिए उपजायी जाती हैं या सिर्फ इसलिए कि वे स्वादिष्ट होती हैं!
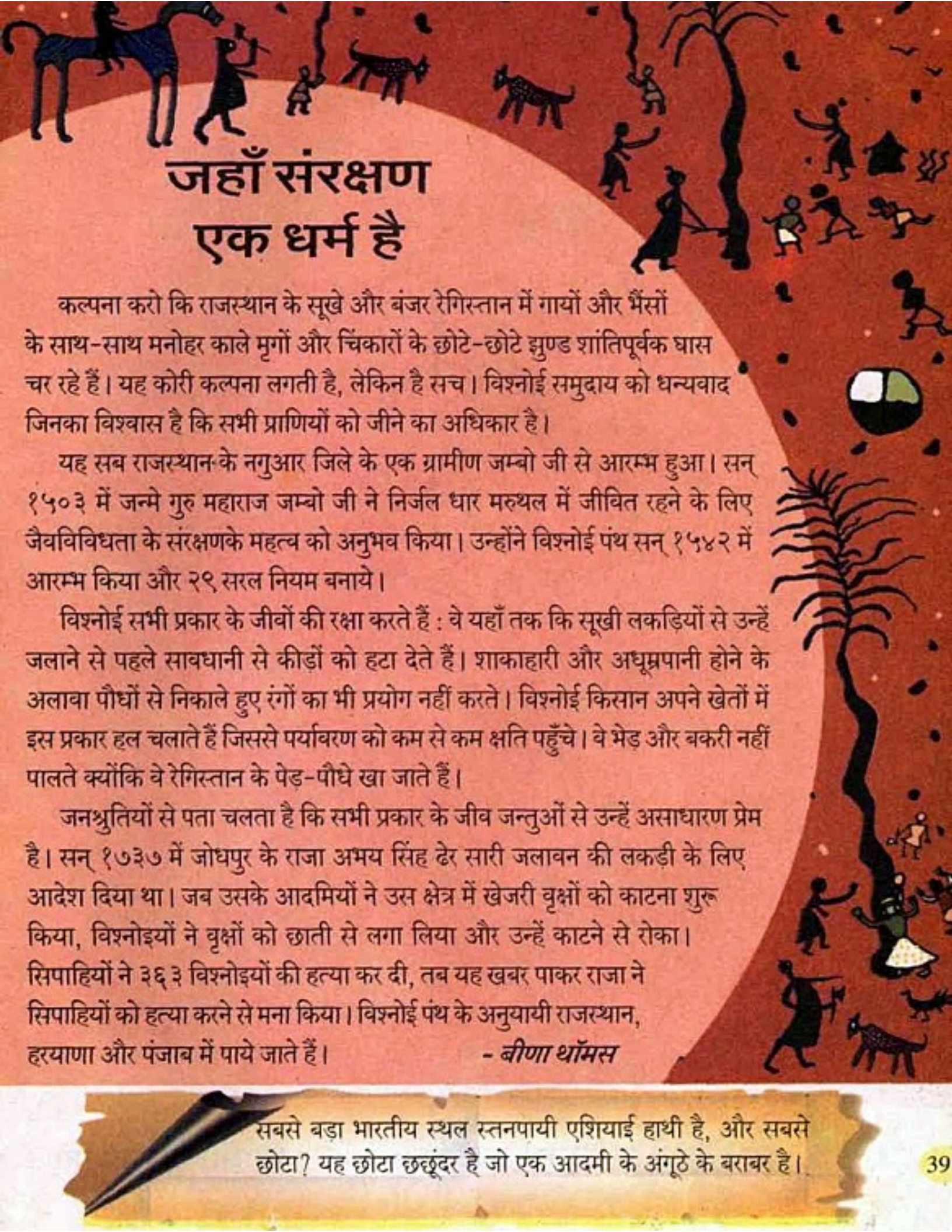
इसलिए अगली बार जब अनाज, सब्जी या फल की खरीदारी करो, तब अंजम्मा की तरह लाखों किसानों को धन्यवाद दो जिन्होंने इस समृद्ध विविधता को जीवित रखा है!

- सुजाता पद्मनाभन

एशियाई सिंह (पन्थेरा लियो परसिका)
भारत के .... राज्य में
.... में पाया जाता है।

गुजरात राज्य के
गिर राष्ट्रीय पार्क और
अभयारण्य

जहाँ संरक्षण एक धर्म है

कल्पना करो कि राजस्थान के सूखे और बंजर रेगिस्तान में गायों और भैंसों के साथ-साथ मनोहर काले मृगों और चिंकारों के छोटे-छोटे झुण्ड शांतिपूर्वक घास चर रहे हैं। यह कोरी कल्पना लगती है, लेकिन है सच। विश्नोई समुदाय को धन्यवाद जिनका विश्वास है कि सभी प्राणियों को जीने का अधिकार है।

यह सब राजस्थान के नगुआर जिले के एक ग्रामीण जम्बो जी से आरम्भ हुआ। सन् १५०३ में जन्मे गुरु महाराज जम्बो जी ने निर्जल थार मरुथल में जीवित रहने के लिए जैवविविधता के संरक्षणके महत्व को अनुभव किया। उन्होंने विश्नोई पंथ सन् १५४२ में आरम्भ किया और २९ सरल नियम बनाये।

विश्नोई सभी प्रकार के जीवों की रक्षा करते हैं : वे यहाँ तक कि सूखी लकड़ियों से उन्हें जलाने से पहले सावधानी से कीड़ों को हटा देते हैं। शाकाहारी और अधूम्रपानी होने के अलावा पौधों से निकाले हुए रंगों का भी प्रयोग नहीं करते। विश्नोई किसान अपने खेतों में इस प्रकार हल चलाते हैं जिससे पर्यावरण को कम से कम क्षति पहुँचे। वे भेड़ और बकरी नहीं पालते क्योंकि वे रेगिस्तान के पेड़-पौधे खा जाते हैं।

जनश्रुतियों से पता चलता है कि सभी प्रकार के जीव जन्तुओं से उन्हें असाधारण प्रेम है। सन् १७३७ में जोधपुर के राजा अभय सिंह ढेर सारी जलावन की लकड़ी के लिए आदेश दिया था। जब उसके आदमियों ने उस क्षेत्र में खेजरी वृक्षों को काटना शुरू किया, विश्नोइयों ने वृक्षों को छाती से लगा लिया और उन्हें काटने से रोका। सिपाहियों ने ३६३ विश्नोइयों की हत्या कर दी, तब यह खबर पाकर राजा ने सिपाहियों को हत्या करने से मना किया। विश्नोई पंथ के अनुयायी राजस्थान, हरयाणा और पंजाब में पाये जाते हैं।

- बीणा थॉमस

सबसे बड़ा भारतीय स्थल स्तनपायी एशियाई हाथी है, और सबसे छोटा? यह छोटा छछूंदर है जो एक आदमी के अंगूठे के बराबर है।

जीवन-तंत्र

इस चित्र में प्रत्येक छवि को ध्यानपूर्वक देखो और तुम पाओगे
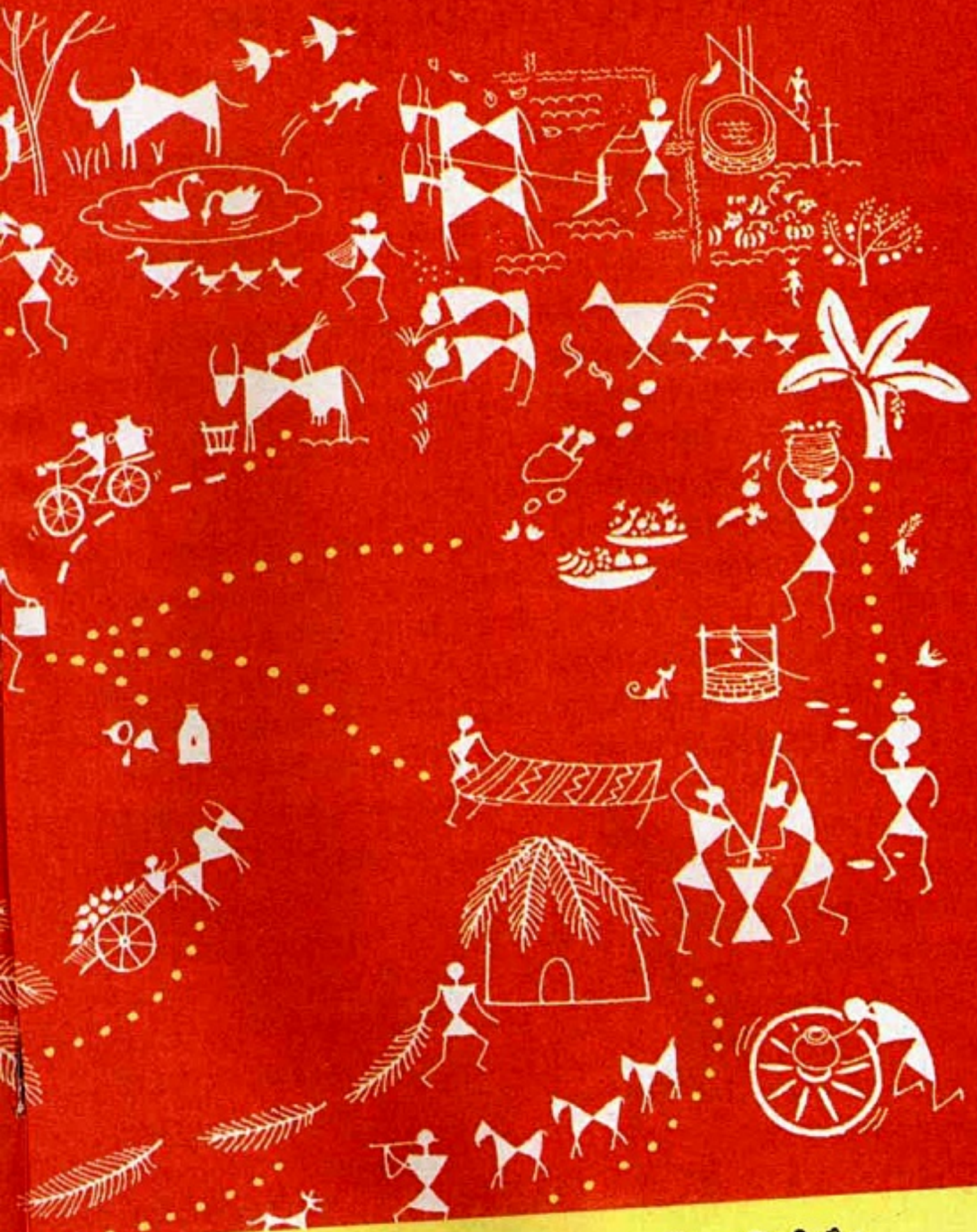
यह चित्र महाराष्ट्र की वार्ली जन जाति में प्रचलित कला शैली से प्रेरित है।

कि किस प्रकार प्रकृति में प्रत्येक वस्तु एक दूसरे पर निर्भर है।

जरधार गाँव का पुनर्जन्म

आज विजय जी ने, जो जरधार गाँव के काफी सम्मानीय वयोवृद्ध ग्रामीण हैं, अपने दैनिक पैदल सैर के लिए पर्वत शिखर तक जाने का निश्चय किया।

जरधार गाँव उत्तरांचल राज्य में पहाड़ी ढालों पर बसा हुआ है। विजय जी गाँव से ऊपर ओक और रोडोडेनड्रन के घने जंगलों में जाना चाहते थे। ऊपर चढ़ते हुए उन्हें उन दिनों की याद आई जब उनका गाँव इस जंगल को पुनर्जीवित करने के लिए संघर्ष कर रहा था। जब उन्हें सन् १९८० के उस दिन की याद आई जब यह सब आरम्भ हुआ तो वे मुस्कुरा पड़े।

उस दिन से पहले, वर्षों तक लोग इस जंगल के पेड़ों को काट रहे थे और बाहरी लोगों के हाथ बेच रहे थे। वन विभाग ने इस ओर से अपनी आँखें बंद कर ली थीं। गाँव वालों का भी यही हाल था, क्योंकि वे अब उसे अपना जंगल नहीं मानते थे... यह काफी पहले सरकारी सम्पदा बन चुकी थी।

तभी रघुवीर ने जाकर जंगल में बचे हुए एक मात्र पाइन वृक्ष को काट लिया। इस वृक्ष पर सब की नजर थी, किन्तु रघुवीर ने उसे रात में काट कर सबको बेवकूफ बना दिया। नाराज ग्रामीणों ने वन रक्षक को शिकायत कर दी जिसने रघुवीर पर भारी जुर्माना कर दिया। इसके जवाब में रघुवीर ने कहा कि वह अनेक ग्रामीणों को पहचान सकता है जिन्होंने उसके पहले वृक्षों को काटा है।

विजयी जी ने देखा कि इससे ग्रामीणों में आपस में ही झगड़ा हो जायेगा। उसने रघुवीर के विरुद्ध शिकायत वापस लेने के लिए गाँववालों को मनाया।

इस घटना से लोगों की आँखें खुल गईं। ग्रामीणों ने अचानक जरधार गाँव की दुर्दशा को अनुभव किया। इसका बहुत सारा जंगल का भाग कट चुका था। झरने सूखने लगे थे और मवेशियों के लिए घास नहीं के बराबर बची थी। औरतों को जलावन की लकड़ी के लिए बहुत दूर तक पैर घसीटना पड़ता था। उन्होंने महसूस किया कि वे सूखा और भुखमरी के कगार पर हैं।

मुखिया ने ग्रामीणों की एक सभा बुलाई। सभी ग्रामीण एकमत से इस बात पर सहमत हो गये कि जब तक वे जंगल को फिर से उगा नहीं लेते, उनका भविष्य खतरे से खाली नहीं रहेगा। उन सबने मिलकर एक जंगल सुरक्षा

समिति का गठन किया। वृक्षों को काटने से सख्ती से मना कर दिया गया। और अन्य वनोत्पादों के प्रयोग को नियमित कर दिया गया। परमेश्वर और रत्नोदेवी को ढालों की रक्षा के लिए चुना गया।

क्या तुम जानते हो कि भारत में जनतातियों तथा ग्रामीणों में प्रचलित लोक औषधों की एक समृद्ध परंपरा है। ये लगभग पचास हजार प्रकार की औषधियों के निर्माण के लिए चार हजार पाँच सौ पौधों की प्रजातियों का उपयोग करते हैं।

फर्क पता लगाओ

दस वर्ष पूर्व गाँव का तालाब इस प्रकार दिखता था... और वही दृश्य आज -

दोनों चित्रों में क्या अन्तर है, क्या पहचान सकते हो?

नियम भंग करने वाले ग्रामीणों पर भारी जुर्माना होने लगा। परमेश्वर लाठी लेकर अपनी ड्यूटी करता था। लेकिन ग्रामीणों को डर रत्नो देवी से ही रहता था। तीन महीनों के लिए निषिद्ध क्षेत्रों में घुसने वाले ग्रामीणों पर वह पत्थरों और गालियों की बौछार कर देती थी।

कुछ वर्षों के बाद जब ढालों पर पुनः हरियाली छा गई, गर्मियों में सूख जानेवाले झरने पुनः पूरे साल झर-झर करने लगे। अब अधिक घास उग आई थी और वृक्ष धीमी गति से परन्तु निरन्तर बढ़ रहे थे।

बीस वर्षों की छोटी अवधि में, जो कभी उजाड़ पर्वत था, घने जंगल में बदल गया।

विजय जी ने पर्वत शिखर पर खड़ा होकर चारों ओर देखा। उन्होंने नीचे घाटी की गहराई से एक बाघ के गरजने की आवाज सुनी। जंगल का राजा भी फिर से प्रकट हो गया, सम्भवतः इसलिए कि उसे फिर से अपना आवास मिल गया था। और ग्रामीणों को मालूम हो गया कि जब तक धारीदार महाराज उनके साथ है, पेड़ काटनेवाले घुसपैठियों से वे सुरक्षित रहेंगे। विजय जी के चेहरे की मुस्कान और भी चौड़ी हो गई।

- रोशनी कुट्टी

भीषण और अद्भुत

यहाँ पशु जगत के कुछ अद्भुत प्राणियों के चित्र दिये गये हैं जो इस देश के उतने ही वासी हैं जितने तुम। भारत में पशुओं के अभिलिखित ८१,००० प्रजातियों में से ये केवल ५ हैं।

हूलॉक गिबन (हाइलोबेट्स हूलॉक)

यह गिबन (ऊलक) उत्तर-पूर्व भारत के बरसाती जंगलों में पाया जाता है। यह संकटापन्न पशु भारत का एक मात्र वास्तविक बंदर है। (यह गिबन बिना पूँछ का नर बानर होता है और अन्य बंदरों से भिन्न होता है।) वयस्क नर और किशोर मादा गिबन काले शरीर की होती है, जबकि वयस्क मादा पीले रंग की होती है। गिबन के हाथ पैरों की अपेक्षा लम्बे होते हैं। इसके जीवन का अधिकांश भाग वृक्षों पर बीत जाता है और यह एक शाखा से दूसरी शाखा तक झूलता हुआ जाता है। यह प्रायः परिवार में रहता है और फल, पत्ते, कीड़े, सूंड़ी और मकड़े खाता है। यह भोर में पत्तों पर एकत्र हुई ओस की बूंदें पी जाता है।

Abi Tamim

Vivek Gour- Broome

रत्न-भृंग (जुअल बीट्ल)

बड़े आकार का रत्न-भृंग चटकीला रंगीन और चमकदार शरीर का होता है। वयस्क भृंग मुख्यतः मौनसून में देखा जाता है। यह अल्पकालिक होता है और सामान्य तौर पर मौनसून के अंत में जोड़ खाने और शिरीष वृक्ष की जड़ों के निकट अण्डा देने के बाद मर जाता है। अण्डे से निकलने के बाद लारवा जड़ और जड़ की छाल खाता है। यह लगभग नौ महीनों में वयस्क बनता है। प्रौढ़ बनने पर उसी वृक्ष की पत्तियाँ खाता है। जन जाति के लोग इसके चटकीले और चमकीले पंखों से गहने बनाते हैं।

सोहन चिड़िया
(आरदियोटिस नायग्रिसेप्स)

वह क्या है जो बड़ा है, भारतीय है और जिसे देखना दुर्लभ है? यह ग्रेट इंडियन बस्टर्ड यानी सोहन चिड़िया है जो पक्षियों में सबसे अधिक संकटापन्न प्रजाति है। यह भारत के अधिक सूखे खुले क्षेत्रों के अधिकांश भाग में पाया जाता था, लेकिन अब यह उस मौलिक क्षेत्र के दसवें भाग से भी कम स्थान में सिमट गया है। यह पौधों की टहनी, छिपकली, टिड्डा, कनखजूरा तथा अन्य छोटे प्राणियों को खाकर जीवित रहता है। बर्षों तक शिकार किये जाने तथा खेती के अधिकाधिक प्रसार के कारण इसकी संख्या कम हो गई है। अब सोहन चिड़िया पश्चिम और केंद्रीय भारत में पाया जाता है, लेकिन शायद ही कभी जंगल में देखा जाता हो।

Asad Rahmani/Sanctuary Photolibrary

Vivek Gour-Broome

चर्मपृष्ठ कच्छप
(डर्मोचेलिस कोरियाशिया)

यह शानदार प्राणी संसार का सबसे विशाल समुद्री कच्छप है। अन्य कछुओं की तरह इसका आवरण कठिन नहीं होता। इसका पृष्ठ वर्म मोटे चमड़े के समान होता है। यह अच्छा तैराक होता है और अपना जीवन समुद्र में घूमकर बिताता है। यह मुख्यतः छत्रिक (जेली फिश) खाकर जीवित रहता है। मादा कच्छप वर्ष में एक बार अंडमन और निकोबार द्वीप समूहों के समुद्र-तटों तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के भागों में अंडे देने के लिए आती है। चर्मपृष्ठ कच्छपों की संख्या शिकार-मछली के जाल में फँस जाने तथा समुद्री तटों में अशान्ति के कारण भारी मात्रा में कम हो गई है।

प्रवाल

Pankaj Sekhsaria

प्रवाल पोलिप नामक बहुत छोटे पशुओं का समूह है जो समुद्र में रहता है और प्राणि-प्लवक (ज़ूप्लैंकटन) खाकर जीवित रहता है। पोलिप अपने कवच अथवा समुद्र जल से कैल्शियम कार्बोनेट लेकर अपना ढाँचा स्वयं बनाते हैं। प्रवाल भित्ति उनके ढांचों के साथ भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रवालों का उपनिवेश होती है। यह सैंकड़ों सामुद्रिक प्राणियों का घर होता है। जीवित प्रवाल सामान्यतः चटकीले नीले, हरे, भूरे तथा पीले रंग में पाया जाता है। ये सामान्यतः पारदर्शक छिछले उष्णकटिबन्धीय जल में पाये जाते हैं। लाक्षाद्वीप तथा अंडमन और निकोबार द्वीप समूहों में आश्चर्यजनक प्रवाल भित्तियाँ हैं।

- विवेक गौड़-ब्रूम

जैवविविधता और तुम

जो कुछ हम प्रतिदिन स्कूल में और घर में अथवा छुट्टियों के दिन करते हैं, वे सब हमारे निकटस्थ और दूरस्थ पौधों और पशुओं को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर अनेक नगर निवासी अपने घरों के लिए संगमरमर या ग्रेनाइट फर्श की माँग करते हैं। माना कि ये फर्श सुंदर लगते हैं। लेकिन याद रखो, संगमरमर और ग्रेनाइट जंगलों और उनमें रहने वाले पशुओं को मार कर ही खानों से निकाले जाते हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों में दो विकल्पों में से एक को चुनो। अंकन निर्देशों की सहायता से अपने उत्तरों पर अंक दो और देखो कि तुम जैवविविधता के साथ कितने मैत्रीपूर्ण हो। अनुगामी सूचना से पर्यावरण पर हमारी सामान्य गतिविधियों के प्रभाव के बारे में पता चलेगा।

1. जब तुम अपने घर से लम्बे समय के लिए बाहर जाने की योजना बनाते हो तो क्या
   - a) जब तुम्हें प्यास लगती है, टेट्रापैक में पानी की बोतलें या सौफ्ट ड्रिंक्स खरीदते हो?
   - b) पानी की बोतल साथ ले जाते हो अथवा ग्लास में कच्चे नारियल का पानी, नीम्बू का रस या छाछ पीते हो?
2. क्या तुम्हें खेलना अच्छा लगता है
   - a) बहिर्द्वार खेल जिसमें तुम्हें केवल अपनी यांत्रिक शक्ति की जरूरत होती है?
   - b) हाथ में पकड़कर खेले जानेवाले खेल जो बैटरी से चलते हैं।
3. क्या तुम पहनते हो
   - a) ऐसी पोशाक जो पोलिस्टर, टेरिकॉटन या नाइलन से बने होते हैं?
   - b) सूती वस्त्र?
4. तुम बराबर विद्यालय कैसे जाते हो
   - a) कार या अपनी अन्य सवारी से?
   - b) पैदल, साइकिल या बस लेकर?
5. जब तुम अपने मित्र को पत्र लिखते हो
   - a) तब क्या कागज के एक तरफ लिखते हो?
   - b) या दोनों तरफ लिखते हो?

अंकन : यहाँ प्रश्नों के जैवविविधता-मैत्रीपूर्ण उत्तर हैं। प्रत्येक जैवविविधता-मैत्रीपूर्ण विकल्प के लिए अपने को १० अंक दो, अन्यथा अपने कुल प्राप्त अंक में से १० अंक घटा दो। यदि तुमने ५० अंक अर्जित कर लिये हैं तो तुम पौधों और पशुओं के सच्चे मित्र हो। यदि तुम्हारे अंक ४० से नीचे है तो तुम्हें अपनी जीवन-शैली और अपने मित्र बदलने पड़ेंगे। तभी तुम जैवविविधता-मित्र कहे जा सकते हो।

1. **b.** मार्के का पानी सामान्यतः प्लास्टिक की बोतलों और थैलियों में बिकता है जो जैव-अनावर्तनीय होता है। प्लास्टिक रद्दी को जूठन खाद्य समझकर पशु, पक्षी या मछलियाँ खा जा सकती हैं। उदाहरण के लिए कछुए प्लास्टिक को जेलीफिश समझकर खा जाते हैं और बड़ी दर्दनाक मौत मरते हैं। टेट्रापैक्स की ऊपरी परत मोटे कागज की होती है और अंदर की परत पतले अल्मुनियम की। कागज बनाने के लिए हमें पेड़ों को काटना पड़ता है और अल्मुनियम बनाने में काम आनेवाले बॉक्साइट को खान से निकालने के लिए भी जंगलों को नष्ट करना पड़ता है। अल्मुनियम फोआयल रद्दी हो जाने पर मिट्टी में घुलनशील या विकृत नहीं हो पाता।
2. **a.** बैटरीज़ में लेड होता है जो रद्दी हो जाने पर पशुओं को प्रभावित करता है। मानवों में अत्यधिक लेड मानसिक विकास को प्रभावित करता है तथा स्नायु रोगों और उच्च रक्त चाप का भी कारण बन जाता है। अतः कल्पना करो कि छोटे प्राणियों के लिए यह कितना खतरनाक हो सकता है! भारत में बैटरीज़ को सुव्यवस्थित रूप से समाप्त नहीं किया जाता।
3. **b.** पोलिस्टर तथा अन्य कृत्रिम रेशे पेट्रोलियम उत्पाद हैं। पेट्रोलियम निकालने के लिए पृथ्वी में छेद (ड्रिलिंग) करने से पूर्व हमें जंगलों अथवा जल-जीवन को नष्ट करना पड़ता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि तेल संचय की स्थिति कहाँ निर्धारित की जाती है।
4. **b.** जब तुम जन परिवहन का प्रयोग करते हो तो उसमें एक ही परिवहन में अनेक व्यक्ति यात्रा करते हैं। इस प्रकार तुम तेल बचाते हो और व्यक्तिगत वाहन की अपेक्षा वायु को कम प्रदूषित करते हो।
5. **b.** कागज बनाने के लिए वृक्षों को काटा जाता है। कागज की केवल एक तरफ लिखकर हम ज्यादा कागज प्रयोग में लाते हैं और अप्रत्यक्ष रूप से जंगलों को नष्ट करने में सहायता करते हैं और इसलिए पशुओं के प्राकृतिक आवास को भी नष्ट कर देते हैं।

- शान्ता भूषण.

पहेलियों के उत्तर

छोटे-बड़े प्राणी : ग्रेट हॉर्नबिल (धनेश), मयूर, चिउरा, गैंडा, बाघ, मगरमच्छ, छिपकली, मड-स्किपर, केकड़ा, मछली, मेढ़क, हंस, गिलहरी, गौरैया, बंदर, कछुआ, घोंघा, हिरन, भालू, तितली, अजगर, कौड़िल्ला, ढेलहरा तोता, केंचुआ, वृक्ष, कमल, घास, मनी प्लांट।

चित्ताकर्षक वनस्पति : A-3, B-5, C-2, D-1, E-4

अंतर पहचानो : गायब मधु छत्ता, कम पक्षी, मृत मीन, वृक्ष का ठूंठ, झोंपडी के स्थान पर भवन, नदी में कूड़ा फेंकती हुई स्त्री, झाड़ में कम फूल।

इन्हें मिलाओ : 1-D, 2-A, 3-B, 4-C

रँगाई मनोरंजक हो सकती है !

हे, अब अपने पुराने कपड़ों को रासायनिक रंगों से मत रँगना। पुरोधा बनो! अपनी कृत्रिम वस्त्रों को रँगने का प्रयास न करो। पुराने सफेद या फीके रंग वाले सूती तौलिये से आरंभ करो।

दो या तीन मध्यम आकार की चुकन्दर की जड़ों को टुकड़ों में काटो और कड़ाही में रखकर इतना पानी डालो कि टुकड़े पानी में डूब जायें। फिर स्टोव पर चढ़ा दो। जब पानी लाल हो जाये तब स्टोव से हटा लो। पानी को छान लो। तुम्हारा रंग तैयार है। (चुकन्दर के टुकड़ों को मसालेदार सलाद बनाने के लिए अलग कर दो)। अब कड़ाही को आग पर फिर चढ़ा दो और पानी को खदबदाने दो। कड़ाही में तौलिये को डालकर साफ लकड़ी या चमच से चलाते रहो। जब तौलिये का रंग तुम्हारी पसंद के अनुसार गुलाबी हो जाये तब इसे आग पर से हटा लो। इसे रात भर ऐसे ही रहने दो।

पक्का रंग बनाने के लिए पानी में थोड़ा सिरका मिला दो।

चुकन्दर के अतिरिक्त फूलों का भी प्रयोग कर सकते हो, जैसे लाल रंग के लिए गुलखैरू (हॉली हॉक) तथा जवा (शू फ्लावर) का, हरे रंग के लिए पालक, पीले रंग के लिए महुआ और काले अथवा ब्राउन रंग के लिए आमला या काकबदरी (गूज़ बेरी) फल, (सूखा और उबाला हुआ) का प्रयोग करो।

अपराजिता, मंदार, जकरन्दा और सिन्दुवरम जैसे फूलों तथा मेहंदी के पत्तों को एकत्र कर सुखा लो और किसी समय रँगने के लिए इनका प्रयोग करो। इन्हें छाया में सुखाओ ताके रंग न उड़े। अतः अगली बार जब भी तुम्हें रंग की जरूरत हो, तो तुम्हें सिर्फ रात भर उन्हें पानी में भिगो कर रखना है।

- श्रुतिदेवी

भारत के हिमालय पर्वतीय क्षेत्र में १९७० के दशक में चल रहे उस आन्दोलन का नाम बताओ जिसमें लोग वृक्षों को काटने से रोकने के लिए उनके साथ चिपक जाते थे।

चिपको आन्दोलन

- संकलन : सीमा भट्ट

नेशनल फाउण्डेशन ऑफ इंडिया (एन.एफ.आई.) का दशक समारोह
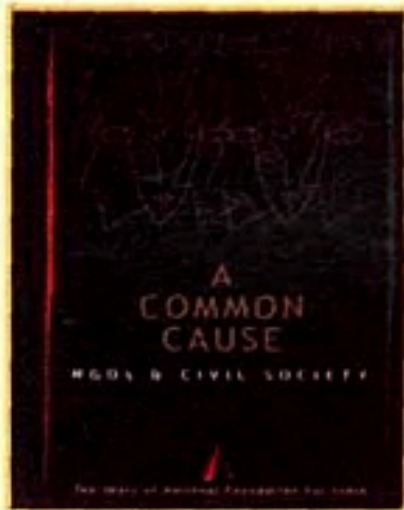
दसवें वर्षोत्सव के अवसर पर फोर्ड फाउण्डेशन की अध्यक्षा सुश्री सुशन बेरिजफोर्ड द्वारा प्रकाशित

"मैं प्रकाशन की प्रस्तुति एवं लेखकों के चयन (मुझे छोड़कर) दोनों के लिए एन.एफ.आई. का अभिनन्दन करता हूँ। मुझे स्मरण नहीं होता कि भारत में शिष्ट समाज पर इतना उत्तम और कुछ देखा हो। हो सकता है एन.एफ.आई. इसे पुनः करने के लिए सोचे...."

- सुंदर बुर्रा
सलाहकार, एस.पी.ए.आर.सी.
मुम्बई

"यह बहुत ही उपयोगी और रोचक संकलन है..."

- आशिष कोठारी
समन्वयक, एन.बी.एस.ए.पी.

"लेख अत्यन्त प्रासंगिक और विचारोत्तेजक हैं..."

- दीप जोशी,
पी.आर.ए.डी.ए.ए.एन.

"... लेखकों का एक उत्कृष्ट संकलन - एन.एफ.आई. के कार्य के एक दशक-समापन को मनाने का एक उपयुक्त ढंग ...."

- नीलिमा खैतान, सेवा मंदिर

अ कॉमन कॉज़ स्वयं सेवी क्षेत्र की भूमिका और इसके भविष्य की चिन्ता पर भिन्न-भिन्न दिशाओं के दृष्टिकोणों को एक ही मंच पर लाता है। तृणमूल कार्यकर्त्ता, आन्दोलन के नेतागण, गैर सरकारी संस्थाओं के संस्थापकगण, निधिकरण इकाइयों के कार्यक्रम प्रबन्धक, राज्य के उत्सुक प्रेक्षक तथा बुद्धिजीवी स्वयंसेवी कार्यों के विविध पक्षों पर अपने विचार और चिन्तन प्रस्तुत करते हैं। इनके निबंध समतावादी तथा लोकतांत्रिक कार्यक्रमों की दिशा में कार्य करने के मार्ग में आनेवाले द्वन्द्वों तथा दबावों को अनावरित करने तथा परस्पर हिस्सा बंटाने की महत्वपूर्ण आवश्यकता को प्रतिबिम्बित करते हैं। आशा की जाती है कि *अ कॉमन कॉज़* सिर्फ चिन्तन का विषय मात्र बनकर नहीं रह जायेगा बल्कि भारत के स्वयं सेवी क्षेत्र की समस्याओं पर कुछ बातचीत का भी सूत्रपात करेगा।

प्रतियों के लिए सम्पर्क करें :

नेशनल फाउण्डेशन ऑफ इंडिया
कोर IV A, यू.जी. फ्लोर, इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोदी रोड, नई दिल्ली - ११० ००३
फोन : ४६४ १८६४/६५, ४६४ ८४९०/९२ फैक्स : ४६४ १८६७
Email: info@nfi.org.in Website: www.nfi.org.in

भारत-रत्न सी. सुब्रह्मण्यम
सामुदायिक नेतृत्व तथा संभरणीय जीविका के लिए फेलोशिप

द नेशनल फाउण्डेशन फॉर इंडिया ने अपने संस्थापक-चेयरमैन के सम्मान में सामुदायिक नेतृत्व तथा संभरणीय जीविका के लिए भारत रत्न सी. सुब्रह्मण्यम फेलोशिप संस्थापित किया है।

ये वार्षिक फेलोशिप दो कोटि के हैं : स्वयंसेवी क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं के लिए फेलोशिप तथा सामुदायिक स्तरीय नेतृत्व के लिए फेलोशिप।

प्रत्येक एक लाख रु. का, चार फेलोशिप प्रति वर्ष दिये जाते हैं; प्रत्येक कोटि में दो।

ये फेलोशिप फोर्ड फाउण्डेशन द्वारा प्रवर्तित हैं।

फेलोशिप के लिए चुने गये स्वयंसेवी क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं को प्रमुख संस्थाओं में रखा जायेगा जहाँ वे भोजन और जीविका सुरक्षा में लगे हुए सक्रियतावादियों तथा संस्थाओं के साथ पारस्परिक क्रिया कर सकते हैं। फेलोशिप उन्हें अपना कौशल और नेतृत्व गुणों को तेज करने का, साथ ही, संभरणीय जीविका के लिए अपनी बुद्धि को और गहन करने का अवसर प्रदान करेगा।

सामुदायिक स्तरीय नेतृत्व के लिए फेलोशिप, समुदाय-स्तरीय कार्यकर्त्ताओं के लिए अपने नेतृत्व विकास कार्यक्रमों को चलाने के हेतु स्वयंसेवी संस्थाओं को समर्थन देगा। यह कौशल, और शिल्प-वैज्ञानिक-शक्ति, तथा संरक्षण, और भूमि, जल व वन जैसे स्थानीय रूप से उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के सर्वोत्तम उपयोग पर केंद्रित होगा।

पात्रता

- मिड करियर स्वयंसेवी क्षेत्र के कार्यकर्त्ता
- महिलाएँ, खास कर वे जो भोजन और जीविका सुरक्षा में दिलचस्पी रखते हों
- संभरणीय जीविका में अनुभव के साथ सामुदायिक नेता

आवेदन पत्र के साथ आवश्यक संलग्नक

- शैक्षणिक योग्यताओं तथा अनुभवों की एक संक्षिप्त सूची (करिकुलम विटे)
- पिछले किये गये कार्यों का विवरण
- सुनिश्चित कार्य क्षेत्र की रूपरेखा देते हुए प्रस्ताव जिसमें आवेदक फेलोशिप ग्रांट के साथ कार्य करना चाहेगा।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नेशनल फाउण्डेशन ऑफ इंडिया

कोर IV A, यू.जी. फ्लोर, इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोदी रोड, नई दिल्ली - ११० ००३

फोन : ४६४ १८६४/६५, ४६४ ८४९०/९२ फैक्स : ४६४ १८६७

Email: info@nfi.org.in Website: www.nfi.org.in

प्रधानमंत्री को पत्र लिखिये !

यदि **वसुधा** ने जैव विविधता के संरक्षण के लिए आप में दिलचस्पी जगा दी है तो कृपया, इस पत्र पर हस्ताक्षर कर, इसे, ऐक्ट फॉर वसुधा, **चन्दामामा इंडिया लि.**, ८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी, इक्काटुथांगल, चेन्नई - ६०० ०९७ को भेज दें। हम आपके सभी पत्रों को कार्रवाई के लिए प्रधानमंत्री को भेज देंगे।

माननीय प्रधानमंत्रीजी,

हम भारत के तरुण नागरिक जो एक सक्रिय और स्वस्थ भविष्य की ओर आशा भरी निगाह से देख रहे हैं, अपने दैनिक जीवन में विषैले पदार्थों के बढ़ते हुए प्रयोग को लेकर बहुत चिन्तित हैं। हमारे माता-पिता और दादा-दादी ने एक सरल और सुरक्षित जीवन बिताया। किंतु आज के बाल-वृन्द विज्ञापनों एवं अन्य साधनों के द्वारा जन-स्वास्थ्य, पशुओं, पौधों तथा धरती के लिए खतरनाक उत्पादनों के प्रयोग के लिए निरंतर उत्साहित किये जाते हैं।

हम आपसे अपील करते हैं कि

१. कृपया विषैले पदार्थों, जैसे - रासायनिक रंग, कीटनाशक, रासायनिक उर्वरक, पी.वी.सी. तथा कैरी बैग्स जैसे प्लास्टिक, खाद्य मिश्रण जैसे रंग, परिरक्षक पदार्थ, कृत्रिम महक तथा अन्य के उत्पादन व प्रयोग बंद करने के लिए हर संभव कदम उठायें।

२. कृपया परिवर्तकों (आल्टरनेटिव्स), जैसे कपड़ा-बैग्स, पौधों के प्राकृतिक रंगों, कम्पोस्ट खादों, वनस्पति-आधृत कीटनाशकों तथा ऐसे ही हमारे और हमारे साथी-प्राणियों के लिए सुरक्षित अन्य उत्पादनों को प्रोत्साहित करें।

इसके उत्तर में, हम दैनिक जीवन में विषैले उत्पादनों के प्रयोग को समाप्त करने तथा उसके बदले में पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित परिवर्तकों का प्रयोग करने की प्रतिज्ञा करते हैं। हम अपने परिवार के सदस्यों तथा मित्रों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित करेंगे।

श्रीमान प्रधानमंत्रीजी, हमें पूरा विश्वास है कि आप हमारे भविष्य तथा पृथ्वी के असंख्य पौधों और प्राणियों के भविष्य की सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम उठायेंगे।

हम इसके विषय में आप से सुनने की आशा रखते हैं।

भवदीय

(पाठक के हस्ताक्षर)

नाम : ______________________ **आयु :** __________

पता : ______________________________________

____

प्रायः ही 'पृथ्वी पर स्वर्ग' के नाम से विभूषित जम्मू और कश्मीर देश के सबसे उत्तरी भाग में बसा हुआ है। यह उत्तरी अक्षांश पर ३२.१७ और ३६.५८ डिग्री के मध्य तथा पूर्वी देशान्तर पर ३७.२६ और ८०.३० डिग्री के बीच स्थित है।

यह पश्चिम में पाकिस्तान और अफगानिस्तान, पूरब में चीन तथा दक्षिण में हिमाचल प्रदेश से घिरा हुआ है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह देश का छठा और जनसंख्या की दृष्टि से सतरहवाँ राज्य है।

देश के इस सबसे उत्तरी राज्य में जलवायु की दृष्टि से तीन मुख्य क्षेत्र हैं - लद्दाख का शीतल मरुस्थलीय क्षेत्र, शीतोष्ण कश्मीर घाटी तथा जम्मू का उपोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र। साथ ही, राज्य के अन्तर्गत ही एक हजार फुट से २८,२५० फुट तक की खड़ी चढ़ाई भी है।

जम्मू और कश्मीर एक मात्र राज्य है जिसकी दो राजधानी है - गर्मी में श्रीनगर, जाड़े में जम्मू। राज्य में बोली जानेवाली भाषाएँ हैं - उर्दू, कश्मीरी, हिन्दी, डोगरी, पहाड़ी और लद्दाखी।

हँसती मछली की पहेली

कश्मीर में एक समय फिरोज शाह नाम का एक राजा और उसकी रानी शकीला रहती थी। एक दिन एक मछुआरिन मछली बेचती हुई रानी के दर के नीचे आई। उसकी टोकरी में एक ऐसी मछली थी जो देखने में अनोखी लगती थी।

''क्या तुम्हारे पास कोई मादा मछली है?'' रानी ने मछुआरिन से पूछा।

"नहीं, महारानी! मेरे पास केवल नर-मछली है।" उसने कहा।

तभी एक विचित्र हँसी सुनाई पड़ी। रानी चौंक गई। यह अनोखी मछली की ही हँसी थी।

रानी परेशान हो गई। उसने इस पहेली के विषय में राजा को बताया। उसके दरबारियों में हुसैन नाम का एक बोद वजीर था। राजा को उसे चुनौती भरा कार्य देना अच्छा लगता था। उसने अब उसे इस पहेली को सुलझाने का आदेश दिया। "यदि तुमने अगले नये ज़ून तक इस पहेली का उत्तर नहीं दिया तो अपने प्राण से हाथ धोना पड़ेगा।"

हुसैन ने उत्तर की खोज में दूर-दूर तक यात्रा करने का निश्चय किया। यात्रा के दौरान उसकी भेंट रहमान नामक एक बुजेर ग्रियूस से हुई जो पेहेलगाम जा रहा था। "इस वृद्ध व्यक्ति से दोस्ती क्यों न कर लें। हो सकता है यह मेरे काम आ जाये।" हुसैन ने सोचा। जैसे दिन गर्म हुआ, हुसैन और रहमान थक गये।

"कितना अच्छा हो यदि यात्रा के दौरान हम एक दूसरे को ढोयें।" हुसैन ने कहा।

"एक दूसरे को ढोयें? उसका क्या तात्पर्य हो सकता है?" रहमान ने आश्चर्य करते हुए सोचा।

शीघ्र ही, वे अनाज की कटाई के लिए तैयार पकी फसल के एक खाह से होकर गुजरे। हुसैन ने रहमान से तुरंत पूछा, "अनाज खा लिये गये या नहीं?"

रहमान उसका तात्पर्य समझ नहीं पाया, इसलिए केवल बुदबुदाकर रह गया, "मुझे नहीं मालूम।"

उस शाम को दोनों यात्री एक गाँव में पहुँचे। जब वे मस्जिद में गये, तो किसी ने उन्हें सलाम नहीं किया और न खाने के लिए पूछा। हुसैन ने विस्मयपूर्वक कहा, "हम कब्रगाह में क्या कर रहे हैं?"

"क्या यहाँ के लोग तुम्हें दिखाई नहीं दे रहे? यह कब्रगाह नहीं है।" रहमान ने टिप्पणी की।

वहाँ से आगे बढ़ने पर उन्हें एक कब्रगाह मिला जहाँ कुछ लोग प्रिय दिवंगत आत्मा की स्मृति में दुम गोश्त और कुलचा बाँट रहे थे। "आह! कितना

शानदार शहर है।" हुसैन ने अपना भाव व्यक्त किया और स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लिया।

रहमान परेशान हो गया। "कैसा पागल है? वह पौन को ज़मीन और ज़मीन को पौन भी कह सकता है।" फिर भी वह चुपचाप रहा।

जब वे शहर के बाहर पहुँचे जहाँ रहमान रहता था, तब उसने हुसैन को अपने गारू पर निमंत्रित करने का निश्चय किया। उसने हुसैन से कहा,

पर्यटक-आकर्षण
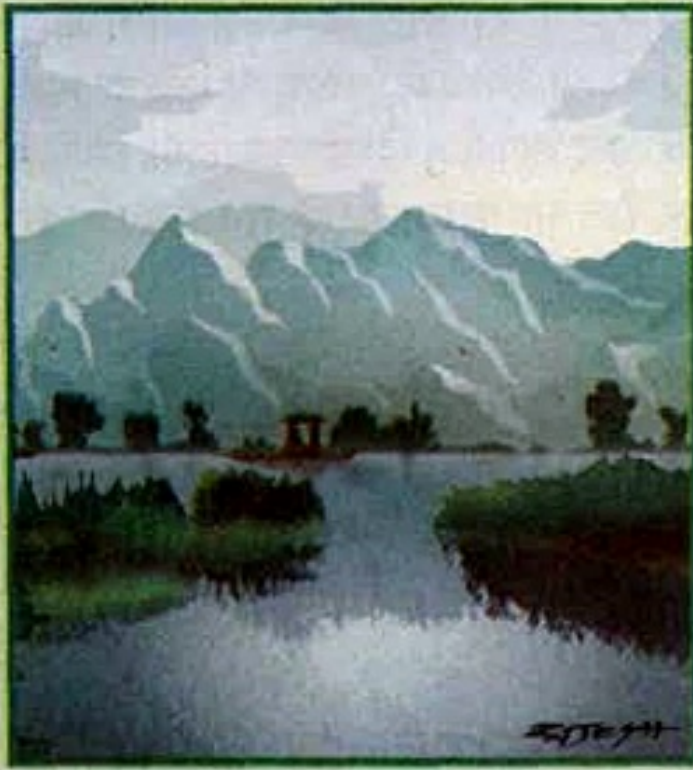
"गर बर-रुए-ज़मीन अस्त;
हमीन अस्त, हमीन अस्त हमीन अस्तो।"

यदि धरती पर कहीं स्वर्ग है तो
वह यही है, वह यही है, वह यही है।

यह शेर मुगल बादशाह शाहजहाँ द्वारा निर्मित दिल्ली के लाल किला के दीवाने आम की भीतरी छत में उत्कीर्ण है। इसे पर्यटक कश्मीर देखने के बाद प्रायः दुहराया करते हैं।

कश्मीर को हमेशा 'धरती पर स्वर्ग' कहकर पुकारा गया है। मनोरम झीलें, हिमाच्छादित पर्वत-शृंखलाएँ, रमणीक घाटियाँ, 'केसर तथा अन्य पुष्पों से भरे खेत... सूची अनन्त है।

दुनिया की प्रसिद्ध जलराशि डल झील को सर वाल्टर लारेंस ने 'सर्वोत्कृष्ट झील' से सम्बोधित किया है। इसे कश्मीर के मुकुट का रत्न भी कहा गया है। डल झील शिकारों एवं हाऊसबोटों के लिए भी प्रसिद्ध है। इस झील का एक और आकर्षण यह है कि दिन भर और प्रत्येक कुछ दूरी पर यह अपनी भंगिमा और परिदृश्य बदलता रहता है। झीलों के तटों पर शानदार बाग लगे हैं।

और अधिक साहसिक व्यक्ति ट्रेकिंग अथवा पर्वतों के ढाल पर, जहाँ राज्य में बहनेवाली अनेक नदियों के स्रोत हैं, स्किइंग के लिए जा सकते हैं। अन्य लोग शिकारों में आराम कर सकते हैं।

"ओ नवजवान! जब तक तुम यहाँ हो, मेरे गारू पर ठहरने के लिए तुम्हारा स्वागत है।"

हुसैन ने उत्तर दिया, "इस कृपा के लिए धन्यवाद! रात होते ही मैं आ जाऊँगा। मे वान, क्या आपके लार की शहतीर मजबूत तो है?"

किसान नवजवान की बेकुलाजी पर अपनी हँसी को दबाने की कोशिश करते हुए अपने घर की ओर चल पडा।

अपने गारू पर उसने अपनी बेटी जोहरा को अपने रहस्यमय सहयात्री और उसके असाधारण प्रश्नों के बारे में बताया।

"मैंने उस विचित्र युवक को यहाँ आमंत्रित

किया है। उसने हमारी शहतीरों के बारे में पूछा। वह मूर्ख लगता है।'' रहमान ने कहा।

जोहरा बहुत बोद कुन्स थी। ''किन्तु, अब्बा जान! युवक बुद्धिमान मालूम पड़ता है।'' उसने कहा।

''ऐसा तुम किस आधार पर कह रही हो, जोहरा? उसके प्रश्न अर्थहीन थे।'' रहमान ने कहा।

''नहीं अब्बा जान! जब उसने शहतीरों के बारे में पूछा, तो वह यह जानना चाहता था कि क्या हम उसकी मेजबानी करने के लायक हैं?'' जोहरा ने समझाया।

रहमान प्रभावित हो गया। ''हो सकता है वह हुसैन की दूसरी टिप्पणियों का भी कोई अर्थ निकाले। कौन जानता है? हुसैन आखिर बुद्धिमान हो सकता है!'' उसने सोचा।

''ठीक है। लेकिन उसके यह कहने का क्या अर्थ है कि हम बारी-बारी से एक दूसरे को ढोयें।'' रहमान ने पूछा।

''इससे उसका तात्पर्य यह था कि समय काटने के लिए आप एक दूसरे को बारी-बारी से कहानी सुनायें।'' जोहरा ने समझाया।

''उसके दूसरे सवाल का क्या अर्थ है जब उसने कहा कि क्या अनाज खा लिये गये।'' रहमान ने पूछा।

जोहरा हँस पड़ी। ''ओह अब्बाजान! आप तो खुद किसान हैं। क्या आप अनुमान नहीं लगा सके? जब किसान समय पर मालगुजारी नहीं दे पाते तब कलक्टर उसके एवज में बतौर जुर्माना अनाज ले लेता है। वैसी हालत में अनाज खा लिये जाने के ही बराबर हुआ।'' उसने कहा।

''ठीक है, लेकिन उसने शहर को कब्रिस्तान

अनुश्रुति

एक लोकप्रिय किवदन्ती के अनुसार सम्पूर्ण कश्मीर घाटी समुद्र के समान एक विशाल झील थी। एक भयानक दानव वहाँ तबाही मचा रहा था।

ब्रह्मा के प्रपौत्र कश्यप के सामूहिक प्रयास से समुद्र में जल-निष्कासन के बाद उसका वध कर दिया गया। पार्वती ने उसके ऊपर एक पर्वत गिरा कर उसके प्राण ले लिये। यही पौराणिक पर्वत हरि पर्वत है जो श्रीनगर का प्रसिद्ध पृष्ठ पट है।

और कब्रिस्तान को शहर क्यों कहा?'' किंकर्त्तव्यविमूढ़ रहमान ने पूछा।

''उसके अनुसार शहर ऐसा स्थान है जहाँ के लोग दयालु और उदार हों। यदि ऐसा न हो तो आबादी कितनी भी हो वह स्थान कब्रिस्तान के समान मुर्दा है। शहर में लोग उदासीन थे, लेकिन कब्रिस्तान में लोग दूसरे प्रकार के थे। इसलिए उन्होंने पहले को कब्रिस्तान और दूसरे को शहर बताया।''

''तुम्हारी व्याख्या से पता चलता है कि वह बोद मर्द है।'' पिता ने अपना विचार प्रकट किया।

जोहरा ने हुसैन से मिलने के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की। वादा के मुताबिक वह रात्रि भोज के लिए रहमान के घर पर आ गया।

''त्सु कुस छुख? तुम्हारी इस लम्बी यात्रा का प्रयोजन क्या है?'' जोहरा ने पूछा।

हुसैन ने उन्हें हँसती हुई मछली और राजा की धमकी के बारे में बताया।
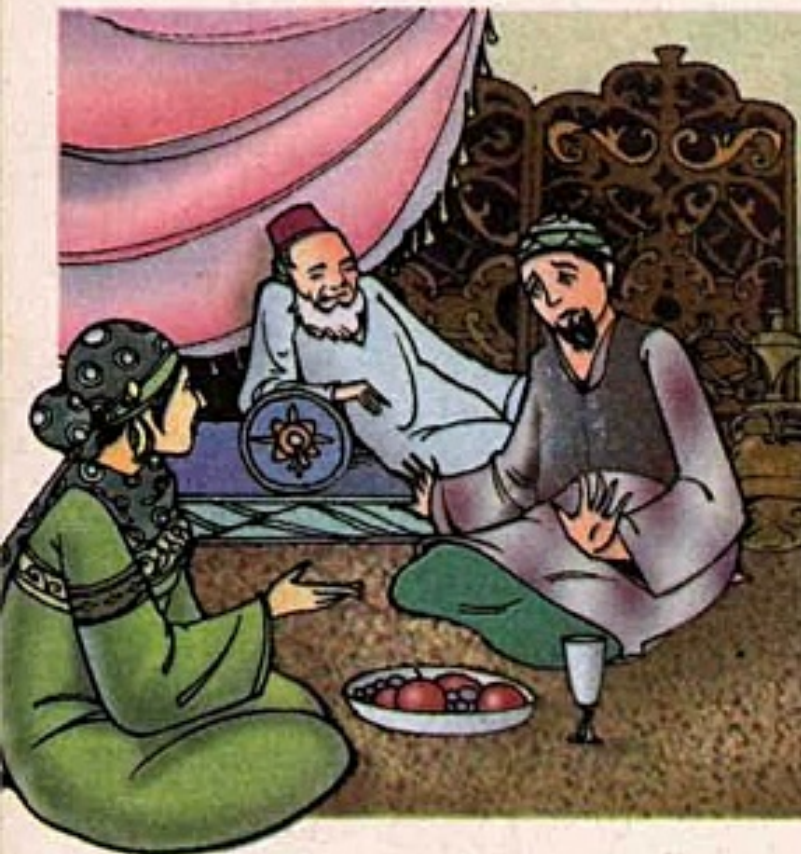
जोहरा ने विस्मय के भाव के साथ कहा, ''लेकिन यह पहेली बहुत सरल है : इसका अर्थ है कि महल में कोई ऐसा व्यक्ति है जो राजा को मारने का षड्यंत्र रच रहा है।''

हस्तकला

कश्मीर अपनी कालीनों के लिए बहुत प्रसिद्ध है। ये हाथ से बनी होती हैं। इनके आधार-उपादान ऊन और रेशम होते हैं। फिर जटिल अभिकल्पनाओं को इन कालीनों में सूक्ष्म रंगों से बुना जाता है।

यहाँ की अन्य लोक प्रिय हस्तकलाएँ हैं कश्मीरी शॉल, पेपियर मैशि, कसीदाकारी, टोकरी बुनना, अखरोट काष्ठ उत्कीर्णन। कश्मीरी शॉल खासकर शहतूश कसीदाकारी, गरमाहट और कोमलता के लिए प्रसिद्ध है। कुछ शॉल इतने मुलायम होते हैं कि ये अंगूठी के अन्दर से निकल जाते हैं। शहतूश भेड़ों के सरंक्षण के लिए, जो विलुप्ति के संकट में हैं, शहतूश शॉलों के उत्पादन पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है।

हुसैन को जोहरा की बातें युक्तियुक्त लगीं। वह जोहरा और रहमान को लेकर वापस राजधानी को लौट पड़ा।

उसने राजा के पास जाकर कहा, ''जहाँपनाह ! हम लोगों ने रहस्यमय संदेश का अर्थ ढूँढ़ लिया है। यह लड़की जोहरा आपके सामने स्पष्ट करेगी।''

''हुजूर !'' जोहरा ने आरम्भ किया। ''हँसनेवाली मछली भविष्य सूचक मछली थी। यह इसलिए हँसी क्योंकि यह जानती थी कि दिखावटी रूप-रंग भ्रामक हो सकता है। यह आपको एक स्त्री से सावधान करना चाहती थी जो वास्तव में छद्म वेश में पुरुष है और आपके जीवन के लिए खतरा है।'' जोहरा ने समझाया।

''लेकिन क्या इसे साबित कर सकते हो?'' रानी ने पूछा।

''हुजूर, यह पता लगाने के लिए उनकी परीक्षा ले लें।'' हुसैन ने कहा।

राजा और रानी ने परिचारिकाओं की परीक्षा लेने की स्वीकृति दे दी। हुसैन ने एक चौड़ा और गहरा गड्ढा खुदवाया और हरेक परिचारिका को उसे फाँदने का आदेश दिया। एक को छोड़कर सभी परिचारिकाएँ असफल हो गईं। जिसने कूदकर पार कर लिया था, वह छद्म वेश में पुरुष था, जो राजा के प्राण लेने की ताक में था।

रानी शकीला और राजा फिरोज शाह बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने राजा के प्राण बचाने के लिए जोहरा और हुसैन को पुरस्कार दिया। शीघ्र ही जोहरा और हुसैन का विवाह हो गया और रहमान अपनी मेधावी बेटी के लिए उपयुक्त वर पाकर फूला न समाया।

सबसे महँगा मसाला

सुस्वाद और सुगन्ध के लिए प्रसिद्ध मसाला-केसर कश्मीर में प्रचुर मात्रा में उपजाया जाता है। इसकी खेती मुख्यतः श्रीनगर के सीमान्त पर पम्पोर में होती है। कश्मीर स्पेन के बाद एक मात्र दूसरा स्थान है जहाँ केसर का उत्पादन होता है। यह वर्ष भर में केवल एक महीने के लिए खिलता है। इसका किरमिजी पुंकेसर एकत्र कर सुखाने के बाद यह दुनिया का सबसे मूल्यवान मसाला माना जाता है।

कश्मीर की जलवायु बादाम और अखरोट वृक्षों के उत्पादन के लिए सबसे अधिक अनुकूल है। ये राज्य भर में प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं।
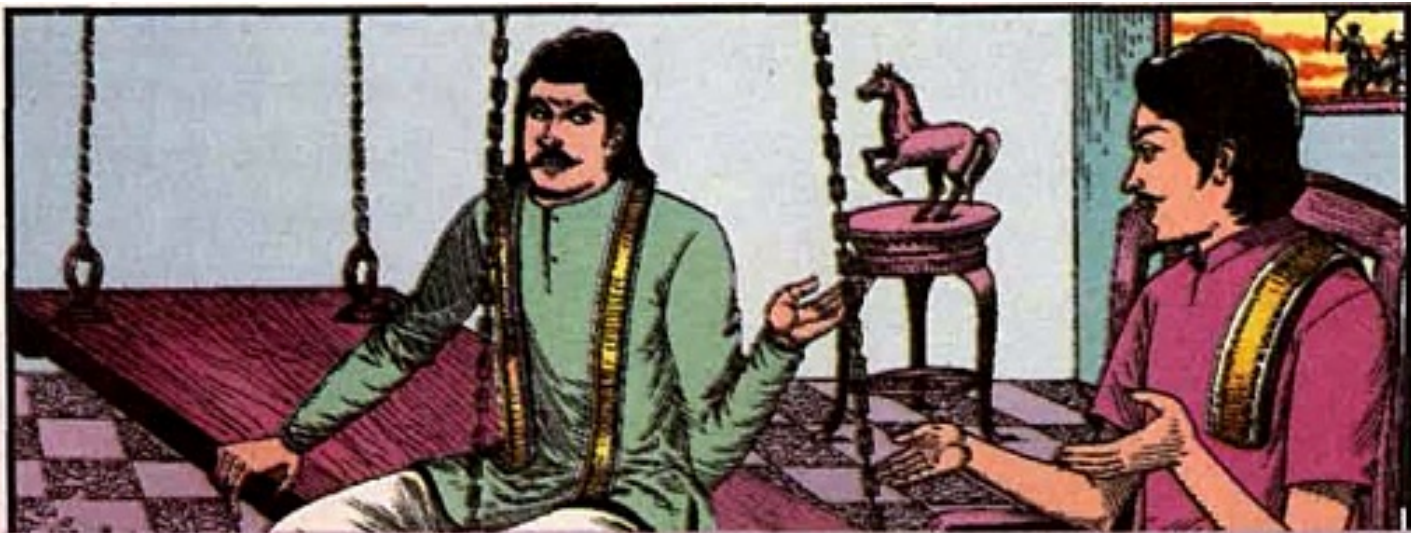
ऋणदाता

सब लोगों का मानना है कि गणपति अक़्लमंद है। अचानक उसे हज़ार रुपयों की ज़रूरत आ पड़ी। उसका विश्वास था कि पड़ोस के गाँव का उसका दोस्त चमन अवश्य उसकी सहायता करेगा। इसी विश्वास के बल पर वह उससे मिलने गया। दुर्भाग्यवश चमन खुद परेशानियों से घिरा हुआ था।

''हमारा गाँव श्रमिकों का गाँव है। तुम्हारा गाँव धनिकों से भरा हुआ है। मुझे इस बात पर आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हें भी यहाँ धन की तंगी है। क्या इस गाँव में तुम्हें कर्ज़ देनेवाला कोई है ही नहीं?''

चमन ने निरुत्साह-भरे स्वर में कहा, ''क्यों नहीं? है। यहाँ का निवासी दिवाकर दानीकर्ण के नाम से पुकारा जाता है। पर वह अव्वल दर्जे का सनकी है। किसी से भी नहीं मिलता। लोगों के बीच में नहीं आता। चाहे तो तभी का तभी दस हज़ार रुपयों का दान देने की शक्ति रखता है। पर कभी-कभी दो सौ रुपये भी कर्ज़ पर देने से इनकार कर देता है। उसे समझना टेढ़ी खीर है।''

गणपति को इसपर आश्चर्य हुआ कि जो आदमी दस हज़ार रुपये दान में देने की **शक्ति** रखता है, वह दो सौ रुपये भी कर्ज़ में नहीं देता। दिवाकर ने किस-किसको कब कर्ज़ दिया, किस-किसको कर्ज़ देने से इनकार किया, आदि विवरण चमन से पूछकर गणपति ने जान लिया।

पूरा विवरण दे चुकने के बाद चमन ने पूछा, ''ये सारे विवरण तुम क्यों जानना चाहते हो?''

''हर आदमी की व्यवहार-शैली के पीछे कोई न कोई सबल कारण होता है। अच्छी तरह से सोचने पर कोई न कोई उपाय निकल आयेगा। मेरा ख्याल है कि दिवाकर सनकी-वनकी नहीं है। उससे एक बार मिल आता हूँ। फिर गणपति दिवाकर से मिलने निकल पड़ा।

उस समय दिवाकर अपने घर के पिछवाड़े के फूलों के बग़ीचे में था। उसे बाग़वानी बहुत

- रमेश राथी -

पसंद थी। विलक्षण फूलों के पौधों को इकट्ठा करता था और अपने बग़ीचे में रोपता था। गणपति सीधे बग़ीचे में गया और उससे मिला। उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की और अपना परिचय दिया।

"अच्छा, तो तुम हमारे चमन के दोस्त हो? वह तो मेरा यार है, मेरा सगा है। तुम्हें भेजा और खुद क्यों नहीं आया?" दिवाकर ने पूछा।

"मैं काले गुलाबों की खोज में हूँ। जब मालूम हुआ कि वे आपके बग़ीचे में हैं, तो दौड़ा-दौड़ा आया। हाँ, उसी काले गुलाब की मुझे ज़रूरत है," कहते हुए वह एक पौधे के पास पहुँचा।

दिवाकर ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा, "इस काले गुलाब की ख़ासियत क्या है?"

गणपति ने उस फूल को एकटक देखते हुए कहा, "इस पुष्प का स्पर्श लगातार दस पुरुष अपनी हथेलियों से करें और फिर पानी में डालकर इसे गरम करें तो बात ही कुछ और है। उस पानी को पी जाने पर पुण्य मिलता है। समझ लीजिए आपने कैलास पर्वत का दर्शन कर लिया।"

दिवाकर ने तुरंत पंचांग मंगवाया और देखा कि यह समय शुभ है या नहीं।

"अब यह पक्का हो गया कि हम दोनों भाग्यवान हैं। आप आसपास के सात पुरुषों को बुलवाइये। इतने में मैं चमन को यहाँ ले आता हूँ। आपको मिलाकर दस हो जायेंगे। हम पुण्यवान होने जा रहे हैं। गणपति ने बड़े ही उत्साह-भरे स्वर में कहा।

दिवाकर सात लोगों को अपने साथ ले आया।

थोड़ी ही देर में काला गुलाब पानी में डाला गया और गरम किया गया। वह पानी उन दसों पुरुषों ने ही नहीं बल्कि घर की औरतों और बच्चों ने भी पिया। सबको इसका बड़ा आनंद हुआ। उस समय गणपति ने चमन के कान में धीमे स्वर में कहा, ''अब दिवाकर से पाँच हज़ार रुपयों का कर्ज़ माँगो। एक हज़ार मुझे देना और बाक़ी चार हज़ार तुम रख लेना। संकोच मत करो, वे ज़रूर कर्ज़ देंगे। अगर उन्होंने नहीं दिया तो समझ लेना, मुझे तुम्हें दस हज़ार रुपये देने हैं।''

संकोच करते हुए चमन ने दिवाकर से अपनी ज़रूरत बतायी। ''इसमें संकोच की क्या बात है? दान थोड़े ही दे रहा हूँ, कर्ज़ ही तो दे रहा हूँ। तुमने तो चेहरा ऐसा बना लिया मानों तुम मुझसे दान ले रहे हो। मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ। अपना सगा मानता हूँ। पाँच हज़ार ही क्यों, दस हज़ार रुपये लो।'' बड़े प्यार से दिवाकर ने कहा।

''दस नहीं, पाँच काफ़ी है,'' कहते हुए चमन ने उससे पाँच हज़ार रुपये लिये।

गणपति के साथ जब वह घर पहुँचा, तब उसे एक हज़ार रुपये दिये और कहा, ''गणपति, तुम्हारे ज़ोर देने पर ही मैंने दिवाकर से कर्ज़ माँगा था। अंदर ही अंदर भय लगा हुआ था कि कहीं वह 'न' न कह दे। तुमने यह कैसे निर्णय कर लिया कि वह अवश्य ऋण देगा?''

''दिवाकर को चाहिए, पहचान। जब लोग हों तो पूछो, कुछ भी दे देगा। वह चाहता है कि उसे दानी कर्ण कहा जाए। अकेले में पूछने पर किसी को कुछ नहीं देता। कुछ लोगों को कर्ज देने से उसने इसी कारण न कर दिया। पर दिवाकर अक़्लमंद है। वह बहुत सजग और जागरूक आदमी है। लोगों की उपस्थिति में वह कर्ज़ पूछनेवाले को न नहीं कह सकता, इसलिए वह अकेले ही रहना अधिक पसंद करता है। मैंने उसके इस स्वाभाव को ताड़ लिया और दस लोगों की उपस्थिति में तुमसे कर्ज माँगने को कहा।'' गणपति ने यों अपना उपाय बताया।

अपने दोस्त की अक़्लमंदी को शाबाशी देते हुए चमन ने कहा, ''वाह ! वाह !! तुम्हारा भी क्या कहना।''
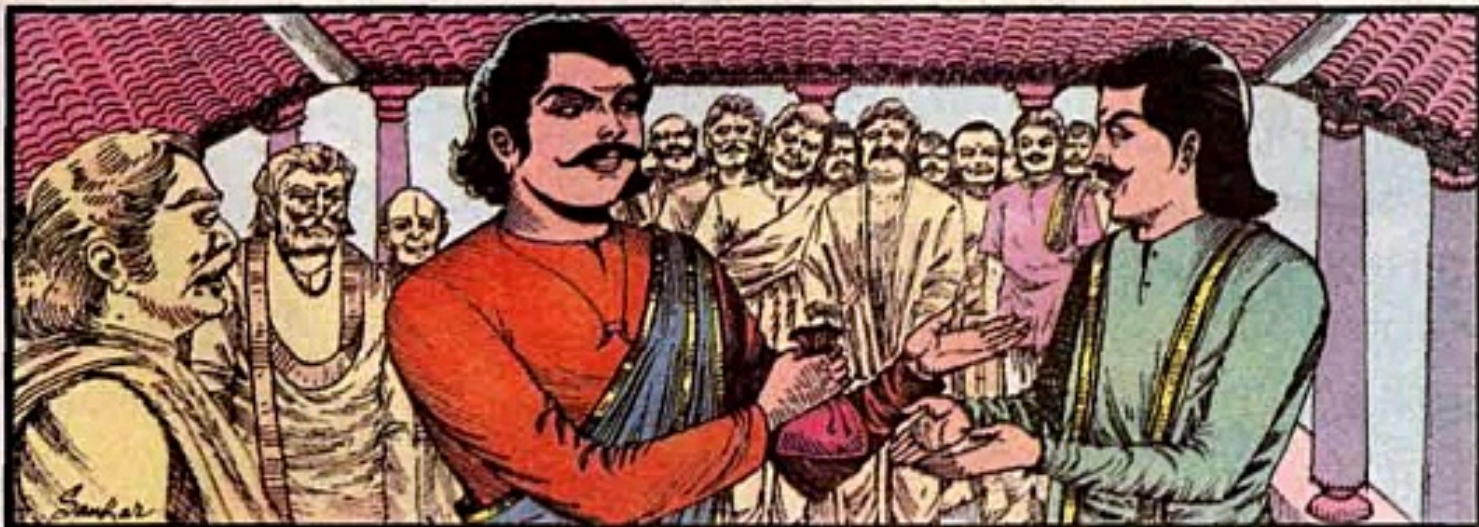
विघ्नेश्वर

''विघ्नेश्वर, अभी आपने गजासुर का संहार किया। इसकी स्मृति के रूप में गणपति नवरात्रि के उत्सव चिरकाल तक वैभव के साथ मनाये जायेंगे। भविष्य में जो भी कल्याणकारी कार्यक्रम चलाये जायेंगे वे सब गणेशजी के उत्सवों के साथ सफलतापूर्वक संपन्न होंगे।'' यों आकाशवाणी सुनाई दी। इस पर विष्णु ने विघ्नेश्वर से कहा, ''हे पार्वती नंदन ! तुम मेरे भानजे हो, इस कारण तुमने मुझ पर एक और उत्तरदायित्व का भार डाल दिया।''

इसके उत्तर में विघ्नेश्वर ने कहा, ''मामा का रिश्ता जोड़कर कालनेमी बने कंस का आप तो संहार करनेवाले हैं न? ऐसी विद्याएँ तो आपने ही सिखाई हैं?'' ''हे विघ्न विनाशक ! तुम्हारे परशु के सामने मेरा चक्रायुध किस खेत की मूली है? तुम्हारी कुल्हाड़ी का कौशल देखने पर मुझे अपार आनंद हुआ।''

विघ्नेश्वर बोले, ''आप परशुराम के अवतार में मेरी कुल्हाड़ी को उधार में लेकर घमण्डी क्षत्रियों के सर काट डालेंगे।''

''विघ्नेश्वर, तुम जब गज विघ्नासुर पर सवार हो उसका मर्दन कर रहे थे, तब तुम्हारे लड़खड़ाते क़दमों वाला वामन रूप देख मुझे बड़ी ख़ुशी हुई।'' विष्णु ने कहा।

''तब तो आप भी वामन रूपधारी बनकर बलिचक्रवर्ती को पाताल तक अपने चरण से धंसायेंगे !'' विघ्नेश्वर ने कहा।

''तुम्हारी बुद्धि का वर्णन किन शब्दों में करूँ?'' विष्णु के मुँह से ये शब्द सुनकर विघ्नेश्वर बोले, ''आपके अवतारों का मूल उद्देश्य धर्म की

स्थापना है; उसका वास्तविक अर्थ है - जब समाज हिंसा तथा अंध विश्वासों के द्वारा सड़ जायेगा, उस समय आप बुद्ध बनकर मानव जाति को सही सामाजिक जीवन तथा निर्बाण का उपदेश देंगे। मायादेवी के स्वप्न में मेरे सफ़ेद हाथी का रूप उनके गर्भ में प्रवेश करके बुद्ध बने आप सिद्धार्थ के अवतार का श्री गणेश करेंगे!'' विघ्नेश्वर ने कहा।

इस पर विष्णु परमानंदित हुए। इसके बाद परमाणु के रूप में स्थित विघ्न बोला, ''हे विघ्नराजा! मैं आपका दास हूँ! आपकी आज्ञा का पालन करनेवाला हूँ। मुझे आज्ञा दीजिए!'' यों कहकर विघ्नेश्वर की अनुमति ले वह कालिंदी तड़ाग में पहुँचा और कालीय के रूप में छिप गया।

विघ्न के पीछे मूषिकासुर चूहे के रूप में पहुँचा। छद्म वेष में छिपकर विघ्न की बुरी हालत देख दांत मींच लिया, तब अपने निज रूप में विघ्नेश्वर के सामने खड़े हो सिंहनाद कर उठा।

विघ्नेश्वर ने मूषिकासुर की बलिष्ठ देह को संतुष्टिपूर्वक देखा। मूषिकासुर लापरवाही से अट्टहास करके बोला, ''विघ्न तो आपका गुलाम है। इसलिए चाहे उसके साथ जैसा भी आपने व्यवहार किया हो, वह मान जाएगा। पर मैं आपका जन्मजात शत्रु हूँ! आपने सिंह स्वप्न की बात सुनी होगी। मैं सिंह बनकर आपके कुंभस्थल को चीर डालूँगा।'' यों कहकर वह सिंह रूप धरकर गरज उठा।

इस पर विघ्नेश्वर बोले, ''हे सिंह, तुम जगज्जननी के वाहन हो। इसलिए मैं तुम्हारा आदर करता हूँ।''

सिंह भागने को हुआ, तब विघ्नेश्वर ने शिवजी का स्मरण किया, ''हे शिव! हे शरभ!'' इस पर सिंह के सामने शिवजी का शरभ अवतार घींकार करते हुए प्रत्यक्ष हुआ। शरभ का शरीर सिंह के रूप में था, उसके अयाल थे, दाढ़े भी थे, पर उसमें हाथी के दांत व सूंड़ भी थी। महा सर्प जैसी पूँछ के छोर पर आग की लपटें उगलने वाला मगरमच्छ का मुँह था। शरभ ने सिंह के मुँह पर अपनी सूँड का ऐसा प्रहार किया कि उसका चेहरा सूझ गया। इस पर सिंह अपनी पूँछ दबाकर भाग गया, तब शरभावतार अदृश्य हुआ।

विघ्नेश्वर ने अपनी सूँड बढ़ाकर सिंह की कमर में लपेट ऊपर उठाया। उस वक़्त आकाश में जानेवाले नारद हिंदोल राग का गान करने लगे।

इस पर सारे देवता एकत्रित हो यह विचित्र

दृश्य देखने लगे। उसी समय विष्णु ने प्रत्यक्ष होकर कहा, "हे विजयी विघ्नेश्वर! तुमने जिस सिंह को पकड़ लिया है, उसे मैं पालना चाहता हूँ। मुझे दोगे?"

विघ्नेश्वर हँसकर बोले, "ओह, उसे पालने का बहाना बनाकर उसके सिर और नाखून निकाल करके नरसिंह का अवतार धरकर हिरण्यकश्यप का पेट फाड़ना चाहते हैं? इस मृगराज की ज़रूरत मुझे भी है। आपको अपने नरसिंह अवतार की बात खुद सोचनी होगी!"

इसके बाद सूँड़ मूषिकासुर सिंह को महाश्वेता के सामने छोड़ अदृश्य हो गई। महाश्वेता का पति नाराज़ हो उठा। इस पर महाश्वेता अपने पति को अनेक प्रकार से समझाया, फिर भी उसने नहीं माना, अपने निज रूप में जाकर विघ्नेश्वर का सामना करने को दौड़ पड़ा। इस पर महाश्वेता ने देवी की प्रार्थना की। देवी ने दर्शन देकर समझाया, "तुम्हारा पति विघ्नेश्वर के चूहे के वाहन के रूप में चिरंजीवी बना रहेगा! तुम भी श्वेत छत्र बनकर अपने पति के साथ चिरकाल तक विघ्नेश्वर की सेवा करती रहोगी।" यों कहकर देवी अंतर्धान हो गई।

वज्रदंत कामरूपी था। इसलिए वह गण्ड भेरुण्ड पक्षी का रूप धरकर रास्ते में चलनेवाले दो हाथियों को अपने नाखूनों से कसकर पकड़ उड़ा ले जा रहा था। उस वक़्त जो हलचल मची, उस पुकार को सुन एक छोटे गीध के रूप में हरि का ध्यान करनेवाले गरुड़ का ध्यान भंग हुआ। इस पर गीध ने गंड भेरुण्ड पर अपनी चोंच का प्रहार किया। चोट खाकर वज्रदंत अपने निज

रूप में पृथ्वी पर गिर पड़ा।

मूषिकासुर विघ्नेश्वर के पास पहुँचकर बोला, "तुम भी बड़े-बड़े दाँत रखते हो! मगर क्या फ़ायदा? वे दाँत सिर्फ़ कपित्थ के फल खाने में काम देते हैं! मैं अपने दाढ़ों से वज्र को भी चूर कर सकता हूँ! कैलास को मटियामेट कर सकता हूँ!"

विनायक चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर बोले, "हाँ, हाँ, जो दाँत किसी काम के नहीं, उनके होने से फ़ायदा ही क्या है?" यों कहकर उन्होंने अपने एक दाँत को चट से आधा तोड़ डाला और उसे फेंक दिया।

वह दाँत हवा में चक्कर काटते अपने इंद्रजाल का प्रदर्शन करते चला गया और वज्रदंत पर बुरी तरह से प्रहार करने लगा। वज्रदंत के बदन से खून की धाराएँ छूटने लगीं। महाश्वेता इसे देख न

पाई और पीड़ा के मारे बेहोश हो गई। वज्रदंत भी उस पीड़ा को सहन न कर पाया, वह एक छोटे से चूहे का रूप धरकर पत्थरों के बीच बिल बनाकर घुस गया। एक दंत को स्वयं तोड़कर विघ्नेश्वर उस समय से एकदंत कहलाये।

इसके बाद दंत भी बिल में घुसकर चूहे पर वार करते उसका पीछा करने लगा। चूहा सुरंग बनाते पाताल लोक में पहुँचा, वहाँ पर भी दंत उसका पीछा करता रहा। तब वह चूहा पृथ्वी पर दौड़ आया। आखिर सारी पृथ्वी की परिक्रमा करके विघ्नेश्वर की शरण में जाकर बोला, ''महानुभाव, मुझे तो मौत न आएगी। आपका दंत मेरे बदन को छलनी बना रहा है ! हे देव, आप मुझे इस पीड़ा से मुक्त कीजिए।'' इस पर विघ्नेश्वर ने उस पर रहम कर मूषिकासुर को अभयदान किया, तब वह दंत लौटकर विघ्नेश्वर के हाथ में शोभा देने लगा।

विघ्नेश्वर ने कहा, ''हे मूषिकासुर, तुम देखने में एक छोटे से चूहे हो, पर तुम महाबली हो ! महा कूर्मावतार के साथ मंदर पर्वत को तथा आदि वराहवतार के साथ पृथ्वी को उठाने वाले श्री महा विष्णु से भी तुम ज़्यादा बलवान हो। उचित वाहन के अभाव में मैं भी अपने लंबोदर को लेकर ठीक से चल नहीं पाता हूँ। इसलिए तुम जैसे...'' यहाँ तक कहकर अपनी बात को समाप्त करने के लिए वे संदेह करने लगे !

लेकिन मूषिकासुर विघ्नेश्वर की प्रशंसा पाकर फूला न समाया और बोला, ''भगवन, आपके दंत ने मेरे भीतर के अज्ञान को दूर कर दिया और मेरे शरीर को नोच-नोच कर मेरे अंदर ज्ञान भर दिया। आपका वाहन बनने में तो मैं अपना भाग्य ही समझूँगा। मैं एक विशाल वाहन के रूप में भी बदल सकता हूँ।'' यों कहकर मूषिकासुर एक हाथी के बराबर का चूहा बन गया।

विघ्नेश्वर उसकी देह पर अपना पैर रखकर बैठने को हुए। पर वह महामूषिक दब गया। विघ्नेश्वर मुस्कुरा कर बोले, ''बेटा, मूषिक ! तुम छोटे चूहे के रूप में रहोगे, तभी मुझे आसानी से ढो सकते हो ! मेरी आकृति के लिए लघु चूहे का वाहन ही सब प्रकार से उचित मालूम होगा !''

मूषिकासुर लघु चूहे के रूप में बदल गया, विघ्नेश्वर को अपनी पीठ पर बिठाया और तेज गति के साथ परिक्रमा करते हुए बोला, ''भगवन, अब मुझे ऐसा लगता है कि मेरी पीठ पर कोई बोझ नहीं है !''

इस बीच धवला होश में आ गई। विघ्नेश्वर को प्रणाम करके बोली, "देव, मेरे पति आपके लिए लघु चूहे का वाहन बनकर रह जायेंगे। मुझ पर भी ऐसा अनुग्रह कीजिए कि मैं आपके वास्ते श्वेत छत्र बनकर चिरकाल तक रह जाऊँ!"

विघ्नेश्वर प्रसन्न होकर बोले, "देवी, तुम्हारे श्वेत छत्र की शीतल छाया मेरे लिए रक्षा का कवच बन जाएगी!" फिर वे चूहे को देख बोले, "हे वज्रदंत, धवला को देवी का अनुग्रह प्राप्त है। इसलिए उसकी इच्छा अमिट है। तुम मेरा वाहन बनकर रह जाओ। मुझे जो कुछ मिलता है, उसे तुम भी मेरे साथ खा लो। तुम्हारी आँखों के सामने देवताओं से लेकर सभी प्राणी अपने सर पर ठोंग मारकर जब तीन बार उठा-बैठी करेंगे, तब उसे देख तुम बहुत ही संतुष्ट हो जाओगे।"

"हाँ, देव! मैं भी आपसे यही कामना करना चाहता था। मैं इसके पूर्व वज्रदंत के रूप में सभी देवताओं के द्वारा ऐसे ही अपने आगे करवाता था! अब मैं आपका वाहन बनकर कृतार्थ हो गया हूँ!" मूषिक ने कहा।

इसके बाद धवला श्वेत छत्र के रूप में विघ्नेश्वर पर अलंकृत हो गई। उस दिन से विघ्नेश्वर मूषिक वाहन धारी बन गये।

विष्णु ने विघ्नेश्वर की प्रशंसा करते हुए कहा, "हे एकदंत! मूषिकोत्तमवाहन धारी! तुम्हारे वाहन को देखने पर मुझे ईर्ष्या हो रही है। वाह, तुमने कैसा बढ़िया वाहन प्राप्त किया!"

इसके जवाब में विघ्नेश्वर बोले, "आपके कल्कि अवतार के समय मेरा वाहन आपका सफ़ेद घोड़ा बन जाएगा और अंतरिक्ष को पारकर ग्रहों के बीच आपको ले जाएगा। इस प्रकार मानवों के लिए नये उपनिवेश स्थापित करेगा।"

"वाह! तुम्हारी वाणी सफल हो!" विष्णु ने परमानंदित हो कहा।

उसी वक़्त नारद वहाँ पर पहुँचकर बोले, ''विजयी विघ्नेश्वर ! अब तक आपके साथ विष्णु के नौ अवतार प्रकट हुए। अब सिर्फ़ एक अवतार शेष रह गया है !''

विष्णु ने नारद को आँख का इशारा करके कहा, ''जल्द ही जब विवाह की घड़ी समीप आएगी, तब तुम्हें इस अवतार का भी पता चल जाएगा ! जल्दबाजी किसलिये?''

''भगवन, किसका विवाह?'' नारद ने पूछा।

''हमारे कल्याण चक्रवर्ती विजयी विघ्नेश्वर का विवाह !'' विष्णु बोले, ।

विघ्नेश्वर ने क्रोध भरी दृष्टि से देखा। अपने मन में गुनगुनाने लगे, ''अब एक हज़ार विघ्न पैदा करने होंगे।''

''बेटा, बस यहीं तक बंद करो। याद रखो, एक हज़ार विघ्नों के समाप्त होते ही आगे आधा विघ्न भी पैदा नहीं करना।'' विष्णु ने सचेत किया।

''एक हज़ार विघ्नों के पैदा होने में कितनी देर लगती है ! एक हज़ार विघ्नों के बाद विघ्नेश्वर का विवाह निश्चित है ! फिर रुकेगा नहीं !'' यों कहकर स रि स रि मा ग रि का आलाप करते हुए नारद तीनों लोकों का परिभ्रमण करने लगे।

उधर शिवजी का पार्वती के प्रति मोहानुराग तेज के रूप में बदल गया। अग्निदेव ने उसे ले जाकर शरवण सरोवर में पहुँचा दिया। इस पर छे मुखों के साथ कुमारस्वामी अवतरित हुए। छे ऋषि-पत्नियों ने उस बालक को पालकर पार्वती और परमेश्वर को सौंप दिया। कुमारस्वामी पलकर बड़े हो गये। गरुड़ ने उनको मयूर वाहन दिया। इन्द्र ने उन्हें कई आयुध दिये। पार्वती ने शक्तिवाला भाला सौंपा। कुमार स्वामी ज्यों-ज्यों बड़े होते गये, त्यों-त्यों तारकासुर डर के मारे दुस्वप्न देखने लगा।

कुमारस्वामी ने भारी तपस्या की। ब्रह्मज्ञान का बोध कराकर सुब्रह्मण्यस्वामी कहलाये। ओंकार के गुप्त रहस्यों का शिवजी को परिचय कराकर उनके गुरु बन गये। इसके बाद दोनों भाई - विघ्नेश्वर तथा कुमारस्वामी कैलास में पार्वती और परमेश्वर के घर पर बड़े ही प्रेमपूर्वक खेल-कूद और मनोरंजक गीत गाते विहार करने लगे।

सावित्री की अक़्लमंदी

भारती और सूरज के विवाह हुए एक साल भी पूरा नहीं हुआ था कि उनके परिवार में झगड़े व मन-मुटाव शुरू हो गये। सबेरे उठने से लेकर रात को सोने तक किसी न किसी विषय को लेकर वे आपस में झगड़ते रहते थे।

एक दिन प्यार से पालने के लिए भारती एक बिल्ली ले आई। सूरज उसे कहीं बाहर छोड़ आया और एक पिल्ला ले आया। एक दिन पिल्ला भूख के मारे चिल्लाने लगा तो भारती ने उसे कुछ नहीं खिलाया, उल्टे उसने उस पर डंडा चला दिया। ठीक उसी वक्त घर आये सूरज ने यह देख लिया और बहुत नाराज़ हुआ। उसने तैश में आकर उसी डंडे से भारती को पीटा।

भारती रोती-बिलखती, चीखती-चिल्लाती बग़ल ही की गली में रहनेवाले भाई धर्मवीर के घर चली गई। धर्मवीर ने जब पूछा कि क्यों रो रही हो और असल में हुआ क्या है तो उसने बढ़ा-चढ़ाकर बहुत कुछ कह दिया और यह भी स्पष्ट कर दिया कि अब सूरज के साथ रहने का सवाल ही नहीं उठता।

धर्मवीर बड़ा ही मृदुल स्वभाव का था। किसी का कष्ट उससे देखा नहीं जाता था। उसकी सहायता करने आगे बढ़ जाता था। वह अपनी बहन को बहुत चाहता भी था।

''चुप हो जाओ। मैं सूरज से बात करूँगा। तब तक तुम यहीं रहना।'' धर्मवीर ने भारती को समझाते हुए कहा।

दूसरे दिन सूरज उसके घर आया। धर्मवीर ने उसे बिठाकर हितबोध किया। उसने समझाया कि परिवार को चलाने में दोनों की समान जिम्मेदारियाँ होती हैं। एक दूसरे की इच्छा का आदर करने की आदत डालनी

- भानुमति अग्रवाल -

चाहिए । सूरज ने उसकी सभी बातें चुपचाप सुन लीं और भारती को घर ले गया ।

यह सिलसिला जारी रहा । तीन-चार दिनों में दोनों एक बार लड़ते-झगड़ते थे और धर्मवीर उन्हें समझाकर चुप कर देता था ।

धर्मवीर के अग़ल-बग़ल के लोग सिर्फ़ भारती को लेकर ही नहीं बल्कि धर्मवीर को लेकर भी तरह-तरह की बातें करने लगे ।

धर्मवीर को इससे बड़ा दुख पहुँचा । वह उदास और खोया-खोया रहने लगा । धर्मवीर की पत्नी सावित्री ने अपने पति से इस उदासी का कारण पूछा । उसने अपनी असहायता व्यक्त की और कहा, ''समझ में नहीं आता, इस मामले का निपटारा कैसे करें?'' धर्मवीर की पत्नी सावित्री खिलखिलाकर हँस पड़ी और बताया, ''इस समस्या का परिष्कार होकर ही रहेगा।''

दूसरे दिन दुपहर को रोती-बिलखती, पति को गालियाँ देती हुई भारती ने फिर धर्मवीर के घर में क़दम रखा। सामने का नजारा देखकर वह अवाक् और मूर्ति की तरह खड़ी रह गयी।

घर में सारी चीज़ें बिख़री पड़ी थीं। अंदर कमरे में धर्मवीर ऊँची आवाज़ में अपनी पत्नी सावित्री से कह रहा था, ''तुम पागल हो गयी हो। तुम पर भूत सवार हो गया, इसीलिए घर की चीज़ों को बरबाद कर रही हो।''

''हाँ ! हाँ !! मैं पागल हो गयी हूँ, मुझपर भूत सवार है। आपसे विवाह करने के बाद ही मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी। मेरे माता-पिता तनिक भी नहीं जानते थे कि आपका परिवार इतना गिरा हुआ है।''

''ज्यादा बको मत। हमारे परिवार पर कीचड़ उछालती हो?'' धर्मवीर ने उत्तेजना-भरे स्वर में कहा।

''सौ फी सदी यह सच है। आप भी पागल हैं और आपका परिवार भी पागल है।'' सावित्री ने चीखते हुए कहा। भारती चौखट पर खड़ी यह सब सुन रही थी। वह अपने को काबू में रख नहीं सकी और तेज़ी से कमरे के अंदर आयी। कहने लगी, ''भैय्या, चुप क्यों हो? भाभी आपका और हमारे परिवार का अपमान किये जा रही है। उसे सबक सिखा दो।''

धर्मवीर ने भारती को देखकर चिढ़ते हुए कहा, ''देखो, यह पति-पत्नी के बीच की बात

है। तुम दखलंदाजी मत करो।''

भारती धर्मवीर की बातें सुनकर निस्तेज रह गयी, उसका चेहरा फीका पड़ गया। भाभी की उपस्थिति में उससे यह अपमान सहा नहीं गया। उसने कहा, ''यह क्या भैय्या। भाभी हमारे परिवार को कोस रही है, गया-गुज़रा कह रही है, फिर भी तुम चुप हो।''

इतने में सावित्री ने उसे टोककर कहा, ''बीच में तुम कौन होती हो दख़ल देने के लिए। तुम्हारा यहाँ कोई काम नहीं। अपने घर जाओ। परिवार में कितनी ही समस्याएँ होती हैं, कितने ही मतभेद होते हैं। फिर ऐसे मिल जाते हैं मानो कुछ भी नहीं हुआ। ये सारी बातें तुम समझोगी नहीं, तुम्हारी इतनी अक़्ल भी नहीं है।''

भारती स्तंभित रह गयी। वह जिस काम से आयी थी, उसे भूल गयी और कहने लगी, ''भैय्या को देखने आयी थी।'' उसका चेहरा ऐसा हो गया मानो काटो तो खून नहीं।

धर्मवीर ने चिढ़ते हुए कहा, ''मुझे क्या देखना है। बगल ही की गली में रहती हो। हफ़्ते में कम से कम दो-तीन बार आती-जाती हो। ठीक है, अब बताओ, किस काम से आना हुआ?''

भाई की बातें सुनकर भारती हक्का-बक्का रह गयी। पति-पत्नी दोनों आपस में झगड़ रहे हैं, पर दोनों उससे नाराज़ हैं, उसे दुत्कार रहे हैं। आपस में झगड़ते हुए अपने भाई और भाभी को कैसे बताये कि पति से झगड़कर आयी हूँ। अपनी असली बात छिपा दी और कहने लगी, ''कुछ नहीं। हम हरिद्वार जा रहे हैं। हमने सोचा कि आप लोग भी हमारे साथ चलें, तो अच्छा होगा। यही
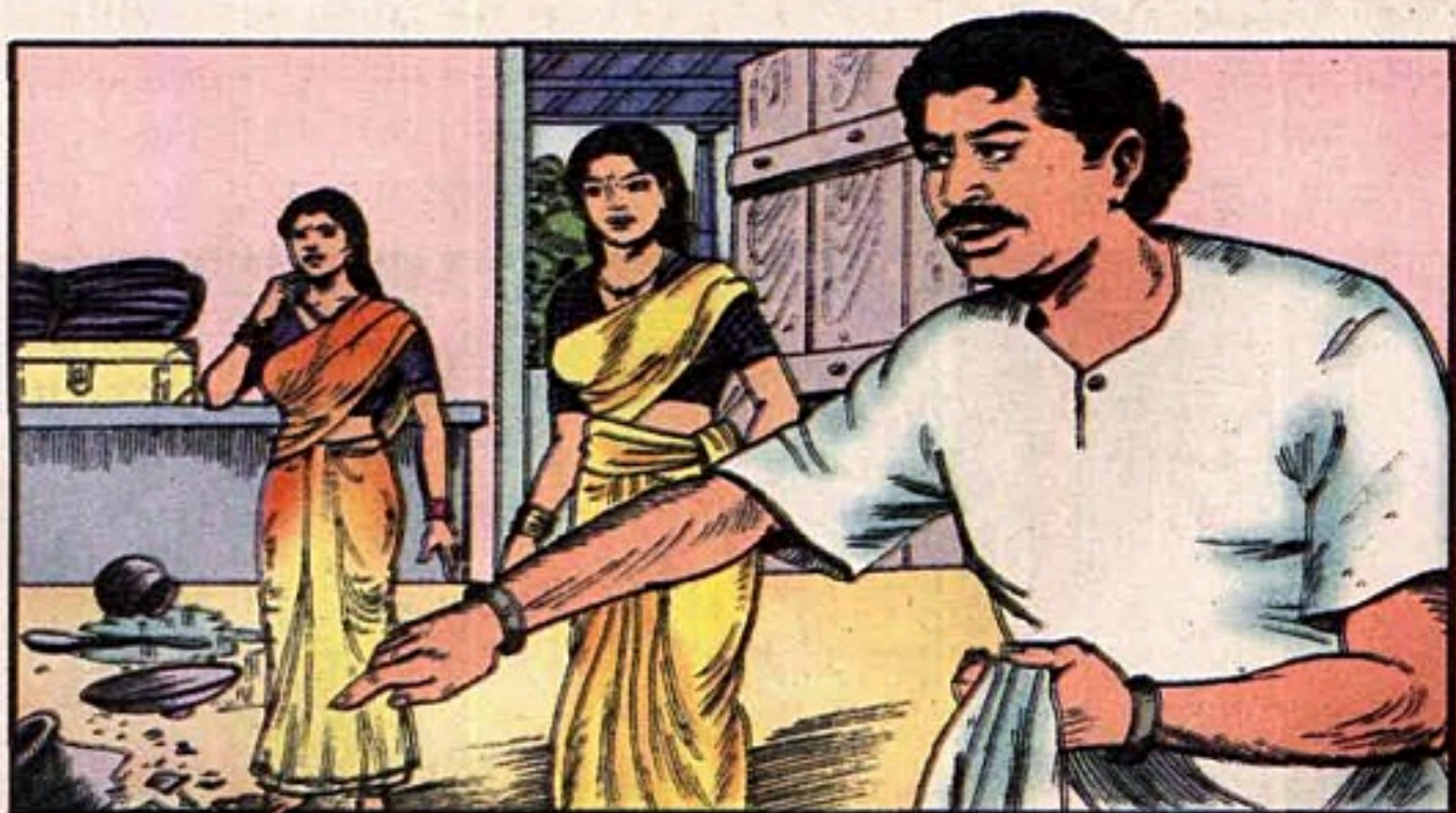
पूछने आयी थी और यहाँ आकर देखा कि आप बच्चों की तरह आपस में झगड़ रहे हैं। ठीक है, इस बार हम दोनों ही हरिद्वार हो आयेंगे।'' यह कहती हुई वह तेज़ी से बाहर चली गयी।

पत्नी को इतनी जल्दी घर लौटी देखकर सूरज चकित रह गया। उसके भाई के घर में क्या गुज़रा, इसका अंदाज़ा वह लगा नहीं सका। कुछ भी हो, पत्नी का इतनी जल्दी घर लौट आना उसे बहुत अच्छा लगा और इस पर उसे खुशी भी हुई। भारती ने अपने पति को खाना परोसा और यों चुप रह गयी मानो वहाँ कुछ भी नहीं हुआ।

उस रात को सूरज को प्रसन्न देखकर भारती ने कहा, ''लगता है, हम शैतान के चंगुल में फंस गये हैं। इसी कारण हम छोटी-छोटी बात पर भी लड़ने-झगड़ने लगे हैं। क्यों नहीं हम एक बार हरिद्वार हो आयें। गंगा स्नान से मन पवित्र हो जायेगा।''

पत्नी में हुए परिवर्तन को देखकर सूरज ने खुश होते हुए कहा, ''हाँ, हाँ, क्यों नहीं। अवश्य जायेंगे। कल ही निकलेंगे।''

भारती को लगा कि ऐसा करके उसने भाई और भाभी को सबक सिखाया। उनके अपमान का बदला लिया। दूसरे ही दिन वह पति को लेकर हरिद्वार जाने के लिए निकली और यह सब कुछ देख रहे थे धर्मवीर और सावित्री।

धर्मवीर ने अपनी पत्नी की अक़्लमंदी की भरपूर तारीफ़ की। उसने सावित्री से कहा, ''सावित्री, तुम्हारे सुझाये उपाय ने कमाल कर दिखाया। उसने हमारा झगड़ा सच मान लिया। तुम्हारी सलाह से उस परिवार में अब से शांति ही शांति होगी।''

सावित्री के हँसते हुए कहा, ''जो भी हो, अच्छा ही हुआ। आगे से आपकी बहन न तो हफ़्ते में दो-तीन बार हमारे घर आयेगी और न ही अपने को और आपको बदनाम करेगी। अब अग़ल-बग़ल के लोग अपने-अपने मुँह सी लेंगे।''

समाचार झलक

एक भारतीय कीर्तिमान

मैनचेस्टर कभी इंग्लैण्ड की औद्योगिक राजधानी था, कपड़ा और रबर मिलों तथा रासायनिक कारखानों के लिए मशहूर। अब हम उस सूची में अचार भी जोड़ सकते हैं।

भारतीय स्वामित्व का एक अचार कारखाना, जिसे पाठक ग्रूप ने शुरू किया है, विश्व का विशालतम कारखाना माना जाता है। यदि कोई एक के बाद एक मिले हुए छः फुटबॉल मैदान की कल्पना कर सकता है तो अचार कारखाने का वही क्षेत्रफल होगा। पचास वर्ष पूर्व पाठक परिवार घर पर समोसे बनाकर बेचा करता था। उनके लिए क्या आरोहण है!

नागों के लिए अभयारण्य

आन्ध्र प्रदेश के विजयानगरम जिले में ३१८ एकड़ क्षेत्रफल के अंशभद्र अभिरक्षित वन में शीघ्र ही नागराजों के लिए एक अभयारण्य बनेगा, जो भारत का और संभवतः विश्व का पहला होगा। यह क्षेत्र धामिन से भरा पड़ा है जो नागराजों का प्रिय शिकार है। नागराज को संकटापन्न प्रजाति घोषित किया जा चुका है। बीस नागों की गिनती हो चुकी है और अभयारण्य उन्हें पर्याप्त सुरक्षा प्रदान करेगा। विश्व का यह सबसे लम्बा विषैला सर्प १२ फुट तक का देखा गया है।

मुझे किस बात की जल्दबाजी है !

युवक आनंद व्यापार करता था। वह कमाता भी खूब था। परन्तु एक दमड़ी भी किसी को दान में देता नहीं था। कंजूस तो था ही, साथ ही वह अपनी नीति कहते हुए थकता नहीं था। एक दिन उसकी दुकान पर एक बूढ़ा भिखारी भीख माँगने आया।

''जा, जा, बड़ा आया दान माँगनेवाला ! यहाँ से जाते हो या नहीं?'' आनंद ने चिढ़ते हुए कहा।

''साहब, आपका व्यापार अच्छा चल रहा है। आपकी दुकान को देखते ही इस बात का पता लग जाता है। ऐसी अच्छी हालत में दान देते रहना चाहिए।'' बूढ़े भिखारी ने शांत स्वर में कहा।

''दान देने के लिए क्या मैं बूढ़ा हो गया हूँ? मुझे किस बात की जल्दबाजी है? अभी बहुत समय पड़ा है।'' आनंद ने नाराज़ होते हुए कहा।

इतने में सामने की दुकान में होहल्ला मचने लगा। उस दुकान का मालिक नरसिंह दिल का दौरा पड़ने के कारण छटपटा रहा था। आनंद तुरंत वहाँ पहुँचा। वैद्य के आने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गयी। किसी ने सोचा तक नहीं कि हृष्ट-पुष्ट नरसिंह की मौत इतनी जल्दी और आकस्मिक हो जायेगी।

''कौन कब मरता है और क्यों मरता है, यह सब माया है। किसी की भी समझ में न आनेवाली बात है।'' भिखारी ने कहा।

उसकी बातें सुनकर आनंद चौंक पड़ा। उसकी समझ में आ गया कि यह सोचना ग़लत है कि जब बूढ़ा हो जाऊँगा, दान करूँगा। दान देने की जो स्थिति में हैं, उन्हें ज़रूरतमंदों की सहायता करनी चाहिए। यथासाध्य उन्हें दान देते रहना चाहिए। यह जीवन क्षणभंगुर है। पता नहीं, कब किसे मौत अपनी लपेट में ले ले। जीवन के इस सत्य को जाना आनंद ने। फिर उसने भिखारी को दान में कुछ चावल दे दिया।

- शंकर पात्रो
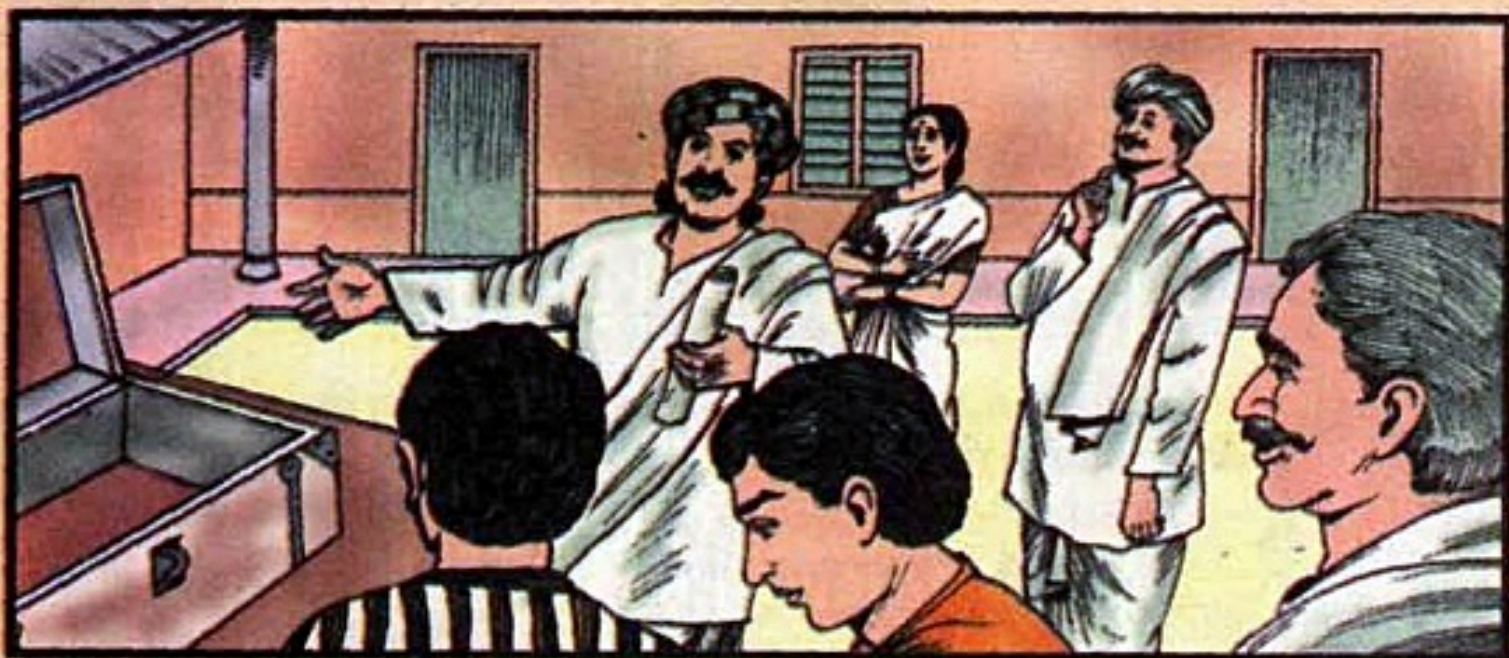
चन्दा प्रपत्र

चन्दामामा

१. मैं निम्नलिखित भाषा में चन्दामामा का ग्राहक बनना चाहता हूँ : *(अपनी पसन्द की भाषा में ✓ चिह्न लगायें)*

☐ अंग्रेजी	☐ हिन्दी	☐ मराठी	☐ गुजराती
☐ बंगाली	☐ उड़िया	☐ असमी	☐ तेलुगु
☐ कन्नड	☐ तमिल	☐ मलयालम	☐ संस्कृत

२. मैं ग्राहक बनना चाहता हूँ : *(अपनी आवश्यकता के अनुसार ✓ चिह्न लगायें)*

☐ भारत में (भारतीय भाषा संस्करण) रु.१२० एक वर्ष (१२ अंक)
☐ भारत में (अंग्रेजी संस्करण) रु.१८० एक वर्ष (१२ अंक)
☐ भारत से बाहर : आई.एन.आर. ९०० यू.एस. $ २० एक वर्ष (१२ अंक) (भारतीय भाषा)
☐ भारत से बाहर : आई.एन.आर. १२०० यू.एस. $ २४ एक वर्ष (१२ अंक) (अंग्रेजी)

३. रु. ____________ का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न है। डिमांड ड्राफ्ट नं. ____________
बैंक ______________________ चंदामामा इंडिया लि. को चेन्नई में देय।

४. नाम तथा पता जिसे प्रतियाँ प्रेषित की जायेंगी (स्पष्ट अक्षरों में)

____

____

____

____

५. अपने चन्दा के साथ आप अपने किसी मित्र/संबंधी का नाम व पता भेजकर उनका **चन्दामामा** परिवार से परिचय करा सकते हैं।

______________ ______________

दिनांक हस्ताक्षर

इस प्रपत्र को निम्नलिखित पते पर भेजें :

चन्दामामा इंडिया लि.
८२, डिफेंस आफिसर्स कॉलोनी, इक्काटुथांगल, चेन्नई - ६०० ०९७.
टेलिफोन/फैक्स : ०४४-२३४ ७३ ९९/२३४ ७३ ८४
e-mail :chandamama@vsnl.com
Website : http://www.chandamama.org

तांत्रिक समझाता है कि कैसे वह अपने गुरु को संतुष्ट करने के लिए पुरुषों और स्त्रियों की बलि देता रहा है।

क्या तुमने कहा कि गरुड़ तुम्हारा शत्रु है?

हाँ, मैं पहले ही ५९ गरुड़ों की बलि दे चुका हूँ। उन सब पर गरुड़ रेखा का चिह्न था। मुझे अंतिम बलि लगभग मिलने ही वाली थी, लेकिन मेरी योजना निष्फल कर दी गई और वह बच निकला।

नरेन्द्रदेव तांत्रिक की बात सुनकर अवाक् रह गया।

शायद यह मेरे गुरु की इच्छा है कि मेरा ६०वाँ शिकार तुम्हारे राज्य का वह युवक होनेवाला है।

मुझे उस युवक के पास ले चलो... हा! उसका नाम आदित्य है। वह मेरे शत्रु द्वारा अधिकृत है।

आदित्य?

अरुणा, जो अब तक बातचीत सुन रही थी, आदित्य की बात में हस्तक्षेप करती है।

रामसिंह को उसके खुफिया लोगों से कुछ समाचार मिला है।

कृपया उसे अंदर बुलाओ।

कमांडर एक तांत्रिक को राजा को अपने प्रभाव में लाने के लिए जादू-टोना का प्रयोग करने के लिए कह रहा है।

और क्या राम सिंह?

और आपको मारने के लिए

रामसिंह, तुम पहले जाओ और सबको यह समाचार दे दो कि मैं शीघ्र ही राजधानी लौट रहा हूँ।

जी महाराज !

राम सिंह, राजा के लिए सही मार्गरक्षक का प्रबंध करो।

महाराज ! मैं राजधानी जाऊँगा और महल में आपकी वापसी की घोषणा करूँगा। अरुणा आपके साथ जायेगी।

मुझे राजा को और मातृभूमि को दुष्ट शक्तियों से बचाना होगा।

- क्रमशः

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

फलों से है स्वस्थ तन, फूलों से स्वस्थ मन।
रखें हम स्वस्थ यदि, वसुधा का पर्यावरण॥

बधाइयाँ

अप्रैल अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

मीनू, C/o. श्री लक्ष्मण आचार्य
१०, काली अम्मान कोइल स्ट्रीट,
मानिकम इलयम, कुरुचिकुप्पम,
पी.ओ. पद्मिनी नगर, पांडिचेरी - ६०५ ०१२.

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

असली बनाए लखपति !

नकली पहनाए हथकड़ी ।

व्यापार के सदस्यों को चेतावनी दी जाती है कि Alpenliebe ब्राण्ड के जैसा दिखने वाले नकली ब्राण्ड बनाना, स्टॉक करना या बेचना कानूनन अपराध है।

जीतिए 51 लाख रुपये के इनाम!

पहला इनाम
1 एक लाख
रु. का नकद इनाम

दूसरा इनाम
10,000

तीसरा इनाम
1,00,000
परफेटी गिफ्ट हैम्पर

नीचे लिखे वाक्य को पूरा कीजिए।

Alpenliebe 'Rich................ Caramel Candy'

Send your entries to **'Alpenliebe, GPO, New Delhi - 110001'.**

Name : .... Address : ....

....

Alpenliebe के 10 रैपर यहाँ संलग्न कीजिए।

TERMS & CONDITIONS: Entries should only be in English sent by ordinary post addressed to **Alpenliebe, GPO, New Delhi - 110001.** Photocopies of this form can also be used. For an entry to be valid consumers must attach 10 Alpenliebe Mono wrappers and write their name and address clearly in English along with the entry. Offer closes 15th July 2002. Perfetti India Pvt. Ltd. shall not be responsible for any postal delays or lost entries. Cash Prize shall be disbursed through Cheque in favour of the Winner. Any tax liability arising out of the prizes shall be borne by the Winner. The Winners of Titan Dash Watch(es) and Perfetti Gift Hampers shall receive their Prize through registered post. The First Prize Winner shall be contacted individually for the prize and will need to establish his/her identity. Prize Winners shall be selected through draw of lots from amongst the correct entries received during the offer, in the presence of two Independent judges, to be held on 31st July. 2002. Offer not open to the employees of Perfetti India Pvt. Ltd., McCann-Erickson India Ltd. and their immediate relatives. Decision of Perfetti India Pvt. Ltd. shall be final and binding. No correspondence shall be entertained in this regard. Disputes, if any, subject to jurisdiction of New Delhi Courts. Offer not valid in the State of Tamil Nadu.

CHANDAMAMA (Hindi) JUNE 2002

Registrar of Newspaper for India No. 1087/57
Registered No. TN/CPMG-866/2002